जीवन और जगत् के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाली गांधीजी की सारगर्भित सूक्तियां

गांधी जी की सूक्तियाँ

कहा या लिखा है वह मंत्र के समान गुणकर और प्रभावकारी सिद्ध होता है। उनके विस्तृत भाषण और लेखन में से अपनी समझ के अनुसार जो भी चयन उनके अखबारों की फाइलों और प्रकाशित पुस्तक-पुस्तिकाओं से करके उन्हें विषयवार ढंग से छांट सका हूं वह आपके सम्मुख है। इन सूक्तियों से पाठकों के हृदय और मन पर अच्छा प्रभाव पड़ा तो संकलनकर्ता अपने परिश्रम को धन्य समझेगा।

—राजबहादुर सिंह

क्रम

अनुशासन

—अनुशासन शारीरिक और मानसिक दो प्रकार के होते हैं और किसी भी व्यक्ति के प्रशिक्षण के लिए ये दोनों ही जरूरी हैं।

—अनुशासन में रखने का प्रशिक्षण बचपन में और घर से ही शुरू होना चाहिए। अनुशासनहीन बालक आसानी से बिगड़ जाते हैं।

—अनुशासन के बिना न तो परिवार चल सकता है, न संस्था या राष्ट्र। वास्तव में अनुशासन ही संगठन की कुंजी और प्रगति की सीढ़ी है।

—अनुशासन केवल फौजों के लिए नहीं, जीवन के हर क्षेत्र के लिए है।

—अनुशासन का पालन तभी सम्भव है जब मनुष्य को उस काम में अनुराग हो जिसमें वह लगा हुआ है। इसके बिना तो अनुशासन अनुकरण-मात्र होगा।

—किसी भी राष्ट्र का परिचय उसके अनुशासनबद्ध नागरिकों से मिल जाता है।

—बाहरी दुनिया की भांति अपने मन और शरीर को भी अनुशासन में रखना चाहिए।

—सारे अनुशासनो की जड व्यक्तिगत अनुशासन है। जब तक कोई भी व्यक्ति अपने आप अनुशासन और नियम-पालन मे बध नही जाता, तब तक उसे दूसरे से वैसा कराने की आशा करना व्यर्थ है।

—यह सारी सृष्टि एक दैवी अनुशासन पर चलती है। जिस प्रकार सूर्य, चन्द्र, आकाश, समुद्र, पर्वत और हमारे चतुर्दिक दृष्टमान नक्षत्रगण एक अनुशासन पर चलकर अपनी-अपनी मर्यादा पर कायम रहते हैं वैसे ही मनुष्य को भी अपने चतुर्दिक के सभी कामो मे अनुशासन का पालन अचूक और नियमित रूप से करना चाहिए।

अन्तर्जातीय व्यवहार

—दूसरी जाति के लोगो के साथ रोटी बेटी का सम्बन्ध करने से किसीकी जाति नही बदलती, क्योंकि वर्णाश्रम पेशे के आधार पर होना है न कि जन्म के।

—सभी जाति के लोग भगवान् की सृष्टि के सेवक हैं—ब्राह्मण अपने ज्ञान द्वारा, क्षत्रिय बाहुबल द्वारा, वैश्य वाणिज्य द्वारा और शूद्र अपने शरीर-श्रम या सेवा द्वारा। फिर इनमे कोई ऊच-नीच नही कहा जा सकता।

—हिन्दू-धर्म का अन्तर्जातीय खान-पान और अन्तर्जातीय विवाह से कोई विरोध नही है। विवाह मे ऊँच-नीच का प्रश्न आडे नही आता, क्योकि ऐसे विवाह—विलोम, प्रतिलोम—प्राचीन काल से होते आए हैं।

—अन्तर्जातीय भोज और अन्तर्जातीय विवाह से वर्णा-

श्रम धर्म को कोई हानि नही पहुचती ।

—यह तो व्यक्ति की पसन्द पर छोड देना चाहिए कि वह किस वर्ण मे विवाह करता है ।

—अन्तर्जातीय और अन्तर्प्रान्तीय व्यवहार चालू हुए बिना देश म एकता और राष्ट्रप्रेम की भावना नही आ सकती ।

—वास्तव मे जाति के नाम से तो केवल मनुष्य की जाति है इसलिए सारे मानवीय व्यवहार जातीय हैं न कि अन्तर्जातीय ।

—जात पात का ढकोसला हिन्दू सस्कृति की आरम्भिक नही बाद की देन है, जिसका खमियाजा हम आज भी उठा रहे हैं ।

अभय

—भय तो कभी और कही करना ही नही चाहिए ।

—अभय-व्रत का सर्वथा पालन लगभग अशक्य है । भय-मात्र से मुक्ति तो जिसे आत्म-साक्षात्कार हुआ हो, वही पा सकता है । अभय मोहरहित अवस्था की पराकाष्ठा है ।

—जब यह शरीर नश्वर है और आत्मा अमर है, तो फिर भय किसका और किसलिए ?

—सदा अभय रहने से मनुष्य का कोई, कभी कुछ बिगाड नही सकता ।

—सच्चा जवामर्द वही है जो ईश्वर के अतिरिक्त किसी-से भी न डरे ।

रूप को बदल लिया, तो उनका भविष्य अन्धकारमय नहीं होगा।

—हर अमीर और धनाढ्य को यह बात गाठ बाध रखनी चाहिए कि वह मनुष्य पहले है और सेठ-साहूकार बाद मे।

असहयोग

—असहयोग का पालन तलवार की धार पर चलने के समान है।

—असहयोग कोई निष्क्रिय स्थिति नही है; यह अत्यन्त सक्रिय स्थिति है—शारीरिक प्रतिरोध या हिंसा से कही अधिक क्रियाशील।

—मैं जिस अर्थ मे असहयोग शब्द का प्रयोग करता हू उसमे उसे निश्चित रूप से अहिंसात्मक होना चाहिए।""

—असहयोग अनुशासन और उत्सर्ग का कार्य है, और उसमें विरोधी विचारो के प्रति धैर्य और आदर रखने की आवश्यकता पडती है।

—मैं स्वीकार करता हू कि सब असहयोगियो की प्रेरणा-शक्ति प्रेम नही, बल्कि एक अर्थहीन घृणा है।

—हमारा असहयोग भौतिक सभ्यता और तत्सम्बन्धी लोभ और दुर्बलो के उत्पीडन से है।

—असहयोग मेरा कल्पद्रुम है।

—असहयोग मेरे जीवन-सिद्धान्त का अग है, तथापि वह सहयोग का मगलाचरण-मात्र है।

—मैं काम करने के तरीको, पद्धतियों और प्रणालियों

से असहयोग करता हू, मनुष्यों से कदापि नही ।

—हमारा असहयोग न अंग्रेजो से है, न पश्चिम से; हमारा असहयोग तो उस प्रणाली से है…भौतिक सभ्यता और तत्सम्बन्धी लोग और दुर्बलो के उत्पीडन से है ।

—असहयोग एक बडा अस्त्र है ।

—असहयोग के हथियार से व्यक्तिगत, घरेलू, सामाजिक और राष्ट्रगत समस्याए अचूक रूप से सफल हो सकती हैं, किन्तु शर्त यह है कि उसका प्रयोग करने मे गलती न हो ।

—असहयोग शासक और शासित के शक्ति-सन्तुलन की कसौटी है ।

—असहयोग मे तो इतनी शक्ति है कि वह छोटी से छोटी इकाई—परिवार—को भग कर देती है, फिर वडी इकाइया, जिनमे असख्य छोटी इकाइया अन्तर्भुक्त होती हैं, उसके सामने कैसे कायम रह सकती हैं ।

अस्पृश्यता

—अस्पृश्यता हमारे राष्ट्र का अभिशाप है ।

—हर हिन्दू को अछूतपन का भूत दूर भगाकर अस्पृश्यों को अपनाना चाहिए ।

—हरिजन-बालको के साथ सवर्ण हिन्दुओ को अपने सगे बच्चो के समान व्यवहार करना चाहिए ।

—अस्पृश्य वह है जो झूठ बोले और पाखड करे ।

—ग्राम-स्वराज मे अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं होगा ।

—अंग्रेज रहे या जाए, पर हमें अस्पृश्यता-रूपी दैत्य को तो दूर भगाना ही है।

—अस्पृश्यता को तो हमें हर सूरत और हर हालत में अपने से दूर भगाना ही होगा।

—जिस अस्पृश्यता के लिए करोड़ों हिन्दू जिम्मेदार हैं, उससे मुझे हार्दिक घृणा है।

—सत्याग्रही को चाहिए कि वह अपने अस्पृश्य कहे जाने वाले भाई के लिए रक्षक बनकर डटा रहे और कष्ट सहन करे।

—मैं कह चुका हू कि हम सबको हरिजन बनना पड़ेगा, नही तो हम अस्पृश्यता का नामोनिशान नही मिटा पाएंगे।

—अस्पृश्यता हिन्दुत्व का कलक है।

—अछूतपन हिन्दू-समाज के लिए एक आत्मप्रवंचना-मात्र है। धर्म और नैतिकता दोनों ही की दृष्टियों से यह हेय है।

—अछूतपन हिन्दुत्व का अग नही बल्कि एक महामारी है, जिसका मुकाबला करना हर हिन्दू का फर्ज़ है।

—मैं पुनर्जन्म की इच्छा नही रखता; पर मुझे फिर से जन्म लेना ही पड़े तो मैं एक अछूत के घर जन्म लेना चाहता हूं, जिससे मैं उनके कष्टों को बांट सकू।

—जो ब्राह्मणत्व अस्पृश्यता को सहन नही कर सकता, उसकी दुर्गन्ध से मेरी नाक भर जाती है।

—जो इस बहाने हरिजन-उद्धार-कार्य को छोड़ देता है कि वह ग्रामोद्योग का काम संभालेगा, वह ग्रामोद्योग के लिए और भी कम काम कर सकेगा।

—गाव मे रहकर हरिजनो से अलग नही रहा जा सकता, क्योकि वे समाज की नीव हैं।

—अस्पृश्यता स्वय एक असत्य है। असत्य का समर्थन कभी सत्य से नही हुआ जैसेकि सत्य का समर्थन असत्य से नही हो सकता। अगर होता, तो वह स्वय असत्य हो जाता है।

—अन्त्यजो के तो हमने पर काट डाले हैं, उनकी सद्भावनाओ को दबा दिया है।

—हिन्दुस्तान के लोग तो कगाली के कारण वैसे ही अस्पृश्य हैं।

—अस्पृश्यता से हिन्दू-धर्म ऐसे ही चौपट हो रहा है जैसे सखिया से दूध।

—चाहे मैं टुकडे टुकडे कर दिया जाऊ पर दलित जातियो से आत्मीयता न छोडूगा।

—अगर आत्मा एक है और ईश्वर एक है तो फिर अछूत और अस्पृश्य कोई हो ही नही सकता।

—यो तो माता भी जब तक बच्चे का मैला उठाकर नहाए या हाथ-पैर न धोए तब तक अछूत है।

—अस्पृश्यता हिन्दू-जाति का कलक है।

—अगर मैं एक दिन के लिए डिक्टेटर बनू तो वाइसराय को अस्तबल की तग और अधेरी झोपडियो को साफ करने मे लगा दू।

—मेरी समझ मे नही आता कि इसान और इसान के बीच अस्पृश्यता की भावना विवेक के सामने क्योकर टिकी

रह सकता ह '

—जहा अस्पृश्यता की भावना आ गई कि मानवता वहा से विदा हो जाती है। कोई व्यक्ति मानवता का दम्भ भी करे और अस्पृश्यता भी कायम रखना चाहे तो वह ढोंगी है।

—अस्पृश्यता हिन्दुत्व मे घुसी हुई सडाद है।

—भगी या अस्पृश्य कहे जाने वाले उसी प्रकार आदर के पात्र हैं, जिस प्रकार बचपन मे मल-मूत्र उठाने और धोने वाली माता।

अहिंसा

—अहिंसा प्रेम की पराकाष्ठा है।

—अहिंसा क्षत्रिय-धर्म की परिसीमा है, क्योंकि उसमे अभय की सोलहो कलाए सोलह आने खिल पडती हैं।

—अहिंसा का नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिए, अभिमान नही करना चाहिए और नम्र होना चाहिए।

—हिंसा का जवाब तो मैं अहिंसा को सिद्ध करके ही दे सकता हू।

—मनुष्य-जाति का सहार नही हुआ, इसका यह अर्थ है कि सब जगह अहिंसा ओत-प्रोत है।

—जहा अहिंसा है वहा अपार धीरज, भीतरी शान्ति, भले-बुरे का ज्ञान, आत्मत्याग और जानकारी भी है।

—अहिंसा की नाकामी, अहिंसा का उपभोग करने वाले की अयोग्यता की वजह से है।

—इस दुःखी जगत् की पीड़ा हटाने के लिए कठिन होने पर भी सिवा अहिंसा के और कोई सीधा रास्ता नही है।

—उस जीवन को नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं जिसके बनाने की शक्ति हममें न हो।

—मैं अहिंसा के मार्ग से सत्य का शोधन करता हूं।

—अहिंसा क्षत्रिय का धर्म है। महावीर क्षत्रिय थे। बुद्ध क्षत्रिय थे। राम, कृष्ण आदि क्षत्रिय थे। ये सब थोड़े या बहुत अहिंसा के उपासक थे।

—यदि कष्ट सहन याने अहिंसा के द्वारा हम अपनी स्त्रियों और पूजा-स्थानों की रक्षा नही कर सकते, तो यदि हम मर्द हैं, कम से कम हमें सशस्त्र प्रतिकार करके उनकी रक्षा करनी चाहिए।

—अहिंसा निर्बल और डरपोक का नहीं, वीर का धर्म है।

—सम्पूर्ण अहिंसा उच्चतम वीरता है।

—कायरता की अपेक्षा बहादुरी के साथ शरीर-बल का प्रयोग करना कहीं श्रेयस्कर है।

—मेरा मतलब यह है कि हमारी अहिंसा उन कायरों की न हो जो लड़ाई से डरते हैं, खून से डरते हैं, हत्यारों की आवाज़ से जिनका दिल कांपता है। हमारी अहिंसा तो पठानों की अहिंसा होनी चाहिए।

—अहिंसा में इतनी ताकत है कि वह विरोधियों को मित्र बना लेती है और उनका प्रेम प्राप्त कर लेती है।

—हिंसा के मुकाबले में लाचारी का भाव आना अहिंसा नहीं, कायरता है। अहिंसा को कायरता के साथ मिला नहीं

देना चाहिए।

—मैंने तो पुकार-पुकारकर कहा है कि अहिंसा-क्षमा वीर का लक्षण है।...

—अहिंसा और कायरता परस्पर-विरोधी शब्द हैं।

—अहिंसा एक हद तक अशक्तों का शस्त्र भी हो सकती है, लेकिन एक हद तक ही। वह बुज़दिलों का शस्त्र तो हरगिज़ नही हो सकती।...

—जहा दया नही, वहा अहिंसा नही। जिसमे जितनी दया है, उतनी ही अहिंसा है।

—मैं यह कहने का साहस करता हूं कि अगर हमारी अहिंसा वैसी न हुई जैसीकि होनी चाहिए, तो राष्ट्र को उससे बडा नुकसान पहुचेगा।...

—जैसे हिंसा की तालीम मे मारना सीखना पडता है, उसी तरह अहिंसा की तालीम मे मरना सीखना पडता है।...

—किसीको कभी नही मारना और न किसी तरह सताना अहिंसा है।

—बिना अहिंसा के सत्य की खोज नामुमकिन है।

—मैंने यह विशेष दावा किया है कि अहिंसा सामाजिक चीज़ है, केवल व्यक्तिगत चीज़ नही।

—शस्त्रीकरण की दौड मे शामिल होना हिन्दुस्तान के लिए आत्मघात करना है। भारत अगर अहिंसा को गवा देता है, तो ससार की अन्तिम आशा पर पानी फिर जाता है।

—सत्य के बाद असल मे अहिंसा ही ससार मे बड़ी से बडी सक्रिय शक्ति है।

—जो अहिंसा पर अन्त तक डटा रहा वह विजयी होकर रहेगा ।

—मैंने भारत के सामने अहिंसा का आत्यन्तिक रूप नही रखा है, और नही तो इसीलिए कि मैं अपने को वह प्राचीन सन्देश देने के योग्य नही पाता ।

—अहिंसा मानो पूर्णत निर्दोषता ही है । पूर्ण अहिंसा का मतलब है प्राणि-मात्र के प्रति दुर्भाव का पूर्ण अभाव ।

—अहिंसा एक पूर्ण स्थिति है । सारी मनुष्य-जाति इसी एक लक्ष्य की ओर स्वभावत , परन्तु अनजान मे, जा रही है ।

—अहिंसा एक महाव्रत है ।

—अहिंसा प्रचड शस्त्र है । उसमे परम पुरुषार्थ है ।

—अहिंसा का परिणाम देर से निकलता है, हिंसा का शीघ्र निकल आता है ।

—मेरी तो अहिंसा मे असीम श्रद्धा है ।

आहार

—आहार शरीर के लिए है, न कि शरीर आहार के लिए ।

—शरीर को कायम रखने के लिए ही भोजन करना आवश्यक है ।

—पशु-पक्षी न स्वाद के लिए भोजन करते हैं, न इतना खा लेते हैं कि पेट फटने लगे । वे अपने भोजन को पकाते नही—प्रकृति जैसा देती है वैसा ही कर लेते हैं ।

—ससार मे भूख से पीडित होकर उतने व्यक्ति नही मरते, जितने अधिक भोजन करने के कुपरिणामो से मरते हैं ।

—भोजन सात्विक और सादा होना चाहिए। शराब, भंग, अफीम, तम्बाकू, चाय, कहवा, कोकीन, मसाले और चटनी आदि भोजन की चीजें नही हैं, न इन्हें स्वाभाविक पेय की ही संज्ञा दी जा सकती है।

—चोरी करना एक बीमारी है और इसका कारण बुरा आहार भी हो सकता है।

—मनुष्य की शारीरिक बनावट देखकर यही प्रतीत होता है कि प्रकृति ने मनुष्य को शाकाहारी बनाया है। मनुष्य और फल भक्षी जीवों के शारीरिक अवयवों में बहुत कम अन्तर है।

—अधिकांश डाक्टरों का कहना है कि ९९ प्रतिशत व्यक्ति जरूरत से ज्यादा खाते हैं।

—हम लोग अधिक भोजन करने के थोड़े-बहुत अपराधी हैं इसलिए धार्मिक दृष्टि से कभी-कभी व्रत रखने के नियम बनाए हैं। सचमुच स्वास्थ्य की दृष्टि से पक्ष में एक दिन व्रत-उपवास करना जरूरी है।

—आहार मानव-जीवन का रक्षक है, इसलिए उसका निर्णय करते समय विवेक रखने की जरूरत है।

—आहार मानव-जीवन की दैनिक आवश्यकताओं में से है; पर उसका नियन्त्रण अनिवार्य है।

—आहार सन्तुलित और विवेकपूर्ण हो तो शरीर में कोई रोग हो ही नही सकता।

—यदि आहार में विवेक नही रहा तो मनुष्य और पशु में अन्तर ही क्या है।

—जब तक आहार में स्वाद की प्रधानता है, तब तक

उनमे सात्विकता आ ही नही सकती ।

—खुराक स्वाद लेने के लिए नही, परन्तु शरीर को दास के तौर पर पालने के लिए बनाई गई है ।

—देश जब तक अपनी आहार-सम्बन्धी आवश्यकताओ मे आत्मभरित नही हो लेता, तब तक और कोई बात करने के योग्य ही नही माना जा सकता ।

ईश्वर

—जहा प्रेम है, वही ईश्वर है ।

—मैने, ईश्वर मे दुनिया का जो विश्वास है उसीको अपना लिया है ।

—मेरी खोज ने यह सिद्ध किया है कि 'ईश्वर सत्य है' के प्रचलित मत्र के बजाय 'सत्य ही ईश्वर है' गहरा मत्र है ।

—मै अनुभव करता हू कि ईश्वर मेरी रग रग मे समाया हुआ है ।

—ईश्वर सभी अच्छी-बुरी बातो का हिसाब रखता है । दुनिया म इससे बडा हिसाबी दूसरा कोई नही है ।

—हम ईश्वर से डरेंगे तो मनुष्य का भय नही रह जाएगा ।

—मेरे लिए ईश्वर ही सत्य और प्रेम है, वही नैतिकता और चरित्र है अपने असीम प्रेम से वह नास्तिक को भी जीवित रखता है ।

—पैसे म परमेश्वर को देखना परमेश्वर को भूलने-जैसा है ।

—ज़बान से ईश्वर, खुदा, सत्श्रीअकाल कुछ भी नाम

लो, वह झूठा है अगर दिल में वह नाम नहीं है।

—ईश्वर चाहे तो मुझे मार सकता है, लेकिन मैं अशान्ति में से शान्ति चाहता हूं।

—अगर ईश्वर हमें लालच में डालता है तो उसमें से बच जाने का रास्ता भी वही बताता है।

—जिस प्रभु ने अपने लाखों शरणागतों की सहायता की है, वह क्या तुम्हें छोड़ देगा।

—जो ईश्वर के न्याय के बारे में शंका करते हैं उनका हृदय कभी प्रफुल्लित नहीं रहता।

—मैं उस परमात्मा के अलावा और किसी ईश्वर को नहीं जानता जो लाखों मूक प्राणियों के हृदय से निकलता है।

—जब आदमी सब-कुछ करने का मिथ्याभिमान करता है तो ईश्वर उसके दम्भ को चूर-चूर कर देता है।

—हमारी गाड़ी चलाने वाला ईश्वर है। उसमें बैठे हम लोग जब तक श्रद्धा रखेंगे, वह ज़रूर चलती रहेगी।

—ईश्वर प्रकाश है, अन्धकार नहीं; वह प्रेम है, घृणा नहीं; वह सत्य है, असत्य नहीं।

—जिसको ईश्वर बचाना चाहता है उसे कौन मिटा सकता है!

—हम लाठी, तलवार, बन्दूक सब छोड़ें और ईश्वर को अपने साथ लेकर चल दें।

—ईश्वर मनुष्य की कमज़ोरी दूर करता है, शैतान बढ़ा देता है।

—जिसका चित्त ईश्वर या पवित्र कार्य में लगा है उसे

अस्पष्ट लगने वाली चीज़े अधिकाधिक स्पष्ट लगने लगती हैं।

—लाखो भूखो के लिए अगर आप भोजन ले जाए तो वे आपको अपना ईश्वर मानेंगे।

—ईश्वर की इस दुनिया मे कही भी सदा रात नही रहती।

—जब मनुष्य अपने को रजकण से भी छोटा मानता है, तब ईश्वर उसकी मदद करता है।

—जो ईश्वर को अपने पास समझता है वह कभी नही हारता।

—आदमी का कर्तव्य परमात्मा की ओर लगी शक्तियो को पूर्ण बनाना और विपरीत प्रवृतियो को दबा देना है।

—ईश्वर इसान की मूर्खता को दानापन या बुद्धिमानी बना सकता है।

—भगवान् ने इसान को अपनी ही तरह बनाया है, पर दुर्भाग्य से इसान ने भगवान् को अपने-जैसा बना डाला।

—जब तक ईश्वर हमारी रक्षा करता है, मारने वाला कितना भी बलवान् हो, मार नही सकता।

—ईश्वर नापाक साधनो से नही पाया जा सकता, और बुरी चीजो को पाने का साधन पवित्र नही हो सकता।

—जो जाग्रत रहते हैं और प्रार्थना करते हैं उनके लिए ईश्वर बडे काम और बडी जिम्मेदारी जुटा देता है।

—मैं (जो) रोज़ बोलता हू, वह भी प्रार्थना ही है। मेरा यह सब भी भगवान् के लिए है।

—हम छोटे इसान समुद्र मे बिन्दु के समान हैं। ईश्वर

—उपकार करके उसके बदले की आशा रखना अपने सत्कर्म पर खाक डालने के समान है।

—उपकार करने की वृत्ति रखने वाला ससार मे दुखी नही हो सकता।

—उपकार करने वाले मे स्वार्थ की भावना नही होनी चाहिए।

—उपकारी की सम्पत्ति भलाई की जड है।

—उपकारी की सम्पत्ति बढती ही रहती है। कहा भी है: पुण्य की जड पाताल तक जाती है।

—जिसमे उपकारवृत्ति नही, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नही है।

उपवास

—उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरो की तलवार की जगह लेता है।

—उपवास का धमकी के रूप मे उपयोग करना बुरा है।

—प्रार्थना के साथ उपवास के लगातार प्रयत्नो के द्वारा आत्मसयम का सुफल प्राप्त होता है।

—स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उपवास किया जाता है; परन्तु अपने या समाज के द्वारा की गई गलतियो के प्रायश्चित्त के रूप मे इसका अधिक महत्त्व है। किन्तु इस प्रकार का अनशन अहिंसा का पुजारी ही कर सकता है।

—उपवास से शारीरिक और आत्मिक दोनो सशोधन हो जाते हैं।

—उपवास यकायक नही शुरू करना चाहिए। उसका ढग और विधि समझकर और उसकी उपयोगिता पर पूर्ण विचार करने के बाद ही उसे शुरू करना चाहिए।

—उपवास शारीरिक और आत्मिक शुद्धि के लिए आवश्यक अवलम्ब है।

—सच्चा उपवास इन्द्रियो का दमन करता है, और उस हद तक आत्मा को मुक्त करता है।

—स्वार्थरहित उद्देश्यो से ही उपवास किया जा सकता है, अन्यथा नही।

—उपवास सत्य-शोधन का साधन तो है ही, वह शरीर-शोधन का उपाय भी है।

—उपवास मन और शरीर की शुद्धि के लिए है। उसका अन्य रूप मे दुरुपयोग नही होना चाहिए। वह सत्याग्रह-शास्त्र का अन्तिम और अमोघ अस्त्र है।

कला

—समस्त कला अन्तर के विकास का आविर्भाव ही है।

—जो कला आत्मा को आत्म-दर्शन करने की शिक्षा नही देती, वह कला ही नही है।

—जो अन्तर को देखता है बाह्य को नही, वही सच्चा कलाकार है।

—सर्वोत्कृष्ट कला व्यक्तिभोग्या नही होगी और कला जब बाह्य साधनो से अधिक से अधिक मुक्त होगी तभी वह सर्वभोग्या बन सकेगा। इस निर्दोष सर्वभोग्या कला का

—उपकार करके उसके बदले की आशा रखना अपने सत्कर्म पर खाक डालने के समान है।

—उपकार करने की वृत्ति रखने वाला संसार में दुःखी नही हो सकता।

—उपकार करने वाले मे स्वार्थ की भावना नही होनी चाहिए।

—उपकारी की सम्पत्ति भलाई की जड है।

—उपकारी की सम्पत्ति बढती ही रहती है। कहा भी है : पुण्य की जड़ पाताल तक जाती है।

—जिसमे उपकारवृत्ति नही, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नही है।

उपवास

—उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरों की तलवार की जगह लेता है।

—उपवास का धमकी के रूप मे उपयोग करना बुरा है।

—प्रार्थना के साथ उपवास के लगातार प्रयत्नों के द्वारा आत्मसंयम का सुफल प्राप्त होता है।

—स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उपवास किया जाता है; परन्तु अपने या समाज के द्वारा की गई गलतियो के प्रायश्चित्त के रूप में इसका अधिक महत्त्व है। किन्तु इस प्रकार का अनशन अहिंसा का पुजारी ही कर सकता है।

—उपवास से शारीरिक और आत्मिक दोनों संशोधन हो जाते हैं।

—उपवास यकायक नही शुरू करना चाहिए। उसका ढग और विधि समझकर और उसकी उपयोगिता पर पूर्ण विचार करने के बाद ही उसे शुरू करना चाहिए।

—उपवास शारीरिक और आत्मिक शुद्धि के लिए आवश्यक अवलम्ब है।

—सच्चा उपवास इन्द्रियो का दमन करता है, और उस हद तक आत्मा को मुक्त करता है।

—स्वार्थरहित उद्देश्यो से ही उपवास किया जा सकता है, अन्यथा नही।

—उपवास सत्य-शोधन का साधन तो है ही, वह शरीर-शोधन का उपाय भी है।

—उपवास मन और शरीर की शुद्धि के लिए है। उसका अन्य रूप मे दुरुपयोग नही होना चाहिए। वह सत्याग्रह-शास्त्र का अन्तिम और अमोघ अस्त्र है।

कला

—समस्त कला अन्तर के विकास का आविर्भाव ही है।

—जो कला आत्मा को आत्म-दर्शन करने की शिक्षा नही देती, वह कला ही नही है।

—जो अन्तर को देखता है बाह्य को नही, वही सच्चा कलाकार है।

—सर्वोत्कृष्ट कला व्यक्तिभोग्या नही होगी और कला जब बाह्य साधनो से अधिक से अधिक मुक्त होगी तभी वह सर्वभोग्या बन सकेगी। इस निर्दोष सर्वभोग्या कला

मनुष्य के आध्यात्मिक विकास मे बहुत बड़ा स्थान है। ··

—बाह्य साधनों पर अथवा इन्द्रिय-ज्ञान पर आधारित कला मे जितनी आत्मा होती है उतने ही अशों मे वह अमृत-कला के समान बनती है।

—जिसमे आत्मा का बिलकुल ही अभाव हो, वह कला नही होगी, किन्तु केवल कृति ही बनकर रह जाएगी और क्षणभगुर होगी। उस अमृत-कला का अश जिसमे अधिक है वही मोक्षदायी है।

—जीवन समस्त कलाओं से श्रेष्ठ है। मैं तो समझता हू कि जो अच्छी तरह जीना जानता है वही सच्चा कला-कार है।

—उत्तम जीवन की भूमिका के बिना कला किस प्रकार चित्रित की जा सकती है!

—कला के मूल्य का आधार है जीवन को उन्नत बनाना।

—जीवन ही कला है।

—कला जीवन की दासी है और उसका काम यही है कि वह जीवन की सेवा करे।

—कला विश्व के प्रति जाग्रत होनी चाहिए।

—कला मुझे उसी अंश तक स्वीकार्य है, जिस अंश तक वह कल्याणकारी है।···

—भारतीय कलाकार ने अपनी कला को मन्दिरों में और गुफाओं में प्रकट करके सार्वजनिक बना दिया है।

—कलाकार जब कला को कल्याणकारी बनाएंगे और

उसे जनसाधारण के लिए सुलभ कर देंगे तभी उस कला का जीवन में स्थान रहेगा।

—हिन्दुस्तान की कला में कल्पना भरी हुई है; यूरोप की कला में प्रकृति का अनुकरण है।

—कला वही है जो जीवन में उतारी जा सके।

—कला वही है जो नयनाभिराम और कर्णतृप्ति ही न दे, बल्कि आत्मा को भी ऊपर उठाए।

—कला मानव में दैवी अभिव्यक्ति है।

—जो कला जनता के हित में न होकर केवल गिने-चुने भाग्यवानो के लिए होती है वह निरुपयोगी है।

—कला, कला के लिए कहना व्यर्थ है—कला तो जीवन के लिए(उपयोगी)होनी चाहिए।

काव्य

—काल के अन्त में कल्पना-शक्ति अर्थात् काव्य मनुष्य के विकास में अपना उपयोगी और आवश्यक कार्य जरूर करेगा।

—कवि जिस ग्रन्थ की रचना करता है उसके सब अर्थों की कल्पना नही कर लेता।

—काव्य की यह खूबी है कि वह कवि से भी आगे बढ़ जाता है।

—जिस सत्य का कवि अपनी तन्मयता में उच्चारण करता है, वह सत्य उसके जीवन में अक्सर नही पाया जाता।

—हमारी अन्तःस्थ सुप्त भावनाओं को जाग्रत करने

का सामर्थ्य जिसमे होता है, वह कवि है ।

—वही काव्य और वही साहित्य चिरंजीवी रहेगा जिसे लोग सुगमता से पा सकेंगे, जिसे वे आसानी से पचा सकेंगे।

—काव्य वही है जो मानव-हृदय को अपने काबू में कर ले ।

—जो काव्य का आनन्द ले सकते हैं उनके लिए अन्य आनन्द फीके हैं ।

—काव्य का ध्येय केवल मनोरंजन न होकर हित-सवर्द्धन और राष्ट्र-निर्माण होना चाहिए ।

—वह काव्य जो मानव-जीवन को ऊचा न उठाए और उसमे नई आशाए और सम्भावनाएं न भरे, कला नही कहा जा सकता ।

किसानों से

—अगर भारत को शान्तिपूर्ण सच्ची तरक्को करनी है तो पैसे वाले यह समझें कि किसानों में भी आत्मा है ।

—वर्तमान समय में धनिको की शान और फजूलखर्ची और किसानो की गरीबी के बीच कोई शृखला नही है ।

—मैं जमीदारों और अन्य पूजीवादियों के विचार अहिंसक रीति से बदलने की आशा रखता हू ।

—इस समय तो सबसे पहली रिआयत किसानो या भूमिहीन मजदूरों को मिलनी चाहिए ।

—किसानों को शहर के कृत्रिम जीवन और लक्दक के मोह में नही पड़ना चाहिए । उसकी सादगी और सरलता

ही उसका भूषण है।

—किसान का शहर की ओर भागना उसकी असफलता का ढिंढोरा है। ऐसा करके वह न घर का रहेगा न घाट का।

क्रान्ति

—राष्ट्र की प्रगति विकास और क्रान्ति दोनों ही तरह से होती है और ये दोनों आवश्यक हैं।

—क्रान्ति की प्रशंसा मैं तभी करूंगा यदि वह अहिंसक हो—हिंसात्मक क्रान्तियां अनेक देशों में हुई हैं, पर उनका परिणाम अच्छा नहीं हुआ। उन्हें सुधरने में दशाब्दियां लग गईं।

—क्रान्ति तो युगों के बाद आती है और वह मनुष्य को सजग करने—सुधारने के लिए आती है।

—राष्ट्रों की प्रगति विकास से भी हुई है और क्रान्ति से भी। दोनों ही समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। मृत्यु को एक क्रान्ति कह सकते हैं और जीवन को विकास।

क्रोध

—क्रोध पाप का मूल है।

—क्रोध से बदले की भावना बढ़ती है और उसके भयंकर परिणाम होते हैं।

—जो मानवता की सेवा करता है उसका फर्ज है कि वह जिनकी सेवा करता है उनके प्रति क्रोध न करे।

—हम कीड़े-मकोड़ों और रेंगने वाले जन्तुओं को तो मार

डालते हैं, पर अपने सीने में छिपे हुए क्रोध को नहीं मारते, जो सचमुच मारने की चीज़ है।

—मुझे अपने अहिंसा के विश्वास के प्रति सच्चा होने के नाते कोई भी बात क्रोध या द्वेषवश नहीं लिखनी चाहिए।

—क्रोध को जीतने में ही सच्ची मर्दानगी है।

—क्रोध का सबसे अच्छा इलाज चुप है।

—क्रोध ऐसा दावानल है जो उस व्यक्ति को ही जलाता है जिसमें वह उत्पन्न होता है।

—क्रोध खुद को तो जलाता ही है, आसपास के और सम्बद्ध लोगों को भी पीड़ित कर डालता है।

—क्रोध से मनुष्य उसकी ही बेइज्जती नहीं करता जिसपर क्रोध करता है, बल्कि स्वय अपनी प्रतिष्ठा भी गवाता है।

—क्रोधहीन मनुष्य देवता है।

—क्रोध को न जीत सकने वाला सत्याग्रही बन ही नहीं सकता।

—क्रोध एक तरह का रोग है जिसे क्षणिक पागलपन भी कह सकते हैं।

खादी

—गांव की ज़रूरत की हर चीज़ गाव में ही बननी चाहिए। खादी इसकी पहली सीढ़ी है।

—चरखे से निकलने वाला कच्चा धागा करोड़ो स्त्री-पुरुषों में प्रेम का अटूट सम्बन्ध बांध देता है।

—स्वराज्य के समान ही खादी भी राष्ट्रीय जीवन के

लिए श्वास के जितनी ही आवश्यक है।

—खादी के अर्थशास्त्र की रचना स्वदेश-प्रेम-भावना और मानवता के तत्त्व पर हुई है।

—मैं (या कोई दूसरा) जिस एक उपाय का अवलम्बन करा सकता हू वह है त्याग-भाव से जन-समाज की सेवा करना। और ऐसी सेवा सिर्फ खादी के जरिए ही हो सकती है।

—खादी की सफलता से कारखानो का साम्राज्य तो जरूर टलेगा।

—जो सस्ती खादी लेना चाहते हैं वे खुद कातें।

—कठिनाइया सहकर भी खादी पहनो।

—थोड़ी खादी और कुछ विदेशी या मिल के कपड़े पहनने वाले खादीधारी नही कहला सकते।

—खादी पहनने वाले परदेश में भी खादी पहन सकते हैं।

—खादी महगी होने पर भी सस्ती है।

—अगर (मन्त्रियो का) खादी मे जीवित विश्वास हो तो वे उसे लोकप्रिय बनाने के लिए बहुत-कुछ कर सकते हैं।

—सच तो यह है कि जुलाहे का एक-मात्र रक्षक खद्दर ही है।

—खादी तो, कांग्रेसी हो या और कोई, सभी के लिए राष्ट्रीय पोशाक के तौर पर रखी गई है।

—खादी का मतलब है देश के सभी लोगो की आर्थिक स्वतन्त्रता और समानता का आरम्भ।

—खादी-वृत्ति का अर्थ है जीवन के लिए जरूरी चीजों की उत्पत्ति और उनके बटवारे का विकेन्द्रीकरण।

—खादीशास्त्र परमार्थ का शास्त्र है, और इसी कारण सच्चा अर्थशास्त्र भी है।

—लाखों का सहयोग प्राप्त करने के लिए चरखा और खादी सर्वोत्तम माध्यम हैं।

—जिस तरह हम अपने ही घर का बनाया भोजन पसन्द करते हैं, वैसे ही हमें हाथ-कता और हाथ-बुना कपड़ा (खादी) पहनना चाहिए।

—कमजोर के प्रति सहानुभूति दिखाने वाला कोई निशान तो हमारे पास होना चाहिए ''और वह यदि कोई हो सकता है तो खादी है।

—मेरी तो राय है कि यदि कोई रचनात्मक काम सफल होने योग्य है तो वह है खादी-कार्यक्रम।

—त्याग-भाव से जन-समाज की सेवा सिर्फ खादी के ज़रिए ही हो सकती है।

—हिन्दुस्तान सबसे पहले अपनी पोशाक और भाषा को अपनाए।

—खादी महंगी होने और हाथ-धुलाई के झंझट के होते हुए भी सब कठिनाइयां सहकर खादी पहनो।

—खेती किसान का धड़ है और चरखा हाथ-पैर।

—मेरे लिए तो खादी पहनना आज़ादी का बाना धारण करना है।

खेती

—जमीन का मालिक तो वही है जो उसपर मेहनत करता है।

—हिन्दुस्तान के लोग अगर खेती की तरक्की न कर सके तो वे और कोई भी काम नही कर सकते।

—जिस धन्धे पर देश के ७८ फीसदी लोगो की आजीविका चलती है, उसकी उपेक्षा आत्मघात के समान है।

—खेती को अगर सहकारी पद्धति पर ठीक रीति से चलाया जाए तो उसका सुपरिणाम किसानों के लिए ही नही, सारे देश के लिए होगा।

—खेती एक ऐसी कला है जिसका उत्पादन-कार्य अपने हाथों सम्पन्न होता है।

—जहां तक हो सकेगा, गांव के सारे काम सहयोग के आधार पर किए जाएगे।

—'सबै भूमि गोपाल की' है।

—सहयोग यानी सामुदायिक पद्धति द्वारा खेती ही नहीं, पशुपालन का काम भी किया जाए।

—मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जब हम अपनी ज़मीन भी सामुदायिक या सहकारी पद्धति से जोतेंगे तभी उससे पूरा फायदा उठा सकेंगे।

—बनिस्वत इसके कि गांव की खेती अलग-अलग सौ टुकड़ों में बंट जाए, क्या यह बेहतर नही है कि सौ कुटुम्ब—सारे गांव की खेती सहयोग से करें?

—मेरी कल्पना की सहकारी खेती ज़मीन की शक्ल ही

बदल देगी और लोगों की गरीबी तथा आलसीपन को भगा देगी।

—सहकारी खेती जोर-जबरदस्ती से न हो क्योकि जो अच्छाई ज़बर्दस्ती से पैदा की जाती है वह व्यक्तित्व को नष्ट कर देती है।

—सहकारी पद्धति से खेती या डेरी (दुग्धशाला) चलाना सचमुच एक अच्छा ध्येय है। इससे देश को लाभ होगा।

—सहकारी समितिया ग्रामोद्योग-विकास के लिए ही नही, ग्रामवासियो मे सामुदायिक प्रयत्न की भावना पैदा करने के लिए आदर्श सस्थाए हैं।

—किसानो के लिए सहकारी पद्धति पर खेती करना बहुत ज़रूरी है।

—भारत का प्रमुख धन्धा होने के कारण खेती को सभी दृष्टियो से प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

—सृष्टि के अधिकाश सचराचर जीवो की गुज़र-बसर खेती-बाडी की ही बदौलत होती है। कल-कारखानो के उत्पादन तो गौण उपयोग की वस्तुए हैं।

गलती

—गलती मान लेना, झाड़ू लगाने का सा काम है। यह गन्दगी को बुहारकर, सतह को साफ कर देता है।

—कुदरत ने हमे ऐसा बनाया है कि हम अपनी पीठ नही देख सकते और उसे दूसरे ही देख पाते हैं। इसलिए दूसरा जो कुछ देखता है उससे हमे फायदा उठाना चाहिए।

—हम यह सोचने की गलती न करे कि हम कभी भूल कर ही नही सकते।

—गलती मान लेने से हमको बहुत लाभ होता है। उसमे शुद्ध व्यवहार है।

—मेरे निजी अनुभवो ने तो मुझे यही सिखाया है कि हम नम्रतापूर्वक इस बात को जानें और मानें कि गलतियो के साथ सग्राम करना ही जीवन है।

—गलती हर इसान से होती है। पता चलते ही गलती या पाप को कबूल कर लेने के मानी हैं उसे बाहर निकाल फेंकना। अपनी सारी जिन्दगी मे मैंने ऐसा ही किया है।

—गलती हर इसान से होती है। लेकिन जब इसान अपनी गलती को छिपाता है, या उसपर मुलम्मा चढाने के लिए और झूठ बोलता है तो वह खतरनाक बन जाती है।...

—भूल को तर्क से सही नही साबित किया जा सकता। सारे ससार के धर्मशास्त्र उसे सही नही बना सकते।

—भूल करके आदमी सीखता तो है, पर इसका यह मतलब नही कि जीवन-भर भूल ही करता जाए और कहे कि हम सीख रहे हैं।

—गलती से इसान बहुत-कुछ सीख सकता है बशर्ते कि वह इसके लिए तैयार हो।

—गलती हो जाने पर अगर इसान सभल जाए तो वह सभले कदम से आगे बढ सकता है।

—सच्चा मनुष्य वही है जो अपनी गलती को मान ले और फिर उसे त्यागकर अपने-आपमें सुधार कर ले।

बदल देगी और लोगों की गरीबी तथा आलसीपन को भगा देगी।

—सहकारी खेती ज़ोर-ज़बरदस्ती से न हो क्योंकि जो अच्छाई ज़बर्दस्ती से पैदा की जाती है वह व्यक्तित्व को नष्ट कर देती है।

—सहकारी पद्धति से खेती या डेरी (दुग्धशाला) चलाना सचमुच एक अच्छा ध्येय है। इससे देश को लाभ होगा।

—सहकारी समितिया ग्रामोद्योग-विकास के लिए ही नही, ग्रामवासियो मे सामुदायिक प्रयत्न की भावना पैदा करने के लिए आदर्श सस्थाए हैं।

—किसानो के लिए सहकारी पद्धति पर खेती करना बहुत ज़रूरी है।

—भारत का प्रमुख धन्धा होने के कारण खेती को सभी दृष्टियो से प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

—सृष्टि के अधिकाश सचराचर जीवो की गुज़र-बसर खेती-बाडी की ही बदौलत होती है। कल-कारखानो के उत्पादन तो गौण उपयोग की वस्तुए हैं।

गलती

—गलती मान लेना, झाड़ू लगाने का सा काम है। यह गन्दगी को बुहारकर, सतह को साफ कर देता है।

—कुदरत ने हमे ऐसा बनाया है कि हम अपनी पीठ नही देख सकते और उसे दूसरे ही देख पाते हैं। इसलिए दूसरा जो कुछ देखता है उससे हमे फायदा उठाना चाहिए।

—हम यह सोचने की गलती न करें कि हम कभी भूल कर ही नही सकते ।

—गलती मान लेने से हमको वहुत लाभ होता है। उसमे शुद्ध व्यवहार है।

—मेरे निजी अनुभवो ने तो मुझे यही सिखाया है कि हम नम्रतापूर्वक इस वात को जानें और माने कि गलतियो के साथ सग्राम करना ही जीवन है।

—गलती हर इसान से होती है। पता चलते ही गलती या पाप को कबूल कर लेने के मानी हैं उसे वाहर निकाल फेंकना। अपनी सारी जिन्दगी मे मैंने ऐसा ही किया है।

—गलती हर इसान से होती है। लेकिन जब इसान अपनी गलती को छिपाता है, या उसपर मुलम्मा चढाने के लिए और झूठ बोलता है तो वह खतरनाक वन जाती है।…

—भूल को तर्क से सही नही साबित किया जा सकता। सारे ससार के धर्मशास्त्र उसे सही नही वना सकते।

—भूल करके आदमी सीखता तो है, पर इसका यह मतलब नही कि जीवन-भर भूल ही करता जाए और कहे कि हम सीख रहे हैं।

—गलती से इसान वहुत-कुछ सीख सकता है वशर्ते कि वह इसके लिए तैयार हो।

—गलती हो जाने पर अगर इसान सभल जाए तो वह सभले कदम से आगे बढ सकता है।

—सच्चा मनुष्य वही है जो अपनी गलती को मान ले और फिर उसे त्यागकर अपने-आपमें सुधार कर ले।

गरीबी

—गरीबी में पड़कर भी जो सत्य से न डिगे वही सत्पुरुष है।

—ग्रामीण की गरीबी और निरक्षरता आप दूर कर दें तो आपको उसमें शिष्ट, सस्कारी, स्वतन्त्र नागरिक का सुन्दर से सुन्दर नमूना देखने को मिलेगा।

—जो लोग भूखों मर रहे हैं और बेकार हैं उनका परमेश्वर तो योग्य काम और उससे मिलने वाला अनाज ही है।

—ईश्वर या खुदा का नाम लेकर मैं भारत के गरीब बच्चों के लिए चरखा कातता हूं और आपसे भी ऐसा ही करने की प्रार्थना करता हूं।

—स्वराज्य वही होगा जिसमें भारत के करोड़ों देहातियों की गरीबी दूर होगी।

—गरीबी तभी दूर होगी जब भारत के जन-जन के हृदय से आलस्य की भावना दूर भाग जाएगी

—भारत की दरिद्रता मुख्यतः उसके आलस्य का परिणाम है।

—चरखा चलाने में हमारा ध्येय दरिद्रनारायण की सेवा है।

—हो सकता है कि गरीबी पुण्य का फल हो और अमीरी पाप का।

—गांवों में तो गरीबी का तात्कालिक इलाज कताई ही है।

—गरीबी दैवी अभिशाप नही, मानवीय सृष्टि है।

—गरीबी दूर करने का भार शासन और समाज दोनो ही पर है।

गो-सेवा

—गो-सेवा के बारे मे अपने दिल की बात कहू तो आप रोने लग जाएगे और मैं रोने लग जाऊ—इतना दर्द मेरे दिल मे है।

—गाय जैसे निरीह और उपयोगी पशु का वध करना राष्ट्र के लिए आत्मघात के समान है।

—गो-सेवा का कार्य धार्मिक भाव से करने वालो को भी यह लाभ तो है ही कि वे शुद्ध दूध-घी प्राप्त कर उसके जरिए अपना स्वास्थ्य ठीक रख सकते हैं।

—गो के समान करुणा की मूर्ति और कोई जीवधारी भूमडल पर नही है।

—मासाहार के लिए दुधार गाय का वध करना न केवल कानून की दृष्टि से निषिद्ध होना चाहिए, बल्कि नैतिक दृष्टि से भी उसे नही होने देना चाहिए।

—भारत के ८० प्रतिशत लोग गावो मे रहते हैं और उनका जीवनाधार खेती गोवश की समृद्धि पर निर्भर है।

—गो-सेवा करना अपने-आपकी सेवा करने के समान ही है।

—हिन्दू-जाति पर गो के विनम्र स्वभाव की अद्भुत छाप है।

—गो जैसे निरीह जन्तु का वध करना मेरी समझ
किसी भी तरह नही आता।

—गाय हिन्दू-जीवन की अहिंसकता और सादगी
प्रतीक है।

—किसी भी हिन्दू को गो-सेवा का उपदेश देने की जरूर
ही एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है।

—गो-सेवा केवल धार्मिक भावना के लिए नही, उद्यो
की दृष्टि से करनी चाहिए।

—गो को माता इसीलिए कहा गया है कि वह हमे दू
पिलाती है और ऐसे बछड़े को जनती है जो हमारा साथ
बनकर कृषि और वाणिज्य मे सहायक होता है।

गीता

—मुझे राजनीति मे गीता से मार्ग-दर्शन मिला है।

—मानसिक काबू सबसे कठिन है। इसके लिए उत्त
उपाय गीता का अध्ययन है।

—गीता मेरे लिए शाश्वत मार्गदर्शिका है। अपने ह
काम के लिए मैं गीता मे से आधार खोजता हू और यदि
नही मिलता है तो उस कार्य को करते हुए रुक जाता हू य
अनिश्चित रहता हू।

—अब तो तत्त्वज्ञान के लिए मैं गीता को सर्वोत्तम ग्रन
मानता हू।

—मेरे लिए तो गीता आचार की एक प्रौढ मार्गदर्शिक
बन गई है। वह मेरा धार्मिक कोश हो गई है।

—गीता रत्नों की खान है।

—मेरे लिए तो गीता ही संसार के सब धर्मों की कुंजी है। संसार के सब धर्मग्रन्थों में गहरे से गहरे जो रहस्य भरे हुए हैं, उन सबको यह मेरे लिए खोलकर रख देती है।

—श्रीमद्भगवद्गीता और तुलसीकृत रामायण से मुझे *अत्यधिक शान्ति मिलती है।*

—यदि कोई मुझसे कहे कि संसार की किसी एक सर्वश्रेष्ठ पुस्तक को चुन लो, तो मैं गीता को ही हाथ लगाऊंगा।

—मेरा खयाल है कि यदि किसी एक भावना ने हिन्दू-जाति को निर्भीक और वीर बनाया है तो वह गीता के अन्तर्गत निहित है।

—मेरा खयाल है कि हिन्दू-जाति में जो अनेक गुण आज भी मौजूद हैं उनका कारण गीता से प्रभावित विचार-पद्धति है।

गुरु

—गुरु को प्रसन्न करके ही गुर प्राप्त किया जा सकता है।

—*अगर शुद्ध गुरुभक्ति न हो तो चरित्र-गठन* नहीं हो सकता।

—गुरु वही है जो शिष्य की शंकाओं का समाधान कर उसे सच्चा ज्ञान दे।

—गुरु ऐसा होना चाहिए जो शिष्य को सद्ज्ञान दे और उसका आध्यात्मिक कल्याण चाहे। और उससे धन ऐंठने

—गुरु के विना किसी भी क्षेत्र का समुचित ज्ञान प्राप्त करना कठिन होता है।

—गुरु से ज्ञान तभी मिल सकता है जब शिष्य में गुरु के प्रति श्रद्धा हो और हो उसकी सेवा करने की भावना

—शिक्षार्थी में विनय होनी चाहिए। विना उसके वह कुछ सीख नहीं सकता। शिक्षक तथा वड़ों के प्रति गुरु भाव, आदर-भाव रखना उसका कर्तव्य है।

—मैं गुरु-परम्परा को मानने वाला हू; किन्तु प्रत्येक शिक्षक गुरु नहीं होता—गुरु-शिष्य का सम्बन्ध आध्यात्मिक और स्वय-स्फुरित है।

—गुरु का शिष्य के प्रति प्रेम भी स्वाभाविक ही होता है।

—गुरु का आदर-मान करने वाला संसार के सद्गुण प्राप्त करता है।

—ससार में गुरु के समान वन्दनीय और कोई नही होता।

—भारत में प्राचीन काल से ही गुरु-शिष्य-परम्परा ज्ञान-विकास की साधक रही है।

—बुद्धिमान् लोग गुरु का ऋण वहुत बड़ा मानते हैं क्योकि और ऋण तो आसानी से लौटाए जा सकते हैं—ज्ञान-दान का ऋण सबके लिए लौटाना सम्भव ही नही है।

ग्राम-सेवा

—ग्राम-सेवा करने वाले नवयुवक में अटूट धैर्य, आत्म-विश्वास, शारीरिक शक्ति, ठंड, धूप वगैरह सहने की शक्ति और तालीम पाने की तत्परता इत्यादि होनी चाहिए।

—किसी भी साधारण गांव में प्रवेश करने का मार्ग कचरा, गोबर और गन्दगी से भरा होता है।

—गलियों की सफाई और साफ पानी की व्यवस्था से गांवो की बीमारी बहुत कम हो सकती है।

—बरसात में गांवों की सफाई एक टेढा काम है, उसकी तैयारी पहले से हो तो अच्छा।

—अगर गांव में पशुओं के गोबर और खाद के साथ मनुष्य के मल-मूत्र का उपयोग खाद के रूप में हो सके, तो यह गांवों की सबसे बड़ी सेवा होगी।

—यह बात मुझे आज पहले से भी अधिक स्पष्ट हो गई है कि मेरा स्थान गांव में ही है, मुझे गांव में जाना चाहिए।

—गांव में छः महीने रहकर भी शायद कोई उसकी सेवा न कर सके।...गांवों में तो स्थायी सेवा की भावना से जाना चाहिए।

—स्वार्थ-भाव से गांव में सेवा-कार्य नही हो सकता। वहां लोग शक पहले करते हैं।

—गांवों से जात-पांत और छुआछूत के रोग को पहले भगाना होगा।

—गावों मे जो बेकार आदमी हों उनके हाथ में चरखा और चक्की दे देनी चाहिए।

—गावों में अगर कताई और रात्रि-पाठशाला का काम आसान हो तो सफाई का काम बाद में भी हाथ मे लिया जा सकता है।

—आदर्श भारतीय ग्राम इस तरह बसाया और बनाया जाना चाहिए जिससे वह सम्पूर्णतया नीरोग रह सके।

—खुद सारे ग्रामवासी अपने ही बल पर परस्पर सहयोग के साथ और सारे गाव के भले के लिए हिल-मिलकर मेहनत करें तो क्या नही कर सकते!

—मुझे तो निश्चय हो गया है कि अगर गांव वालों को उचित मशविरा और मार्ग-दर्शन मिलता रहे तो गाव की आमदनी दूनी हो सकती है।

—ग्रामवासियों की जेब मे एक पैसा भी अधिक पहुचाने की गरज से हम सब उपाय काम मे लाए।

—ग्राम-सगठन का रास्ता बडा ही विकट है। जो हृदय से सेवा करेगा उसे सच्चा मार्ग मिल जाएगा।

—गावो में श्रद्धा से काम करते रहे। सच्चा अर्थशास्त्र वही है जो नीति से चले।

—गाव वालो को समझाना चाहिए कि वे दूध न बेचें।

—गावो मे आटा पीसने के लिए इजन की चक्की को मैं पामरता की सीमा समझता हू।

—ग्राम-सेवा मे वे ही लोग पड़ें जो शहरी आदतो के शिकार न हो।

—ग्राम-सेवा के लिए जो भी आगे बढ़ें वे पहले उसकी मानसिक तैयारी कर लें।

—किसी महान् पुरुष का कथन है कि भगवान् ने गांव बनाए और मनुष्य ने शहर, इसलिए सेवाभावी शिक्षितों को तो भगवान् के बनाए इन गांवो में जाकर जनता की सेवा करनी चाहिए।

चरखा

—चरखा ग्रामोद्योग-रूपी ग्रहमंडल का सूर्य है।

—चरखे के बिना दूसरे उद्योग नही चल सकते वैसे ही जैसे अगर सूरज डूब जाए तो दूसरे ग्रह चल नही सकते।

—चरखा सत्य का अश है इसलिए मैं उसे सत्य-रूपी भगवान् की एक मूर्ति के तौर पर देखता हू।

—चरखा, माला और रामनाम एक ही हैं।

—चरखा तो लगड़े की लाठी है।

—चरखा अहिंसा का प्रतीक है।

—एकाग्रता के लिए चरखा ही मेरी माला है।

—अगर जड़वत् माला फेरने में दम्भ है तो यंत्रवत् चरखा चलाने में आत्म-वञ्चना है।

—अगर चरखे की वृत्ति फैल गई तो उस छाया मे असंख्य उद्योगों को स्थान मिलेगा।

—भादो वदी द्वादशी को 'रेटिया बारस' या चरखा जयन्ती मनाने का कार्यक्रम रखना चाहिए जिससे लोग चरखे का महत्त्व और सन्देश समझ सके।

—खेती किसान का धड़ है और चरखा हाथ-पैर।

—चरखे की पुकार दूसरी सब पुकारों से मधुर है क्योंकि

—गावो मे अगर कताई और रात्रि-पाठशाला का काम आसान हो तो सफाई का काम बाद मे भी हाथ मे लिया जा सकता है।

—आदर्श भारतीय ग्राम इस तरह बसाया और बनाया जाना चाहिए जिससे वह सम्पूर्णतया नीरोग रह सके।

—खुद सारे ग्रामवासी अपने ही बल पर परस्पर सहयोग के साथ और सारे गाव के भले के लिए हिल-मिलकर मेहनत करें तो क्या नही कर सकते !

—मुझे तो निश्चय हो गया है कि अगर गाव वालो को उचित मशविरा और मार्ग-दर्शन मिलता रहे तो गाव की आमदनी दूनी हो सकती है।

—ग्रामवासियो की जेब मे एक पैसा भी अधिक पहुचाने की गरज से हम सब उपाय काम मे लाए।

—ग्राम-सगठन का रास्ता बडा ही विकट है। जो हृदय से सेवा करेगा उसे सच्चा मार्ग मिल जाएगा।

—गावो मे श्रद्धा से काम करते रहे। सच्चा अर्थशास्त्र वही है जो नीति से चले।

—गाव वालो को समझाना चाहिए कि वे दूध न बेचें।

—गावो मे आटा पीसने के लिए इजन की चक्की को मैं पामरता की सीमा समझता हू।

—ग्राम सेवा में वे ही लोग पडें जो शहरी आदतो के शिकार न हो।

—ग्राम-सेवा के लिए जो भी आगे बढें वे पहले उसकी मानसिक तैयारी कर लें।

—किसी महान् पुरुष का कथन है कि भगवान् ने गांव बनाए और मनुष्य ने शहर, इसलिए सेवाभावी शिक्षितों को तो भगवान् के बनाए इन गांवों में जाकर जनता की सेवा करनी चाहिए।

चरखा

—चरखा ग्रामोद्योग-रूपी ग्रहमंडल का सूर्य है।

—चरखे के बिना दूसरे उद्योग नही चल सकते वैसे ही जैसे अगर सूरज डूब जाए तो दूसरे ग्रह चल नही सकते।

—चरखा सत्य का अंश है इसलिए मैं उसे सत्य-रूपी भगवान् की एक मूर्ति के तौर पर देखता हू।

—चरखा, माला और रामनाम एक ही हैं।

—चरखा तो लंगड़े की लाठी है।

—चरखा अहिंसा का प्रतीक है।

—एकाग्रता के लिए चरखा ही मेरी माला है।

—अगर जड़वत् माला फेरने में दम्भ है तो यंत्रवत् चरखा चलाने में आत्म-वञ्चना है।

—अगर चरखे की वृत्ति फैल गई तो उस छाया में असंख्य उद्योगों को स्थान मिलेगा।

—भादों वदी द्वादशी को 'रेंटिया बारस' या चरखा जयन्ती मनाने का कार्यक्रम रखना चाहिए जिससे लोग चरखे का महत्त्व और सन्देश समझ सकें।

—खेती किसान का धड़ है और चरखा हाथ-पैर।

—चरखे की पुकार दूसरी सब पुकारों से मधुर है क्योंकि

वह प्रेम की पुकार है।

—वे लोग जो केवल दिखाने के लिए चरखा और फिर बन्द कर दते हैं, आखो मे धूल झोक कोशिश करते हैं।

—कातना एक यज्ञ है, उसमे आपसे जितनी सके कीजिए। जिस किसीसे आपका साविका आप देश के प्रीत्यर्थ अर्घ्य दिलाइए।

—मैं मानता हू कि आज जो लोग देश के लि का सकल्प करते हैं, वे शुद्ध धार्मिक श्रद्धा से ऐसा

—यदि काग्रेस के सदस्य ही (चरखा) न काते को किस तरह कह सकते हैं कि तुम कातो !

—आज मेरी अनिवार्य कताई को चाहे ज्याद कबूल करें, परन्तु एक दिन ऐसा आएगा जब सब गाधी ठीक कहता था।

—राजनीतिक क्षेत्र में मेरी दृष्टि मे चरखे से और कोई चीज नही है।

—चरखे मे कोई असम्भाव्य बात नही है करोडो लोग हैं जो उसे चला सकते हैं।

—दूसरा कोई उद्योग उतना असरकारक नही है जितना कि चरखा।

—जब तक शिक्षित-वर्ग कातने का फैशन न और यह न दिखाएगे कि वह दो दिन के कुतूहल का नही है, तब तक व न कातेगे।

—चरखे की सादगी ही शिक्षित-वर्ग को हैरा

कारण है।

—कताई का कार्य सहयोग के बिना सफल ही नही हो सकता।

—यदि करोडो लोग इस (कताई) मे न लगे, तो हाथ-कताई का जो उद्देश्य है वह सफल नही हो सकता।

—चरखा और देशो के लिए अनुकूल हो, न हो, भारत के लिए तो यह सर्वथा अनुकूल है।

—मुझे चरखे से अधिक प्रिय कोई वस्तु नही है।

—चरखा भारत की आर्थिक आजादी का प्रतीक है।

चाकर या साथी

—चाकर के साथ घर के सदस्यो का सा व्यवहार होना चाहिए।

—चाकर को चाकर समझकर उसके साथ अमानवता का व्यवहार नही करना चाहिए।

—यदि नौकर के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए तो बदले मे वह भी मालिक को आत्मीय की तरह प्यार दे सकता है।

—कोई कारण नही कि मालिक अपने को नौकर से श्रेष्ठ समझकर उसकी बेइज्जती करे।

—मनुष्य और मनुष्य के बीच मालिक और नौकर की भावना तो होनी ही नही चाहिए। ऐसे विचार रखना गुलामी-प्रथा को जारी रखना है।

चरित्र-निर्माण

—चरित्र की सीढी है सदाचरण ।

—चरित्र जीवन की सबसे मूल्यवान् वस्तु है ।

—चरित्र के बिना ज्ञान बुराई की ताक्त बन जाता है जैसा कि दुनिया के कितने ही 'चालाक चोरो' और 'भले-मानुस बदमाशो' के उदाहरण से स्पष्ट है ।

—व्यक्ति के चरित्र से ही राष्ट्र का अन्दाज़ा लगाया जाता है ।

—चरित्र-निर्माण का काम कुछ कम महत्त्वपूर्ण नही । इसके बिना आजादी पाकर भी भारतीय मनुष्य का मूल्य नही बढ सकता ।

—चरित्र की सम्पत्ति दुनिया की तमाम दौलतो से बढ-कर है ।

—चरित्र की रक्षा किसी भी मूल्य पर होनी चाहिए ।

—चरित्र-गठन जैसा रचनात्मक कार्य शिक्षको के लिए दूसरा नही है ।

—शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए । शिक्षा वही है जिसके द्वारा साहस का विकास हो, गुणो मे वृद्धि हो और ऊचे उद्देश्यो के प्रति लगन जागे ।

—यदि हम व्यक्ति के चरित्र का विकास कर ले तो समाज अपनी परवाह स्वय कर लेगा । इस प्रकार के विक-सित व्यक्तियो के हाथो म समाज का सगठन सौंपा जा सकता है ।

—चरित्र के विकास की पहली शर्त है आन्तरिक विश्वास ।

—यदि चरित्र-निर्माण न हुआ तो सारे रचनात्मक कार्य-क्रम व्यर्थ हैं।

चपरासी और मन्त्री

—मैं चाहूंगा कि चपरासी मन्त्रि-पद के लायक बनें और तो भी अपनी ज़रूरत चपरासी-जितनी रखें।

—यह बात बिलकुल ठीक है कि मन्त्रियो को मैं पाच सौ रुपये माहवार देने की वात क्यो कहता हू जबकि चपरासी पन्द्रह रुपये माहवार पाते हैं ? जब चपरासी की गुज़र इतने कम मे नही होती तो उसे ज्यादा मिलना ही चाहिए।

—मन्त्रियो की तनख्वाह पाच सौ रुपये से पन्द्रह सौ रुपये क्यो हो गई, यह अलग सवाल है। मूल प्रश्न के हल होने पर यह भी हल हो सकता है।

—मन्त्रियो और चपरासियो की तनख्वाहो मे जो आज इतना भारी अन्तर है उसे दूर करने—कम से कम करने—का आन्दोलन शान्ति से करना चाहिए।

—इतना समझ लें कि कोई मन्त्री बधी हुई मर्यादा तक तनख्वाह लेने के लिए बधा नही हैं।

—पैसेदार लोग यदि प्रान्तीय धारासभाओ के सदस्य या मन्त्री के पद पर काम करते हुए तनख्वाहे लें तो यह एक हसी की बात होगी। इसका मतलब होगा कि वे सेवा-भाव से काम नही कर सकते।

—चपरासी का काम भी अपने स्थान पर उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना मन्त्री का।

—चपरासी न हो तो मंत्री तक पहुंचे कौन और कैसे !

चिन्ता

—पूर्ण समर्पण का अर्थ है चिन्ताओं से मुक्त हो जाना

—चिन्ता एक डायन है जो शरीर को खा जाती है।

—चिन्ता मनुष्य की शक्तियों को शून्य कर देती है इसलिए उससे छुटकारा पा लेना पहला कर्तव्य है।

—चिन्ता करने से यदि कोई लाभ होता है तो वह है मानसिक ह्रास।

—चिन्ता वहां तक तो वांछनीय है जहां तक वह रचनात्मक ध्येय की पूर्ति के लिए विविध उपायों का मनन करने तक सीमीत हो; परन्तु जब चिन्ता इतनी बढ़ जाए कि वह शरीर को ही खाने लगे तो वह अवांछनीय हो जाती है, क्योंकि फिर तो वह अपने ध्येय को ही हरा बैठती है।

ट्रस्टीशिप

—मैं व्यक्तिगत रूप में यह पसन्द करूंगा कि ट्रस्टीशिप (अमानती) की भावना बढ़े, क्योंकि मेरा खयाल है कि राज्य की हिंसा से व्यक्ति की हिंसा कम खतरनाक होती है।

—जब तक धनिक-वर्ग स्वेच्छापूर्वक अपना धन त्याग नहीं देते अथवा उसे जनता की अमानत (ट्रस्ट) समझकर नहीं खर्च करते, तब तक हिंसात्मक क्रान्ति अनिवार्य है।

—धनाढ्य-वर्ग के लोग यदि जन-सामान्य की तरह सादगी से रहते और कम खर्च करते हैं तो वे जनता के ट्रस्टी

कहे जा सकते हैं।

—जो ट्रस्टीशिप की भावना रखेगा, वह लोगों को दबाकर और उनका शोषण करके धन नहीं जमा करेगा।

—मैं धनाढ्य-वर्ग की जायदाद बिना कारण अपहृत करने के पक्ष में नहीं हूं।

—मैं पूजी और श्रम का विवाह (मेल) चाहता हूं।

—मेरे कितने ही पूजीवादी मित्र हैं और वे जानते हैं कि मैं पूजीवाद समाप्त करने के लिए श्रमजीवी या साम्यवादी से भी ज्यादा उत्सुक हूं; पर पूंजीवाद को समाप्त करने का मेरा तरीका अलग है और वह ट्रस्टीशिप के ही सिद्धान्त पर निर्भर है।

—मैं वर्षों से मानता आया हूं कि संसार की सारी सम्पत्ति भगवान् की है और यदि किसीके पास अनुपात से अधिक धन है तो वह उस धन का जनता की ओर से ट्रस्टी या अमानतदार है।

—ट्रस्टीशिप या धरोहरदारी की भावना उच्च चरित्र की निशानी है।

तपस्या

—तपस्या जीवन की सबसे बड़ी कला है।

—तप के बिना त्याग अधूरा ही रहता है।

—तप से ही काया कंचनमय होती है।

—तप ही शुद्धि का साधन है।

—तप से संसार की बड़ी से बड़ी सिद्धि प्राप्त की जा

सकती है ।

—तप से राज्य और राज्य से नरक मिलने की कहावत सिद्ध करती है कि तप राज्य से श्रेष्ठ है, क्योकि राज्य के वाद पतन शुरू हो जाता है ।

—तप से मनुष्य का मन उच्चस्तर प्राप्त करता है ।

—प्राचीन काल मे तप का वडा महत्त्व था । आज लोग तप के अभाव मे ही जीवन-पथ से भटक जाते हैं ।

—तप से जव देवताओ ने मृत्यु पर विजय प्राप्त करली थी, तो भला मनुष्य उससे अभीष्ट सिद्धि नही कर सकता !

—तपस्या लगातार साधना और चरित्र के बल पर ही हो सकती है ।

त्याग

—त्याग एक सात्विक आनन्द है ।

—जवरदस्ती से कराया गया त्याग स्थायी नही होता ।

—त्याग के वाद पछतावा नही होना चाहिए ।

—त्याग के विना देशभक्ति नही हो सकती, क्योकि जहा स्वार्थ या ग्रहण की भावना आई, वह मनुष्य ऊपर चढ ही नही सकता ।

—त्याग के अन्दर जो सद्भावना भरी होती है उसका विकास धीरे-धीरे होता है ।

—कोई भी त्याग बदले की भावना से नही करना चाहिए ।

—ससार मे जव तक बुद्धि और सम्पत्ति की विपमता

कायम है, और कभी बिलकुल समान नही हो सकती, तब तक त्याग का महत्त्व नही घट सकता।

—त्याग अपने कुटुम्ब और परिजन-पुरजन के लिए सभी करते हैं, पर जो सबके लिए करे वही प्रशसनीय है।

—जिसमे त्याग-भाव नही है वह सेवा का काम नही कर सकता।

—त्याग के बिना मनुष्य का विकास नही हो सकता।

दया

—दया अहिंसा की विरोधी नही। विरोधी हो तो वह दया नही।

—दया मनुष्य की कोमलतम भावना का प्रतीक है। जिसमे दया नही उसमे विनय नही।

—दया अपने-आप उपजती है। किसी विशेष प्रसग को लेकर उपजने वाली दया केवल आनुषगिक होकर रह जाती है।

—दया धर्म का मूल है और मानवीय गुणो का श्रृगार है।

—दयाहीन मनुष्य मानवता के अन्य सद्गुणो मे बहुत आगे नही बढ सकता।

—जहा दया नही वहा अहिंसा नही, इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि जिसमे जितनी दया है उतनी ही अहिंसा है।

—सभी सद्गुणो की पक्तियो मे दया को

सकती है ।

—तप से राज्य और राज्य से नरक मिलने की कहावत सिद्ध करती है कि तप राज्य से श्रेष्ठ है, क्योंकि राज्य के बाद पतन शुरू हो जाता है ।

—तप से मनुष्य का मन उच्चस्तर प्राप्त करता है ।

—प्राचीन काल मे तप का बडा महत्त्व था । आज लोग तप के अभाव मे ही जीवन-पथ से भटक जाते हैं ।

—तप से जब देवताओ ने मृत्यु पर विजय प्राप्त करली थी, तो भला मनुष्य उससे अभीष्ट सिद्धि नही कर सकता !

—तपस्या लगातार साधना और चरित्र के बल पर ही हो सकती है ।

त्याग

—त्याग एक सात्विक आनन्द है ।

—जबरदस्ती से कराया गया त्याग स्थायी नही होता ।

—त्याग के बाद पछतावा नही होना चाहिए ।

—त्याग के बिना देशभक्ति नही हो सकती, क्योकि जह स्वार्थ या ग्रहण की भावना आई, वह मनुष्य ऊपर चढ ही नही सकता ।

—त्याग के अन्दर जो सद्भावना भरी होती है उसका विकास धीरे-धीरे होता है ।

—कोई भी त्याग बदले की भावना से नही करना चाहिए ।

—ससार मे जब तक बुद्धि और सम्पत्ति की विषमता

कायम है, और कभी बिलकुल समान नही हो सकती, तब तक त्याग का महत्त्व नही घट सकता।

—'त्याग अपने कुटुम्ब और परिजन-पुरजन के लिए सभी करते हैं, पर जो सबके लिए करे वही प्रशसनीय है।'

—जिसमे त्याग-भाव नही है वह सेवा का काम नही कर सकता।

—त्याग के बिना मनुष्य का विकास नही हो सकता।

दया

—दया अहिंसा की विरोधी नही। विरोधी हो तो वह दया नही।

—दया मनुष्य की कोमलतम भावना का प्रतीक है। जिसमे दया नही उसमें विनय नही।

—दया अपने-आप उपजती है। किसी विशेष प्रसग को लेकर उपजने वाली दया केवल आनुषगिक होकर रह जाती है।

—दया धर्म का मूल है और मानवीय गुणो का शृगार है।

—दयाहीन मनुष्य मानवता के अन्य सद्‌गुणो मे बहुत आगे नही बढ सकता।

—जहा दया नही वहाँ अहिंसा नही, इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि जिसमे जितनी दया है उतनी ही अहिंसा है।

—सभी सद्‌गुणो की पक्तियो मे दया को अगली पक्ति

मे स्थान मिलेगा ।

—भारत मे दया का भी बहुत दुरुपयोग हुआ है, क्योकि दया करके जिन्होने बिना विवेक के बडे-बड़े दान दे डाले हैं उनका बहुत दुरुपयोग हुआ है ।

—दया ससार के सभी धर्मो की मूल शिक्षा है ।

देशभक्ति

—अगर देशभक्ति का मतलब व्यापक मानव-मात्र का हित-चिन्तन नही है, तो उसका कोई अर्थ ही नही है ।

—जिस तरह देशभक्ति हमे यह सिखाती है कि व्यक्ति परिवार के लिए, परिवार गांव के लिए, गाव ज़िले के लिए, ज़िला प्रान्त के लिए और प्रान्त देश के लिए मरे, उसी प्रकार किसी भी देश को आजाद इसलिए होना चाहिए कि वह जरूरत पड़ने पर संसार के हित के लिए मर सके ।

—उस देशभक्ति का त्याग करना चाहिए जो दूसरे राष्ट्रों को आफत में डालकर बड़प्पन पाना चाहती है ।

—देशभक्ति मनुष्य का पहला गुण है । इसके बिना वह संसार मे सिर उठाकर नही चल सकता ।

—मनुष्य में सच्ची देशभक्ति तब उपजती है-जब वह अपने देश से दूर जा पहुचता है ।

—संसार के देशभक्तों ने ही आज़ादी के मार्ग को प्रशस्त किया है ।

—देशभक्तों की चरण-रज माथे पर लगाने को मिले

तो अहोभाग्य ! ससार के गुलाम देशो को आजाद करने मे उन्होने नीव के पत्थर का काम किया है ।

—इसमे सन्देह नही कि देशभक्ति की वर्तमान भावना हमने पाश्चात्य देशो से सीखी है । हमारी पुरानी देशभक्ति स्थानीय और अपेक्षाकृत सकीर्ण ढग की हुआ करती थी ।

दैनन्दिनी (डायरी)

—डायरी सत्य की आराधना करने वाले के लिए पहरेदार है ।

—सत्य के अभाव मे डायरी खोटे सिक्के-सी हो जाती है ।

—डायरी मे यदि सत्य ही हो तो वह सोने की मुहर से भी कीमती हो जाती है ।

—डायरी रखने (लिखने) की आदत ही हमे अनेक दोषों से बचा लेगी ।

—डायरी मे अपने दोषो का उल्लेख होना चाहिए और दूसरों के दोषों का उल्लेख नहीं होना चाहिए ।

—डायरी-रूपी प्रतिबन्ध आत्म-शुद्धि मे सहायता करता है ।

—रोज़नामचा लिखने मे मनुष्य जीवन के सभी तरह के हिसाब-किताब रखने की आदत मे सधता है ।

—मेरे जीवन मे डायरी लिखना एक नियमित और अनिवार्य-सा कार्यक्रम बन गया है ।

—किसी दिन डायरी लिखने मे चूक या विलम्ब मुझे प्रार्थना मे चूक या विलम्ब के समान अखरता है।

—मैं तो जिस तरह खुद रोजाना डायरी लिखता हू, चाहता हू कि वैसे ही हर शिक्षित कार्यकर्ता लिखा करे।

धर्म या मजहब

—जो धर्म ईश्वर का नही है, वह शैतान का है, वह किसी काम का नही हो सकता।

—धर्महीन राजनीति को एक फासी ही समझिए। वह आत्मा का नाश कर देती है।

—जितने भी धर्म हैं, सबके सब ऊचे हैं। धर्म मे कसर नही है। कसर है तो उनके आदमियो मे।

—वह धर्म जो व्यावहारिक मामलो पर ध्यान नही देता और उन्हे सुलझाने मे सहायक नही, धर्म नही।

—धर्मरहित अर्थ त्याज्य है, धर्मरहित राज्यसत्ता राक्षसी है।

—धर्म तो जुदा जुदा रास्ते हैं जो एक ही जगह जाकर मिलते हैं। अगर हम एक ही मकसूद (ध्येय) तक पहुचें तो अलग-अलग रास्तो पर चलने से क्या नुकसान है।

—जो धर्म सत्य और अहिंसा का विरोधी है, वह धर्म नही है।

—धर्म की परीक्षा ही दुःख मे होती है।

—धर्म अपने दिल की बात है। इसान जाने और उसका ईश्वर जाने।

—धर्म का आभूषण वैराग्य है, वैभव नही।

—मैं धर्म से भिन्न राजनीति की कल्पना नहीं कर सकता। वास्तव मे धर्म तो हमारे हरएक काम में व्यापक होना चाहिए। यहा धर्म का अर्थ कट्टरपन्थ से नही है, उसका अर्थ है—विश्व की एक नैतिक सुव्यवस्था।

—समाज से धर्म को निकालकर फेंक देने का प्रयत्न वाभ के घर पुत्र पैदा करने जितना ही निष्फल है, और अगर कही सफल हो जाए तो समाज का उसमे नाश है।

—धर्म तो सिखाता ही है कि जीव-मात्र अन्त में एक ही हैं। अनेकता क्षणिक होने के कारण आभास-मात्र है।

—धर्म कुछ सकुचित सम्प्रदाय नही है, केवल बाह्याचार नही है। विशाल व्यापक अर्थ है—ईश्वरत्व के विषय में हमारी अचल श्रद्धा, पुनर्जन्म मे अविचल श्रद्धा, सत्य और अहिंसा मे हमारी सम्पूर्ण श्रद्धा।

—आने वाले जमाने में सबसे ज्यादा असर धर्म का रहेगा।

—धर्म तो उत्कट श्रद्धा का नाम है।

—एक धर्म की विशेषता दूसरे धर्म की विशेषता प्रतिकूल नही हो सकती, जगत् के सर्वमान्य सिद्धान्त विरोधी नही हो सकती।

—धर्मशास्त्र का वचन वह है जो सत्य की दया-रूपी हथौडे से पीटकर देखने पर पक्का नि-

—दया से हीन धर्म पाखड है।

—सकट के समय धर्म मनुष्य को उबार

—अगर मैं डिक्टेटर होऊ तो मजहब

एक-दूसरे से अलग रखू ।

—जिनमे बचपन से धार्मिक सस्कार डाले जाते हैं उनमें श्रद्धा, विश्वास आदि सद्गुणो का विकास होता है ।

—मजहब तो खानगी मामला है ।

—धर्म भगवान् तक पहुचने का सेतु (पुल) है ।

—सारे ससार के धर्मशास्त्र उद्धत किए जाए तो भी गलती का समर्थन नही कर सकते—वे सचाई और तर्क को लाघ नही सकते ।

—धर्म मानव-मानव के बीच खाई नही, मेल का साधन बनना चाहिए ।

—हमारा सबसे बडा धर्म है, आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना ।

—चाहे धन, मान, कुटुम्ब और प्राणो तक का त्याग करना पडे, पर धर्म को कदापि न छोडा जाए ।

—धर्म सारे ससार और मानव-जाति का केवल एक ही है फिर उसके नामान्तर भले ही कर दिए गए हैं ।

—धर्महीन मनुष्य बिना पतवार की नाव के समान है ।

धर्मस्थान

—धर्मस्थान के नाम पर भारत-भर मे जो भडार पडे सड रहे हैं, वे धर्मस्थान नही, धोखे की चीजें हैं । ये भ्रष्टाचार के केन्द्र बन गए हैं ।

—मुझे अधिकार हो तो मैं हर 'सदाव्रत' को बन्द करा और केवल ऐसे व्यक्ति को भोजन दू जो ईमानदारी से

उसके लायक मेहनत कर चुका हो।)

—सार्वजनिक सस्थाओ को स्थायी कोश के द्वारा कभी नही चलाना चाहिए।

—खानगी धर्मस्थान या मन्दिर भी हरिजनो के लिए खोल दिए जाए तो इससे उनको प्रोत्साहन मिलेगा।

—सार्वजनिक मन्दिरो मे हरिजनो का प्रवेश किसी भी दृष्टि से नही रोका जा सकता।

—सभी धर्मानुयायियो के धर्मस्थानो को पवित्र मानना चाहिए।

—धार्मिक स्थानो का धन यदि राष्ट्र-निर्माण में लगे तो इससे अच्छा काम और क्या होगा!

—धर्मस्थानो की सम्पत्ति यदि अब शिक्षा, सस्कृति और सत्कार्यो मे लगे तो देश का बहुत हित हो सकता है।

—हर धर्मस्थान को सस्था का रूप दे देना भारत की वर्तमान आवश्यकता है।

नम्रता

—नम्रता मनुष्य का आभूषण है।

—नम्रता को बहुत-से विद्वानो (जिनमे सर गुरुदास बनर्जी एक हैं) ने एक व्रत कहा है।

—शायद नम्रता व्रतो की अपेक्षा ज्यादा जरूरी है।

—किन्तु नम्रता अभ्यास से प्राप्त करने का उदाहरण देखने मे नही आता।

—नम्रता की कोई माप नही होती।

—नम्र मनुष्य अपने इस गुण को खुद नही पहचान सकता।

—सत्य का पालन करने वाले के लिए विनम्र होना आवश्यक होता है क्योकि सत्य का पालन करने की इच्छा रखने वाला अहकारी नही हो सकता।

—नम्रता के मानी हैं तीव्रतम पुरुषार्थ।

—नम्रता अहिंसा के अन्दर आ जाती है।

—नम्रता स्वभाव मे ही आ जानी चाहिए, क्योंकि यह कोशिश से नही आती।

—नम्रता की आदत डालना तो दम्भ की आदत डालने की सी बात है।

—नम्रता के पीछे स्वार्थ हो तो वह ढोग है।

—हमारी नम्रता शून्य की हद तक जानी चाहिए।

—नम्रता के मानी हैं 'मैं' का बिलकुल मिट जाना।

—व्रतो को सही ढग से समझने से नम्रता अपने-आप आने लगती है।

—सच्ची नम्रता हमसे तमाम जीवो की सेवा के लिए सब-कुछ न्योछावर करने की आशा रखती है।

—नम्रता से मनुष्य के ऐसे बहुत-से काम बन सकते हैं जो कठोरता से नही होते।

नवयुवकों से

—देश के युवक चाहे तो वे बड़े-बडे सत्कार्य आसानी से सम्पन्न कर सकते हैं।

—युवकों को अपने जोश का उपयोग करना चाहिए, पर होश के साथ।

—नवयुवक गावो मे जाकर ग्रामवासियो को अपनी जानकारी का ज्ञान कराए और उनके अन्दर से अज्ञान दूर करें।

नियमितता

—सूर्य के बराबर अद्वितीय नियमितता के साथ कौन बेगार करता है!

—नियमितता के बिना जिन्दगी अस्त-व्यस्त हो जाती है।

—बच्चो को नियमितता शुरू से ही सिखाने पर वे आगे चलकर नियमपूर्वक काम करने के अभ्यस्त हो जाते हैं।

—माता, पिता और शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चो को घर से ही नियमितता का पाठ पढाए, जिससे शिक्षा-सस्थाओ मे जाकर उनके बालक आसानी से आगे बढ सके।

—यदि कोई मनुष्य अपना कार्य नियमित रूप मे नही करता, तो उसे सफलता कदापि नही मिल सकती।

—नियमितता सफलता की जननी है।

—बूद-बूद करके तालाब इसीलिए भरता है कि यह काम नियमित रूप मे होता रहता है।

—नियमितता जीवन की एक कसौटी है।

—नियमितता के द्वारा मनुष्य बडे-बडे कार्य सम्पन्न कर

सकता है।

—नियमितता सीखने की चीज़ है—यह स्वभावगत चीज़ नही है—अभ्यास-साध्य है।

नियंत्रण

—सब नियन्त्रणों से बढकर आत्म-नियन्त्रण है।

—हमे यह याद रखना चाहिए कि अपरिग्रह का सिद्धांत विचार-नियन्त्रण के बिना अमल मे नही आ सकता।

—सत्य के अनन्य भक्त के लिए मौन आध्यात्मिक नियन्त्रण का एक अंग है।

—इच्छाओं का परित्याग किए बिना वस्तु का त्याग क्षणिक होना है, फिर चाहे आप इसके लिए कैसे भी नियन्त्रण का उपयोग क्यों न करें।

—वास्तव मे मूल चीज़ मानसिक रुख है। इसके बिन यान्त्रिक ढग से नियमों का पालन व्यर्थ है।

—नियन्त्रण का उपयोग बुद्धिमत्तापूर्वक होना चाहिए विकृत समाज के लिए वह दुधारा तलवार सिद्ध हं सकता है।

पुस्तकें

—कुछ पुस्तकें मेरे जीवन की मार्गदर्शिका बन गई जिन एमर्सन की 'अण्टू दिस लास्ट' सर्वप्रथम है।

—गीता ने मुझपर सबसे अधिक असर डाला है।

—अंग्रेजी पुस्तकों मे मुझे 'पिलग्रिम्स प्राग्रेस' बहुत अच्छ

लगी।

—'न्यू टेस्टामेण्ट' का 'सर्मन ग्रान द माउण्ट' (गिरि-वचन) भी मेरे खयाल से सर्वोत्तम उपदेश-ग्रंथों में से है।

—मेरे लिए तुलसी-रामायण (रामचरितमानस) भक्ति-रस का सर्वोत्तम ग्रंथ है।

—पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि रत्न बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।

—पुस्तकों की उपमा विचारों के रत्नकण से दी जा सकती है।

—पुस्तकों का चुनाव अनुभवी हाथों में दिया जाना चाहिए।

—स्वाध्याय द्वारा विकास पाने वालों के लिए सबसे बड़ा साधन पुस्तकें हैं।

—पुस्तकें ज्ञान-प्रसार के लिए अमूल्य और सुगम साधन हैं। कोई गांव बिना पुस्तकालय के नहीं होना चाहिए

पत्रकारिता

—पत्रकारिता का मुख्य ध्येय होना चाहिए सेवा।

—पत्र का उद्देश्य यह भी होना चाहिए कि लोक-भावना को समझकर उसकी अभिव्यक्ति की जाए।

—राज्य जो गलतियां कर रहा हो, उसका जिक्र पत्र-कारिता का आवश्यक अंग है।

—पत्रकारिता लोकमत बनाने का एक साधन है।

—मैंने तो अपने जीवन के ध्येय की पूर्ति के लिए एक साधन के रूप मे पत्रकारिता को अपनाया है, पत्रकारिता के लिए नही।

—यह दुर्भाग्य की बात है कि आज समाचारपत्र औसत आदमी के लिए शास्त्रो से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए हैं।

—पत्रकारिता एक सुन्दर कला है, पर आजकल उसका दुरुपयोग बहुत होता है—उसमे लोकहित का ध्येय कम होता जा रहा है।

—समाचारपत्रो को 'चतुर्थ राज्य' कहा जाता है। निश्चय ही यह एक शक्ति है, पर इस शक्ति का बुरा इस्तेमाल एक अपराध है।

—देश मे जैसे अखबार निकल रहे हैं, मेरा बस चले तो उन सबको बन्द करा दू।

पंचायत

—पचायत-राज के बारे मे मेरा यह विचार है कि वह पूर्णत गणतन्त्र है।

—पचायत की व्यवस्था मे हर गाव स्वावलम्बी और स्वतन्त्र होना चाहिए।

—पचायत-राज के अन्तर्गत सभी क्रियाशीलताए सहकारी पद्धति पर आधारित होनी चाहिए।

—पचायत भारत की प्राचीनतम सस्था है इसलिए उसका फिर से प्रचलन देश मे कोई नई बात नही होगी।

—पचायत के मातहत हमारे गाव बडे-बडे काम कर

सकते हैं।

—पंचायत के आधार पर खेती होने पर किसान खुशहाल होंगे। उनमें स्वावलम्बन का माद्दा अधिक आएगा।

—पंचायत भारत राष्ट्र की प्राचीनतम संस्था है और यह हर प्रकार मंगलकारी है।

—भारत-जैसे विशाल और गांवों में फैले जनसमूह का कल्याण पंचायतों द्वारा बहुत अच्छे ढंग से हो सकता है।

—गाव वालों का उद्धार तो पंचायत-राज के द्वारा ही हो सकता है।

—पंचायत के द्वारा गावों की व्यवस्था होने लगेगी तो देहाती लोगों में स्वार्थ की भावना कम होगी और सगठन की भावना बढेगी।

प्राणदण्ड

—फांसी की सज़ा को मैं अहिंसा के विरुद्ध समझता हूं।

—जिस प्राण का मनुष्य दान नही दे सकता उसका अपहरण करने का उसे क्या अधिकार है!

—प्राणदण्ड अस्वाभाविक और बर्बरतापूर्ण है।

—प्राणदण्ड के विरुद्ध सारे संसार में लोकमत जाग्रत करना चाहिए।

—प्राणदण्ड जंगली प्रथा है। सभ्य संसार को अपनी विधि-संहिता से उसे निकाल बाहर करना चाहिए।

—नैतिक दृष्टि से प्राणदण्ड देने का अधिकार संसार के किसी भी न्यायालय को नही है।

—जब तक प्राणदण्ड बन्द न होगा तब तक मनुष्य का सभ्य होने का दावा खोखला है।

—सारे ससार से प्राणदण्ड का अन्त करने के लिए समझदार लोगो को प्रबल आन्दोलन करना चाहिए और लोकमत तैयार करना चाहिए।

—प्राणदण्ड आधुनिक सभ्यता का अभिशाप है।

प्रार्थना

—प्रार्थना में असीम शक्ति है।

—प्रार्थना नम्रता की पुकार है—आत्म-शुद्धि का, आत्म-निरीक्षण का आह्वान है।

—प्रार्थना धर्म का प्राण और सार है।

—प्रार्थना के बिना भीतरी शान्ति नही मिलती।

—दिन का काम प्रार्थना से शुरू कीजिए और उसमें इतनी आत्मा उडेलिए कि वह शाम तक आपके साथ बनी रहे।

—प्रार्थना अपनी अयोग्यता और दुर्बलता को स्वीकार करना है।

—प्रार्थना और सदिच्छापूर्ण प्रयत्न कभी व्यर्थ नही जाता और मनुष्य की सफलता ऐसी ही कोशिशो पर निर्भर करती है। नतीजा तो भगवान् के हाथ है।

—प्रार्थना ही आत्मा की खुराक है।

—ईश्वर को पत्र लिखने मे न कागज चाहिए, न कलम-दवात, न शब्द। उस पत्र का नाम है प्रार्थना, पूजा।

—प्रार्थना का अर्थ ही सदाचार होना चाहिए।

—जब तक जीव-मात्र के साथ एकता महसूस न हो तब तक प्रार्थना, उपवास, जप-तप थोथी बातें हैं।

—प्रार्थना या भजन जीभ से नही, हृदय से होता है। इसीसे गूगे, तोतले और मूढ भी प्रार्थना कर सकते हैं।

—जहा प्रत्यक्ष कर्म सामने आकर उपस्थित हो जाए वहां प्रार्थना उसी कर्तव्य में समा जाती है।

—प्रार्थना मे विभाजन नही हो सकता। वह सबके लिए—सर्वधर्म-अनुयायियों के लिए है।

—प्रार्थना याचना करना नही है, वह तो आत्मा की पुकार है।

—स्तुति, उपासना, प्रार्थना अन्धविश्वास नही, बल्कि उतनी अथवा उससे भी अधिक सच बातें हैं जितना कि हम खाते हैं, पीते हैं, चलते हैं, बैठते हैं—ये सच हैं।

—अर्थहीन स्तोत्र-पाठ प्रार्थना नही है; न शरीर को भूखो मारना उपवास है।

—प्रार्थना तभी प्रार्थना है जब वह अपने-आप हृदय से निकलती है।

—प्रार्थना का आमंत्रण निश्चय ही आत्मा की व्याकुलता का द्योतक है।

—प्रार्थना पश्चात्ताप का एक चिह्न है।

—प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होने की आतुरता को सूचित करती है।

—मैं अपना कोई काम बिना प्रार्थना किए नही करता।

—प्रार्थना मनुष्य का सबसे बडा सहारा है।

—प्रार्थना किसी भी नाम से की जा सकती है। प्रार्थना का वाहन भक्तिपूर्ण हृदय है।...

—ईश्वर के सहस्र नाम हैं। जो भी नाम हमें अच्छा लगे उसकी पूजा या प्रार्थना कर सकते हैं।

—प्रार्थना वाणी से नही, हृदय से करने की चीज़ है।

—प्रार्थना के बिना कोई भी प्रयत्न सपूर्ण नही होता।

—प्रार्थना नम्रता की पुकार ही नही है, वह आत्म-शुद्धि और आत्म-निरीक्षण का आह्वान है।

—ईश्वर का अनुभव अवर्णनीय है। मैडम ब्लावत्सकी के शब्दो मे मनुष्य प्रार्थना करने मे अपने ही विशालतर स्वरूप की पूजा करता है।

—प्रार्थना धर्म का प्राण और सार है।

—प्रार्थना धर्म और मानव-जीवन का मार्मिक अग है।

—प्रार्थना के लिए कोई जटिल या कठोर नियम नही बनाया जा सकता, न समय नियत किया जा सकता है। यह तो अपने-अपने स्वभाव पर निर्भर है।

—प्रार्थना प्रभात की कुजी और सायकाल की साकल है।

—प्रार्थना आत्म-शुद्धि का सहज और सरल साधन है।

—मुझे जो भी शान्ति और सफलता मिली है वह प्रार्थना के द्वारा।

—प्रार्थना मे तल्लीन हो जाना असली उपासना है।

—प्रार्थना ईश्वर के साथ सहकार है।

—प्रार्थना द्वारा ईश्वर की कृपा और सहायता से हम अपनी कमजोरियो पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

—भ्रमित विचार की शुद्धि के लिए हार्दिक प्रार्थना एक जीवन-जडी है।

प्रायश्चित्त

—प्रायश्चित्त से पिछले पाप के प्रति विरक्ति उत्पन्न होती है और आगे के लिए सावधानी।

—प्रायश्चित्त प्रहसन के रूप मे नही, हृदय से होना चाहिए।

—जो व्यक्ति हृदय से प्रायश्चित्त कर लेता है वह सहानुभूति का अधिकारी होता है।

—प्रायश्चित्त की आवश्यकता जहा अपनी आन्तरिक अनुभूति से पैदा होनी चाहिए, वहा उसके साथ भविष्य के प्रति प्रतिज्ञा का भाव भी उदय होना चाहिए।

—प्रायश्चित्त वही होना चाहिए, जहा जान-बूझकर कोई भारी पाप हो गया हो।

प्राकृतिक चिकित्सा

—जब सभी इलाज असफल हो जाते हैं तब भी प्राकृतिक चिकित्सा मनुष्य के स्वास्थ्य और प्राण बचा सकती है।

—जल-चिकित्सा से मेरा कब्ज और सिर-दर्द का रोग दूर हो गया।

—मैं दिन पर दिन प्रयोग के द्वारा इसी नतीजे पर

पहुचता जा रहा हू कि प्राकृतिक चिकित्सा ही सर्वश्रेष्ट इलाज का साधन है।

—अकेले पानी और मिट्टी के इलाज से मैंने कितने ही सामान्य रोग दूर किए हैं।

—प्राकृतिक इलाज सबसे सस्ता, कारगर और हमारे देहातो के लिए अनुकूल उपचार है।

—प्राकृतिक उपचार से जो रोग चगे हो जाते हैं उनके दोबारा आने का डर नही रह जाता। औषधिक-चिकित्सा में यह बात नही होती।

प्रेम

—प्रेम-जैसी पवित्र वस्तु ससार मे और कोई नही है।

—प्रेम कभी दावा नही करता। वह सदा देता है। प्रेम तकलीफ उठाता है—न क्रोध करता है न बदला लेता है।

—अगर प्रेम जिन्दगी का कानून न होता तो मृत्यु के बीच जीवन कायम न रहता। जीवन तो मृत्यु पर शाश्वत विजय का नाम है।

—भारी से भारी चीज़ पख-जैसी हलकी हो जाती है जब प्रेम उसे उठाने वाला होता है।

—हमे तो इतना देखना चाहिए कि जो बो रहे हैं वह प्रेम है या और कुछ।

—प्रेम-भरा हृदय अपने प्रेम-पात्र की भूल पर दया करता है और खुद घायल हो जाने पर भी उससे प्यार करता है।

—दरिद्र वह है जिसमें शुद्ध प्रेम की बूंद तक नहीं। धनवान् वह है जिसके प्रेम में जन्तु से लेकर हाथी तक समा सकता है।

—जहां प्रेम है वहां डर को स्थान कहां ?

—प्रेम एकपक्षीय भी हो तो वहां सर्वांश में दु:ख नहीं हो सकता।

—शुद्ध प्रेम के लिए संसार में कोई बात असम्भव नहीं।

—प्रेम की ग्रन्थि से ही जगत् बंधा हुआ है।

—प्रेम-तत्त्व ही संसार का शासन करता है।

—अगर हमारा प्रेम हृदयगत चीज है तो हमारा रास्ता तलवार का नहीं है।

—जो प्रेम पशुवृत्ति की तृप्ति पर निर्भर है वह आखिर स्वार्थ ही है और थोड़े से भी दबाव से वह ठंडा पड़ सकता है।

—प्रेम की मेरी कल्पना यह है कि वह कुसुम (फूल) से भी कोमल (नरम) और वज्र से भी कठोर होता है।

—प्रेम सत्य से खुश रहता है, सब सहन करता है, सब मान लेता है, आशामय है, कभी निष्फल नहीं होता।

—जहां प्रेम है वहां परमात्मा है।

—प्रेम का दर्शन हम पिता-पुत्र, भाई-बहन और मित्र-मित्र के बीच करते हैं। किन्तु इसका उपयोग सभी जीवित प्राणियों के बीच होना चाहिए।

—अगर जीवन की विधि मे प्रेम न हो तो जीवन न दिखाई देता। जिन्दगी तो कब्र पर

विजय है ।

—प्रेम उभयपक्षीय शक्ति है—इसका एकपक्षीय प्रयोग नही होता ।

—हमे प्रेम का क्षेत्र घर से गाव-भर मे, गाव से ज़िले-भर मे, जिले से प्रान्त और प्रान्त से देश-भर मे फैलाकर तव उसे सारे विश्व के लिए विस्तृत वना देना चाहिए ।

—उन्मुक्त प्रेम को मैं कुत्तो का प्रेम समझता हू ।...

बुनियादी शिक्षा

—किसी दस्तकारी के जरिए बालक की बुद्धि के विकास की कोशिश करने को बुनियादी शिक्षा कहते हैं ।

—अगर मेरे पास कबीर-जैसे जुलाहे हो तो मैं अवश्य विद्यापीठ की लगाम उनके हाथो सौंप दू ।

—उद्योग की शिक्षा मे बुद्धि की शिक्षा यानी बुद्धि का विकास छिपा ही हुआ है ।

—मैं तो यह भी कहने की धृष्टता करूगा कि उद्योग की शिक्षा के बिना बुद्धि का सच्चा विकास सम्भव है ही नही ।

—शिक्षा का असली मुद्दा ग्रामोद्योग है जिसके द्वारा वच्चे का पूरा-पूरा विकास किया जा सकता है ।

—मेरा विश्वास है कि बुद्धि का सच्चा विकास उस शिक्षा द्वारा होना चाहिए जिसमे शरीर के अगो—हाथ, पाव, आख, कान, नाक आदि का व्यायाम हो ।

—ऐसी शिक्षा बुनियादी शिक्षा-प्रणाली द्वारा ही हो

सकती है जिससे बालक के शरीर, मन और आत्मा का पूरा विकास हो।

—बुनियादी शिक्षा में यह ध्यान में रखना चाहिए कि प्रत्येक दस्तकारी की यांत्रिक क्रिया ही न सिखाकर उसके मूल अर्थात् क्यों और कहां से आरम्भ होने की बात भी समझाई जाए।

—बुनियादी शिक्षा द्वारा देश फिर अपनी पुरानी दस्तकारी का असली प्रशिक्षण प्राप्त कर लेगा।

—प्रारम्भिक शिक्षा में बच्चों को ग्रामोद्योग द्वारा—विशेषकर कताई और बुनाई के साथ शुरू कराना चाहता हूं।

—बुनियादी शिक्षा देश की आवश्यकता पूरी कर सकती है।

—भारत के ८० फीसदी देहातियों का उद्धार करने के लिए उनके बच्चों को बुनियादी तालीम देना लाज़िमी हो जाना चाहिए।

—बुनियादी शिक्षा यदि गांवों में स्थानीय परिस्थिति के अनुसार व्यवस्थित की जाए तो वह न सिर्फ अपने खर्च को निकाल लेगी बल्कि अपने छात्रों को भी भावी जीवन के लिए तैयार कर देगी।

बुद्धि

—जिनमें बुद्धि नहीं उसमें बल नहीं।

—बुद्धि का उपयोग समाज के लिए ही करना

—बुद्धि को सर्वज्ञ मानना उतनी ही मूर्ति-पूजा है जितनी कि ईंट-पत्थर को ही ईश्वर मानकर पूजा करना।

—रचनात्मक काम केवल बुद्धि-बल से नहीं पूरे होते—उनके लिए आत्मिक शक्ति या आध्यात्मिक प्रयत्न की भी ज़रूरत होती है।

—प्रथम हृदय है और फिर बुद्धि। प्रथम सिद्धान्त फिर प्रमाण : प्रथम कर्म फिर बुद्धि। इसीलिए बुद्धि कर्मानुसारिणी कही गई है।

—निरी व्यावहारिक बुद्धि तो सत्य का आवरण है। वह तो हिरण्मय पात्र है जो सत्य के रूप को ढक देता है।

—बहुत विद्वत्ता प्राप्त करने से जिनकी दृष्टि धुंधली और श्रद्धा मन्द न हो गई हो, मैं उनके लिए रामनाम पेश करता हू क्योंकि इस हालत मे अकेली श्रद्धा ही उबारती है।

—जो बातें बुद्धि के परे हैं उन्हीके लिए श्रद्धा का उपयोग है।

—जिसमे शुद्ध श्रद्धा है उसकी बुद्धि तेजस्वी रहती है।

—प्रलोभनो के आगे बेचारी बुद्धि कुछ नही चलती—वहां तो श्रद्धा ही हमारी ढाल बन सकती है।

—बुद्धि और तर्क का मेरा [illegible] है, पर [illegible]

—बुद्धि तीव्र होने पर भी विवेक की अपेक्षा रखती है।

—बुद्धि के बिना मनुष्य अपग के समान है।

—बुद्धि का दुरुपयोग हुआ तो वह संसार में बड़े से बड़ा अनर्थ करने का कारण बन जाती है।

—ससार में बुद्धि-बल बहुत बडा बल है।

ब्रह्मचर्य

—ब्रह्मचर्य का ठीक अर्थ तो ब्रह्म की खोज है ··और यह खोज इन्द्रियों के संपूर्ण संयम के बिना असम्भव है, इसलिए इसका अर्थ है, सब इन्द्रियो का हर समय, हर जगह मन, वचन और कर्म से संयम।

—हमे ब्रह्मचर्य की उस अपूर्ण व्याख्या को बिलकुल भूल जाना पड़ेगा जिसमे ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल जननेन्द्रिय का संयम किया जाता है।

—ब्रह्मचर्य-व्रत-पालन के चार उपाय हैं—पहला है उसकी आवश्यकता को अच्छी तरह समझ लेना, दूसरा है इन्द्रियो को धीरे-धीरे वश में करना, तीसरा है शुद्ध साथी, शुद्ध मित्र और शुद्ध पुस्तकें रखना और चौथा है नित्य नियमपूर्वक रामनाम दिल से लेना और ईश्वर की कृपा की याचना।

—मैं अपने अनुभव से कह सकता हू कि जबान के स्वाद पर कब्जा रखने से इन्द्रियों पर नियन्त्रण हो जाता है।

—मन के विकार में हम मददगार न हों तो आखिर हमारी जीत ही है।

—जो जननेन्द्रिय के विकारो को रोकने की ठान ले, उसे तमाम इन्द्रियो के विकारो पर काबू पा लेना चाहिए।

—ब्रह्मचर्य भी अन्य व्रतो के समान ही सत्य से निकलता है और उसीके वास्ते है।

—अहिंसा का पूरा पालन ब्रह्मचर्य के बिना नामुमकिन है।

—अहिंसा व्रत का पालन करने वाला ब्याह नही कर सकता।

—विवाहित हो ही गए हो तो दोनो—स्त्री-पुरुष—एक-दूसरे को भाई-बहन समझें।

—वीर्य-नाश से शरीर निचोडना बेवकूफी है क्योकि वीर्य का उपयोग शरीर और मन की शक्ति बढाने के लिए है।

—ब्रह्मचर्य का पालन मन, वचन और कर्म से करना चाहिए।

—सभी इन्द्रिय-विकारो का त्याग करने से ही जननेन्द्रिय पर काबू पाया जा सकता है।

—ब्रह्मचर्य का पूरा अर्थ और महत्त्व समझकर ही उसे जीवन मे उतारने का प्रयत्न करना चाहिए।

—ब्रह्मचारी को जीने के लिए ही खाना चाहिए।

—शुद्ध मित्र और उत्तम पुस्तकें ब्रह्मचर्य-पालन मे सहायक होती हैं।

—ब्रह्मचारी आखो का उपयोग देव-दर्शन के लिए करता है और कानो का हरिकथा-श्रवण के लिए, जबकि अब्रह्मचारी भोग-विलास और अश्लीलता देखने और शृगार-रस के गीत

सुनने का प्रेमी होता है।

—ब्रह्मचर्य का अर्थ है मन, वचन और कर्म से सब इन्द्रियों का सयम।

—ब्रह्मचर्य के नियम का पालन ईश्वर में सजीव श्रद्धा के बिना असंभव है।

—ब्रह्मचर्य जीवन की पहली सीढी है। बिना इसको नियमपूर्वक चढे आदमी ऊपर नही पहुच सकता।

—यह सच है कि वीर्य-रक्षा ही ब्रह्मचर्य नही है; पर वीर्य-रक्षा उसका प्रथम चरण अवश्य है।

भाषण

—मैं कथनी की अपेक्षा करनी मे अधिक विश्वास करता हू।

—भाषण सत्य तक ही सीमित हो तो ससार के बहुत-से अनर्थ यो ही रुक जाए।

माता-पिता

—*मैं माता-पिता की भक्ति को धर्म मानता था""बाल्या* वस्था से ही श्रवण मेरा आदर्श था।

—माता-पिता की सेवा पुत्र का प्रथम कर्तव्य है।

—माता-पिता कभी सन्तान का बुरा नही चाहते इस लिए उनके इरादे की कद्र करनी चाहिए।

—माता के समान पूजनीय विभूति ससार मे दूसरी नहीं होती।

—मनुष्य के विकास के लिए जीवन-जितनी ही मृत्यु आवश्यक है।

—तमाम सच्चे और ठोस काम कर्ता को अमर बना देते हैं, क्योंकि वे उसकी मौत के बाद भी जिन्दा रहते हैं।

—मौत किसी तरह टाली नही जा सकती। वह तो हमारा साथी है, मित्र है।

—महान् पुरुष कभी नही मरते। यह आपपर है कि उनके काम को जारी रखकर उन्हे अमर रख।

—मेरा तो यह विश्वास है कि सत्पुरुष के कार्य का सच्चा आरम्भ उसके देहान्त के बाद होता है।

—मुझे आशा है कि मैं खुशी से किसीके भी हाथ मरने को तैयार हू।

—अगर हिन्दू, सिख, मुस्लिम और ईसाई भारत के लिए मृत्यु का आलिंगन करने को तैयार हो जाए तो भारत की कोई हानि नही होगी।

—सच पूछा जाए तो कहना होगा कि मौत ईश्वर की अमर देन है।

—मृत्यु हमें यत्रणा से बचाती है और अभिनव आशाओ का सचार कर निद्रा ही की तरह फिर से शक्ति प्रदान करती है।

—जिन्दगी और मौत एक सिक्के के दो पहलू हैं। बिना कठिनाइयो और उथल पुथल के जीवन किस काम का?

—मृत्यु नवजीवन और पुराने चाले का सन्धि स्थल है।

—मृत्यु के समान निश्चित कोई भी चीज नही है।

—मृत्यु हमारी जीवन-संगिनी तो है ही, वह हमें नव-जीवन का उपहार भी दे जाती है।

—मृत्यु जीवन की जननी है।

—मृत्यु नवजीवन के लिए एक उपहार है।

—वास्तव में मृत्यु एक विभीषिका-मात्र है। उससे कोई भय करना मूर्खता है।

—मृत्यु जीवन की मां है।

यात्रा

—मैं रेलवे में तीसरे दर्जे का सफर इसलिए करता हूं कि उसमें चौथा दर्जा होता ही नहीं।

—बिना तीसरे दर्जे में यात्रा किए कोई इस दर्जे के मुसाफिरों की तकलीफ समझ ही नहीं सकता।

रामनाम

—प्रातःकाल उठते ही रामनाम लेना और कहना कि 'मुझे निर्विकार कर' मनुष्य को अवश्य ही निर्विकार करता है।

—गुस्सा आए तब चुप हो जाए और रामनाम लेकर उसे निकाल दें।

—जब मनुष्य अपने को रजकण से भी छोटा मानता है तब ईश्वर उसको मदद करता है—निर्बल को ही राम बल देता है।

—'राम' शब्द के उच्चारण से लाखों-करोड़ों हिन्दुओं पर फौरन असर होगा। चिरकाल के प्रयोग से और उनके

उपयोग के साथ संयोजित पवित्रता से शब्दों को शक्ति प्राप्त होती है।

—मेरा चिकित्सक राम है और रामनाम मेरी एकमात्र औषध है।

—रामनाम के प्रताप से पत्थर तैरने लगे, रामनाम के बल से वानर-सेना ने रावण के छक्के छुड़ा दिए। हनुमानजी ने पर्वत उठा लिया।

—मेरे पास एक रामनाम के सिवा कोई ताकत नहीं है। वही मेरा एक आसरा है।

—सिर्फ रामनाम रटने से कोई ताकत नहीं मिलती। ताकत पाने के लिए जरूरी यह है कि सोच-समझकर नाम जपा जाए।

—रामनाम से मनुष्य को भीतर और बाहर प्रकाश मिलता है।

—जब तक हृदय चलता है, रामनाम उसमें चलते ही रहना चाहिए।

—जो आदमी नियमित रूप में रामनाम लेता है और शुद्ध जीवन बिताता है उसे कभी बीमार नहीं पड़ना चाहिए।

—मानसिक उद्वेग पर रामनाम वही काम करता है जो आग पर पानी करता है।

—निराधारों के लिए रामनाम सबसे बड़ा आधार है।

रामायण

—आज मैं तुलसीदास की रामायण को भक्ति-मार्ग का

सर्वोत्तम ग्रन्थ मानता हूं ।

—रामचरितमानस विचार-रत्नों का भण्डार है ।

—रामचरितमानस के लिए यह दावा अवश्य है कि उससे लाखों मनुष्यों को शान्ति मिली है ।

—तुलसीदास के चेतनामय 'रामचरितमानस' के अभाव में किसानों का जीवन जड़वत् और शुष्क बन जाता । ··उनकी भाषा में जो प्राणशक्ति है वह दूसरों की भाषा में नही पाई जाती ।

—रामायण और महाभारत कवि-कल्पना से भरे हैं लेकिन उनके रचयिता कोरे कवि न थे, अथवा वे सच्चे कवि याने ऋषि थे । वे शब्दों के चित्रकार नही, मानव-स्वभाव के चित्रकार थे ।

—जैसा आदर्शचरित्र राम का बताया गया है वैसा संसार के किसी भी महाकाव्य में किसी नायक में नही मिलेगा ।

—भारत मे यदि कोई ग्रन्थ झोंपड़ियों से महलों तक में स्थान पा सका है, वह तुलसीकृत रामायण है ।

—मेरी तो रामायण में अतुल श्रद्धा है ।

लड़ाई

—लड़ाई विनाश की जड़ है ।

—किसीको भी लड़ाई का विरोध करने के लिए मरने के लिए तैयार रहना चाहिए ।

—लड़ाई और शस्त्रास्त्र से न तो भारत को मुक्ति ि सकती है, न संसार को ।

—लड़ाई चाहे दो व्यक्तियों के बीच हो या दो गुटों—राष्ट्रों के बीच, वह अपनी तह में बर्बादी छिपाए आगे बढ़ती है।

—युद्ध मानव-जाति का विनाशक है अतः उससे बचने के सभी उपाय काम में लिए जाने चाहिएं।

—लडाई ने बड़े-बड़े राष्ट्रों के नामोनिशान मिटा दिए हैं।

—लड़ाई चाहे घर में हो या बाहर, सर्वत्र सब हालतों में हानिकर है।

—लड़ाई मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु है।

—लड़ाई संसार की सबसे अवांछनीय और घृणित वस्तु है।

—लड़ाई सभी उपद्रवों की जननी है।

विद्यार्थियों से

—विद्यार्थी भविष्य की आशा हैं।

—विद्यार्थियों को दलबन्दी वाली राजनीति में कभी भाग नही लेना चाहिए।

—विद्यार्थी राजनीतिक हडतालें न करें।

—विद्यार्थी अपने अन्दर सेवा-भाव विकसित करें।

—विद्यार्थी खादी का ही इस्तेमाल करें।

—अपने पडोसियों के दु ख-दर्द में विद्यार्थी पहले शामिल हों।

—विद्यार्थी जो कुछ पढ़ें या सीखें उसका सार गांव वालों को समझाना अपना कर्तव्य समझें।

—विद्यार्थी कोई काम लुक-छिपकर न करें।

—विद्यार्थी अपने साथ पढने वाली बहनो के साथ सभ्यता, शिष्टाचार और शालीनता का व्यवहार करें।

—विद्यार्थी यदि अपनी छुट्टी के दिनो मे देहातो मे जाकर लोक-सेवा करे तो उनके लिए इससे अच्छी और कोई बात नही होगी।

—विद्यार्थी अपनी प्राचीन परम्परा के अनुसार ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए विद्याध्ययन करे।

—मौज-शौक से पैसे बहाते हुए विद्यार्थी अपने मा-बाप का भी नुकसान करते हैं और अपना भी।

—विद्यार्थी भोग-विलास मे पडे कि उनका विद्यार्थी-जीवन समाप्त हुआ।

—विद्यार्थी-जीवन मे पान, सिगरेट या शराब की आदत डालना आत्मघात के समान है।

—विद्यार्थी बडो के आदेश से ही कोई काम करें, नही तो अनुभवहीनता के कारण हानि उठाएगे।

—विद्यार्थी किसी न किसी महान् व्यक्ति को अपने जीवन का आदर्श बनाए।

—विद्यार्थी खादी पहनें और स्वदेशी वस्तु का व्यवहार करें।

—विद्यार्थी अपने किसी भी पडोसी की निस्सकोच सेवा करने के लिए तैयार रहे।

—विद्यार्थी को तो आलस्य छू ही नही जाना चाहिए।

—जिस नई बात या ज्ञान का पता विद्यार्थी को चले

—लड़ाई चाहे दो व्यक्तियों के बीच हो या दो गुटों—राष्ट्रों के बीच, वह अपनी तह में बर्बादी छिपाए आगे बढ़ती है।

—युद्ध मानव-जाति का विनाशक है अतः उससे बचने के सभी उपाय काम में लिए जाने चाहिएं।

—लड़ाई ने बड़े-बड़े राष्ट्रों के नामोनिशान मिटा दिए हैं।

—लड़ाई चाहे घर में हो या बाहर, सर्वत्र सब हालतों में हानिकर है।

—लड़ाई मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु है।

—लड़ाई संसार की सबसे अवांछनीय और घृणित वस्तु है।

—लड़ाई सभी उपद्रवों की जननी है।

विद्यार्थियों से

—विद्यार्थी भविष्य की आशा हैं।

—विद्यार्थियों को दलबन्दी वाली राजनीति में कभी भाग नहीं लेना चाहिए।

—विद्यार्थी राजनीतिक हड़तालें न करें।

—विद्यार्थी अपने अन्दर सेवा-भाव विकसित करें।

—विद्यार्थी खादी का ही इस्तेमाल करें।

—अपने पड़ोसियों के दुःख-दर्द में विद्यार्थी पहले शामिल हों।

—विद्यार्थी जो कुछ पढ़े या सीखें उसका सार गांव वालों को समझाना अपना कर्तव्य समझे।

—विद्यार्थी कोई काम लुक-छिपकर न करें।

—विद्यार्थी अपने साथ पढने वाली बहनो के साथ सभ्यता, शिष्टाचार और शालीनता का व्यवहार करें।

—विद्यार्थी यदि अपनी छुट्टी के दिनो में देहातों मे जाकर लोक-सेवा करे तो उनके लिए इससे अच्छी और कोई वात नही होगी।

—विद्यार्थी अपनी प्राचीन परम्परा के अनुसार ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए विद्याध्ययन करें।

—मौज-शौक से पैसे वहाते हुए विद्यार्थी अपने मां-बाप का भी नुकसान करते हैं और अपना भी।

—विद्यार्थी भोग-विलास मे पडे कि उनका विद्यार्थी-जीवन समाप्त हुआ।

—विद्यार्थी-जीवन मे पान, सिगरेट या शराब की आदत डालना आत्मघात के समान है।

—विद्यार्थी वडों के आदेश से ही कोई काम करें, नही तो अनुभवहीनता के कारण हानि उठाएगे।

—विद्यार्थी किसी न किसी महान् व्यक्ति को अपने जीवन का आदर्श बनाएं।

—विद्यार्थी खादी पहने और स्वदेशी वस्तु का व्यवहार करें।

—विद्यार्थी अपने किसी भी पड़ोसी की निस्संकोच सेवा करने के लिए तैयार रहे।

—विद्यार्थी को तो आलस्य छू ही नही जाना चाहिए।

—जिस नई वात या ज्ञान का पता विद्यार्थी को चले

उसे अपनी मातृभाषा में लिख लें और भविष्य में यथासमय और यथावसर उसका उपयोग करें।

विदेशी भाषा

—वास्तविक शिक्षा विदेशी भाषा के माध्यम से हो ही नही सकती क्योंकि शिक्षा वही है जो आपकी अन्तर्निहित शक्तियो का पूर्ण विकास कर सके और यह काम विदेशी भाषा द्वारा होना असम्भव है।

—मेरे मत से वर्तमान शिक्षा-पद्धति दोषपूर्ण हैं। ये दोष तीन प्रकार के हैं जो इस प्रकार हैं :

(क) यह विदेशी संस्कृति पर आधारित है,
(ख) यह हृद्गत और हस्तगत संस्कारों की उपेक्षा करती है, और
(ग) यह विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाती है।

—विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा हो भी तो वह अस्वाभाविक है—वह विद्यार्थी के अन्तरतम को नही छू पाती।

—विदेशी भाषा का विद्यार्थी होना बुरा नही—पर अपनी भाषा सर्वोपरि है।

विदेशियों से

—विदेशियों से मैं यही कहूंगा कि वे किसी भी पराए देश में दूध में शक्कर की तरह घुल-मिलकर रहने से ही अपने को वहां कायम रख सकते हैं।

—अमेरिका धन को उसके स्थान से हटाकर ईश्वर के लिए थोड़ी जगह खाली करे। मेरा खयाल है कि अमेरिका का भविष्य उज्ज्वल है। लेकिन अगर वह धन की ही पूजा करता रहा तो उसका भविष्य अन्धकारमय है, फिर लोग चाहे जो कहे। धन आखिर तक किसीका सगा नही रहा। वह हमेशा बेवफा दोस्त साबित हुआ है।

—विदेशी भारत मे शौक से रहे, पर उसकी राष्ट्रीयता की कद्र करते हुए।

—सारी वसुधा को कुटुम्ब मानने वाला भारत विदेशी के प्रति विद्वेष नही रख सकता।

विश्वास

—अपना विश्वास कभी न खोओ। उसे प्रज्ज्वलित रखो।

—जो लोग भगवान् मे विश्वास नही रखते वे अहिंसा का सहारा नही ले सकते।

—जितनी भी ज्ञात और अज्ञात शक्तियां हैं उनमे भगवान् की शक्ति ऐसी है जिसमे विश्वास किए विना अहिंसा बेकार चीज़ हो जाती है।

—विश्वास से पहाड़ भी हिल सकते हैं।

—विश्वास का विकास किया जा सकता है; किन्तु इसका विकास हिंसा से भिन्न होता है। हिंसा का विकास प्रार्थना के द्वारा नही हो सकता जबकि विश्वास का विकास प्रार्थना के सिवा और किसी ढग से हो ही नही सकता।

—बिना विश्वास का आदमी उस बूद के समान है जो

समुद्र से दूर हो चुकी है और जिसका नष्ट होना निश्चित है।

—विश्वास के बिना ससार का कोई व्यवहार और व्यापार नही चल सकता।

—विश्वास चाहे व्यक्तियो मे हो या शक्ति मे, दृढ होना चाहिए—तभी वह फलदायक सिद्ध हो सकता है।

व्यापार

—व्यापार किसी भी देश की समृद्धि का कारण होता है।

—व्यापार मे लक्ष्मी का वास होता है।

—व्यापार के बिना कोई देश उन्नत नही हो सकता।

—व्यापार के विषय मे हमे ब्रिटेन के लोगो का अनुसरण करना चाहिए। उनकी *व्यापारिक ईमानदारी सारी* दुनिया मे मशहूर है।

—सत्य अगर व्यापार मे नही चलता तो चलता कहा है ?

—सच्चे मानो मे व्यापार वही है जिससे देश के उत्पादको को लाभ हो।

—व्यापार वही उचित और वाछनीय है जिसमे नैतिकता और विवेक का हनन न हो, और न हो गरीब और असहाय लोगो का शोषण।

—जीवन की जितनी विधिया हैं उनमे व्यापार एक उत्तम विधि है, पर उसे मनुष्य ने अपनी मनमानी करके दूषित कर दिया है।

—व्यापार सच्चा हुआ तो देर में सही, अपनी साख जमा ही लेता है।

—व्यापार एक ऐसा सम्मानपूर्ण पेशा है कि उसमें औचित्य और खरापन कायम रखते हुए कोई भी अपनी प्रतिष्ठा नही गवा सकता।

—व्यापारी को सबसे बडी सुविधा यह मिलती है कि उसे विनम्र होने का प्रशिक्षण अपने-आप मिल जाता है।

व्रत और संयम

—कोई भी प्रतिज्ञा करना या व्रत लेना बलवान् का काम है; निर्बल का नही।

—व्रत मे अपारशक्ति होती है क्योकि उसके पीछे मनोवैज्ञानिक दृढता होती है।

—सयम के बिना व्रत असम्भव है, इसलिए पहले सामान्य संयम का पालन करना सीख लेने पर ही व्रत लेने और उसे पूरा करने का बल मिलता है।

—दुर्बल मन का मनुष्य सयम-पालन नही कर पाता; पर जिसके मन मे लगन हो वह अभ्यास से सयम-पालन सीख सकता है।

—एकादश-व्रत का पालन कठिन है, पर जो इसका अभ्यास और प्रयत्न न करे वह आगे का कोई बडा काम नही कर सकता।

—सब सयमो का मूल जिह्वा (जबान) और नाली (जननेन्द्रिय) के नियत्रण मे बसता है।

—आदर्श विवाह के लिए प्रेम होना जरूरी है, पर वह तो अन्त मे विचारणीय है। उसके पहले इस बात की शर्त पूरी होनी चाहिए कि (१) लडकी-लडके मे पारस्परिक आकर्षण हो, (२) दोनो ऐन्द्रिक दृष्टि से समर्थ हो, (३) दोनो के परिजनो की स्वीकृति हो, और (४) दोनों का आध्यात्मिक विकास हो चुका हो।

—जो देश-सेवा के लिए पहले ब्रह्मचर्य-व्रत रखता है और बाद मे गिरता है—विवाह करता है—उससे तो ऐसा व्रत न लेने वाला ही अच्छा होता है।

—विवाह की उपेक्षा नही करनी चाहिए—उसे जीवन मे उचित स्थान देना चाहिए।

—विवाह एक ऐसा बन्धन है जिससे बच जाना वर्तमान भारत की सेवा करना है क्योकि देश को प्रजोत्पत्ति की आवश्यकता नही है और इसके अतिरिक्त विवाह किसी अन्य ध्येय से करना ही नही चाहिए।

—विवाह दो व्यक्तियो का आध्यात्मिक और शारीरिक दोनो ही मिलन है, पर इन दोनो ही सामजस्यों मे अनुपात का ध्यान कभी नही छोड़ना चाहिए।

—विवाह का आदर्श शरीर के द्वारा आध्यात्मिक मिलन है।

—विवाह वह मानवी प्रेम है जिसे दैवी प्रेम का सोपान कह सकते हैं।

—विवाह की जिम्मेदारियों से भागना कायर का काम है।

व्यायाम

—व्यायाम भी शरीर के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि हवा, पानी और भोजन।

—तमाम शारीरिक तथा मानसिक कार्य व्यायाम ही में सम्मिलित हैं।

—व्यायाम के बिना दिमाग भी वैसे ही कमज़ोर पड जाता है जैसे शरीर।

—पुष्ट दिमाग का पुष्ट शरीर में होना ही नीरोगता है।

—यदि हम प्राकृतिक नियमो को भंग करते हैं तो अवश्य ही उसके कारण हमें स्वास्थ्य-सम्बन्धी कुछ क्षति उठानी पडती है।

—शारीरिक और मानसिक दोनों व्यायाम सीमा के अन्दर ही रहकर करने चाहिए।

—फुलवाड़ी लगाना और अच्छी तरह टहलना भी अच्छे व्यायाम हैं।

—व्यायाम के लिए हम लोगों की इच्छा उतनी प्रबल होनी चाहिए कि किसी भी अवस्था मे हतोत्साह न हो।

—व्यायाम शारीरिक स्वास्थ्य की कुंजी है।

—व्यायाम बलाबल के अनुसार करना चाहिए। अधेड़ों और वृद्धो के लिए प्रतिदिन और कुछ नही तो टहलने का व्यायाम तो करना ही चाहिए।

—जो नवयुवक व्यायाम मे अधिक रम जाता है वह स्वस्थ और सच्चरित्र बन जाता है।

शराबबन्दी

—क्या हमारे लिए यह शर्म की बात नही है कि हमारे बच्चे उस आमदनी के द्वारा शिक्षा ग्रहण करें जो शराब की बिक्री से होती हो ?

—अगर मुझे एक घटे के लिए भारत का तानाशाह बना दिया जाए तो पहला काम मैं यह करूगा कि तमाम शराबखानों को मुआवजा दिए बिना ही बन्द करा दूगा।

—मैं चोरी से शराबखोरी को ज्यादा बडा गुनाह समझता हू।

—शराब की आदत को एक बीमारी मानना चाहिए और उसी रूप मे उसका इलाज भी करना चाहिए।

—शराबखोरी के विरुद्ध राष्ट्र के लिए एक प्रकार की प्रौढ शिक्षा की व्यवस्था करना है।

—शराब पर ही नही, सभी प्रकार की नशीली वस्तुओ के सेवन पर निषेध होना चाहिए।

—स्थानीय स्वेच्छा पर छोड देने पर मद्य निषेध सफल नही हो सकता।

—शराब शरीर और आत्मा दोनो का नाश कर देती है।

—शराब पीना मनुष्य का सबसे बडा दुर्गुण है क्योकि इससे और अनेक दुर्गुण उत्पन्न हो जाते हैं।

—शराब से बढकर मनुष्य का नाश करने वाली कोई पेय वस्तु नही हो सकती।

—शराब की आदत परिवारघातिनी है।

—जिसे हम सही और शुभ मानें वही करने मे हमारा सुख है, हमारी शाति है ।

—मनुष्य की शाति की कसौटी समाज मे ही हो सकती है, हिमालय की चोटी पर नही ।

—जिसे विकार-मात्र का त्याग करना है उसे शाति की आवश्यकता है ।

—शाति तभी मिल सकती है जब मनुष्य का अपनी वृत्तियो पर नियत्रण हो ।

—ससार की उथल पुथल और झझावात मे रहते हुए भी जो मनुष्य अपनी मानसिक शाति कायम रख सके, वही सच्चा पुरुष है ।

—शाति मानव-जीवन के लिए एक परम पावन और वाछनीय निधि है ।

—शाति के खोजी को अपने भीतर नजर डालनी चाहिए ।

—अपनी आवश्यकताए कम करके आप वास्तविक शाति प्राप्त कर सकते हैं ।

शास्त्र-मर्यादा

—तर्क और सत्य का उल्लघन शास्त्र भी नही कर सकते । शास्त्रो का उपयोग तर्क के शुद्ध करने और सत्य को चमकाने के लिए होता है ।

—गलती का समर्थन शास्त्र से होता हो तो उसे मान्य नही कर सकते ।

—प्रचार द्वारा झूठ को सत्य नही बनाया जा सकता और न सत्य को झूठ।

—शास्त्र का मुख से उच्चारण-मात्र कुछ नही है। उस-पर अमल करना लाभप्रद है।

—हर अच्छी चीज की तरह शास्त्रो को भी अपनी मर्यादा होती है।

—हर विद्यार्थी को विज्ञान की तरह शास्त्रो की शिक्षा भी मिलनी चाहिए।

शिक्षा

—शिक्षा मात्र आत्मोन्नति के लिए होती है।

—हर देश की पूरी शिक्षा उसे तरक्की की तरफ ले जाने वाली होनी चाहिए।

—किसी भी काम मे पूर्ण बनने के लिए लगातार अभ्यास की ज़रूरत है—शिक्षा मे भी।

—शिक्षा एक योग है।

—ग्राम-स्वराज्य के लिए बुनियादी अन्तिम शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।

—बालिग मताधिकार के साथ-साथ व्यापक शिक्षा का होना जरूरी है। अग्रेज़ी शिक्षा ने हमारे मस्तिष्क को भूखो मार दिया है और इसके ज़रिए हम कभी वीर नागरिकता के लिए तैयार नही हो सके।

—शिक्षा सस्थाओ का ध्येय 'सा विद्या या विमुक्तये' (विद्या वही है जो विमुक्त करे) होना चाहिए।

—जिसे हम सही और शुभ मानें वही करने मे हमारा सुख है, हमारी शाति है ।

—मनुष्य की शाति की कसौटी समाज मे ही हो सकती है, हिमालय की चोटी पर नही ।

—जिसे विकार-मात्र का त्याग करना है उसे शाति की आवश्यकता है ।

—शाति तभी मिल सकती है जब मनुष्य का अपनी वृत्तियो पर नियत्रण हो ।

—ससार की उथल पुथल और झझावात मे रहते हुए भी जो मनुष्य अपनी मानसिक शाति कायम रख सके, वही सच्चा पुरुष है ।

—शाति मानव-जीवन के लिए एक परम पावन और वाछनीय निधि है ।

—शाति के खोजी को अपने भीतर नजर डालनी चाहिए ।

—अपनी आवश्यकताए कम करके आप वास्तविक शाति प्राप्त कर सकते हैं ।

शास्त्र-मर्यादा

—तर्क और सत्य का उल्लघन शास्त्र भी नही कर सकते । शास्त्रो का उपयोग तर्क के शुद्ध करने और सत्य को चमकाने के लिए होता है ।

—गलती का समर्थन शास्त्र से होता हो तो उसे मान्य नही कर सकते ।

—प्रचार द्वारा झूठ को सत्य नही बनाया जा सकता और न सत्य को झूठ।

—शास्त्र का मुख से उच्चारण-मात्र कुछ नही है। उस-पर अमल करना लाभप्रद है।

—हर अच्छी चीज़ की तरह शास्त्रो को भी अपनी मर्यादा होती है।

—हर विद्यार्थी को विज्ञान की तरह शास्त्रो की शिक्षा भी मिलनी चाहिए।

शिक्षा

—शिक्षा मात्र आत्मोन्नति के लिए होती है।

—हर देश की पूरी शिक्षा उसे तरक्की की तरफ ले जाने वाली होनी चाहिए।

—किसी भी काम में पूर्ण बनने के लिए लगातार अभ्यास की जरूरत है—शिक्षा में भी।

—शिक्षा एक योग है।

—ग्राम-स्वराज्य के लिए बुनियादी अन्तिम शिक्षा अनि-वार्य होनी चाहिए।

—बालिग मताधिकार के साथ-साथ व्यापक शिक्षा का होना जरूरी है। अग्रेजी शिक्षा ने हमारे मस्तिष्क को भूखों मार दिया है और इसके ज़रिए हम कभी वीर नागरिकता के लिए तैयार नही हो सके।

—शिक्षा-संस्थाओं का ध्येय 'सा विद्या या विमुक्तये' (विद्या वही है जो विमुक्त करे) होना चाहिए।

—शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से ही सर्वोत्तम ढंग से हो सकती है।

—जिस शिक्षा या विद्या से त्रिविध—आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है वही वास्तविक शिक्षा या विद्या है।

—ज्ञान चारित्र्य के लिए दिया जाना चाहिए। ज्ञान साधन है चारित्र्य साध्य।

—शिक्षा का विषय है चरित्र गढना।

—शिक्षा का उद्देश्य है विद्यार्थी को मनुष्य बनाना।

—संगीत के बिना तो सारी शिक्षा अधूरी ही लगती है।

—मैं हरएक बालक को अक्षरकला सिखलाने के पहले चित्रकला सिखलाने का लोभ रखता हूं।

—बालकों की शिक्षा स्वाश्रयी और सस्ती बनाई जा सकती है।

—शिक्षा का असली मुद्दा कोई न कोई ग्रामोद्योग है जिसके द्वारा बच्चे का पूरा-पूरा विकास किया जा सकता है।

—अच्छा शिक्षक अंकगणित-जैसी वस्तु को भी मनोरंजक बना सकता है।

—शिक्षक कभी भी विद्यार्थी को शारीरिक दण्ड न दे।

—विद्यार्थियों के साथ तन्मय होकर ही उन्हे उत्तम शिक्षा दी जा सकती है।

—शिक्षा के बिना मानव-मस्तिष्क का विकास नही हो सकता।

—आजादी के चालीस साल बाद मैं नौजवानों को

तालीम हासिल करने के लिए विदेश भेजने की सलाह दूगा ।

—मैं फिर कहूगा कि कच्ची उम्र के विद्यार्थियो को शिक्षा के लिए विदेश नही भेजना चाहिए ।

—सत्रह साल का लडका विलायत जाकर वहा घबरा जाता है । यह मैं अपने ऊपर से अनुभव करके कह रहा हूं ।

—शिक्षा ऊचा गुण है, पर चरित्र से ऊचा नही ।

श्रद्धा

—धर्म के मूल मे श्रद्धा रही है । जहा श्रद्धा नही वहा धर्म नही ।

—श्रद्धा और विश्वास न रहे तो क्षण-भर मे प्रलय हो जाए ।

—जहा श्रद्धा है वहा पराजय नहीं । श्रद्धालु का अकर्म भी कर्म हो जाता है ।

—ईश्वर के लिए श्रद्धा के साथ लगातार कोशिश करने पर श्रद्धा बढती है ।

—जिनमें श्रद्धा होती है उनके कन्धो से सभी चिन्ताओ का भार उतर जाता है ।

—हमे जिस बात की आवश्यकता है वह है—अपरिमित श्रद्धा और उसे अनुप्राणित करने वाला निष्कलक चरित्र ।

—श्रद्धाहीन कार्य अतल खाई की थाह लेने का प्रयत्न करने की तरह है ।

—श्रद्धा का अर्थ है आत्म-विश्वास, और आत्म-विश्वास का अर्थ है ईश्वर पर विश्वास ।

—काशी विश्वनाथ की मूर्ति मौलाना हसरत मोहानी के नज़दीक एक पत्थर का टुकडा है, पर मेरे लिए वह ईश्वर की प्रतिमा है। मेरा हृदय उसका दर्शन करके द्रवित होता है। यह श्रद्धा की बात है।

—श्रद्धा वह वस्तु है जिसकी केवल आशा की जाती है, उन वस्तुओ का प्रमाण है जो देखी नही जा सकती।

—मेरी श्रद्धा तो ज्ञानमयी और विवेकपूर्ण है। जो बुद्धि का विषय है वह श्रद्धा का विषय कदापि नही हो सकता। इसलिए अन्ध-श्रद्धा, श्रद्धा ही नही।

—जहा बडे-बडे बुद्धिमानो की बुद्धि काम नही करती, वहा एक श्रद्धावान् की श्रद्धा काम कर जाती है।

—श्रद्धा की कसौटी यह है कि अपना फर्ज अदा करने के बाद जो कुछ भी भला या बुरा नतीजा हो, इन्सान उसे मान ले।

—जो श्रद्धा अनुभव की अपेक्षा नही रखती वह सच्ची श्रद्धा है।

—मैं त्रिकालदर्शी नही हू, न देवता हू। मैं श्रद्धावान् हू और ईश्वर को सर्वशक्तिमान् मानता हू।

—श्रद्धा के बिना ज्ञान लगडा ही रहता है।

—श्रद्धा के अभाव मे मनोकामना की पूर्ति कठिनाई से हो सकती है।

—श्रद्धावान् वही है जो विपत्तियो से घिर जाने पर भी डिगे नहीं।

श्रमजीवी

—मैंने अहमदावाद के मिल-मज़दूरो को इस शर्त पर हडताल करने का आदेश दिया था .

१ वे हिंसा पर उतारू न हो,
२ जो उनका अनुसरण न करें, उन्हे मारें-पीटें कदापि नही,
३ किसी के दान पर निर्भर न करें, और
४ हडताल जितने दिन भी चालू रहे, दृढ वने रहे।

—श्रमजीवी को यदि अपनी मेहनत का उचित प्रतिफल मिलता हो तो किसीके वहकावे मे आकर उसे हडताल नही करनी चाहिए ।

—श्रमजीवियो को भी उसी तरह जीवन-यापन का अधिकार होना चाहिए जिस प्रकार आज पढे-लिखो को है, और उनके लिए अनुकूल अवसरो का निर्माण होना चाहिए।

—श्रमजीवी चाहे मजदूर हो या किसान, समान रूप से सहानुभूति और प्राथमिकता का अधिकारी है ।

सत्य

—यदि सम्पूर्ण सत्य का पालन किया जाए तो क्या नही हो सकता !

—सत्य ईश्वर है ।

—सत्य के विना जिन्दगी का कोई सिद्धान्त या नियम नही चल सकता ।

—सत्य की खोज करने वाले मे अभय या निर्भयता का

—काशी विश्वनाथ की मूर्ति मौलाना हसन
के नजदीक एक पत्थर का टुकडा है, प
ईश्वर की प्रतिमा है। मेरा हृदय उसका द
होता है। यह श्रद्धा की बात है।

—श्रद्धा वह वस्तु है जिसको केवल आग
उन वस्तुओ का प्रमाण है जो देखी नही जा

—मेरी श्रद्धा तो ज्ञानमयी और विवेकपूण
का विषय है वह श्रद्धा का विषय कदापि नही
इसलिए अन्ध-श्रद्धा, श्रद्धा ही नही।

—जहा बडे-बडे बुद्धिमानो की बुद्धि काम न
वहा एक श्रद्धावान् की श्रद्धा काम कर जाती है।

—श्रद्धा की कसौटी यह है कि अपना फर्ज अ
के बाद जो कुछ भी भला या बुरा नतीजा हो, इ
मान ले।

—जो श्रद्धा अनुभव की अपेक्षा नही रखती वह
श्रद्धा है।

—मैं त्रिकालदर्शी नही हू, न देवता हू। मैं श्रद्धा
और ईश्वर को सर्वशक्तिमान् मानता हू।

—श्रद्धा के बिना ज्ञान लगडा ही रहता है।

—श्रद्धा के अभाव मे मनोकामना की पूर्ति कठि
हो सकती है।

—श्रद्धावान् वही है जो विपत्तियो से घिर
डिगे नही।

—पृथ्वी सत्य पर टिकी हुई है।

—मेरा यह विश्वास दिन-दिन बढ़ता जाता है कि सृष्टि में एक-मात्र सत्य की ही सत्ता है और उसके सिवा दूसरा कोई नहीं है।

—सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसकी ज्यों-ज्यों सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें अनेक फल आते हुए दिखाई देते हैं।

—अहिंसा को जितना मैं पहचान सका हूं उसकी बनिस्बत सत्य को अधिक पहचान सका हूं, ऐसा मेरा खयाल है।

—सत्य के पालन में ही शान्ति है।

—जहा सत्य नही है वहां शुद्ध ज्ञान नही हो सकता।

—सत्य की आराधना भक्ति है। यह मरकर जीने का मत है।

—सत्य साध्य है, अहिंसा साधन है।

—सत्य ही एक धर्म की सच्ची प्रतिष्ठा है।

—सत्य के सिवा और किसी चीज की हस्ती है ही नही।

—जो सत्य जानता है; मन से, वचन से और काया से सत्य का आचरण करता है, वह परमेश्वर को पहचानता है।

—सत्य सर्वदा स्वावलम्बी होता है और वल तो उसके स्वभाव में ही होता है।

—सत्य ही धर्म की सच्ची प्रतिष्ठा है।

—केवल सत्य ही मिथ्या की प्यास बुझाता है, जैसे प्रेम क्रोध को शान्त करता है।

—सत्य गोपनीयता से घृणा करता है।

—सत्य अगर सभी क्षेत्रो और सभी व्यवहारो मे नही चलता तो फिर वह कौडी का नही है।

—सत्य न होता तो यह जगत् भी न होता।

—कभी-कभी असत्य के व्यवहार से हानि होते न देख लोग कह बैठते हैं—सत्य की विजय मे देर होती है। पर मैं कह सकता हू कि देर भले हो, अन्धेर नही होता। असत्य की विजय तो कभी नही होती।

—अपने-आपको जान लेना सत्य को पहचानना है।

—सत्य की कोई सीमा नही होती।

सत्याग्रह

—सत्याग्रह या सविनय अवज्ञा के नियम इस प्रकार हैं

१ स्थानीय शिकायतें दूर करने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है।

२ स्थानीय चेतनता जागरित करने के लिए किसी खास बुराई के विरुद्ध या आत्म-बलिदान के रूप मे सत्याग्रह किया जा सकता है जैसा कि मैंने चम्पारन मे किया था।

३ रचनात्मक कार्य की पूर्ति के लिए वह १९४१ की तरह भी किया जा सकता है। हालाकि वह सत्याग्रह हमारी आजादी की लडाई का एक अग था, परन्तु उसे भाषण-स्वातन्त्र्य तक ही सीमित रखा गया था।

—सत्याग्रही मे सत्य का आग्रह—सत्य का बल होना

चाहिए।

—सत्याग्रह सत्ता प्राप्त करने के लिए नही, सत्ता को शुद्ध करने और उसका सदुपयोग कराने के लिए होता है।

—सत्याग्रही सबका मित्र होता है, शत्रु किसीका नहीं होता। सफल सत्याग्रह की यह पहली शर्त है।

—साधना-भाव में बुद्धि के थक जाने पर अपने शरीर को त्याग देने का अन्तिम कदम उठाना सत्याग्रह का नियम है।

—सत्याग्रह की जड मनुष्य-स्वभाव पर विश्वास रखने मे है।

—हार गए तो हार मानने मे सत्याग्रही को शर्म न होनी चाहिए।

—शक्ति और अधिकार छीनने के लिए जो सत्याग्रह किया जाए वह सत्याग्रह नही, दुराग्रह है।

—सत्याग्रह एक ऐसी तलवार है जिसकी सब ओर धार है। उसे जैसे चाहो वैसे काम मे लाया जा सकता है।

—मेरे लिए सत्याग्रह का नियम, प्रेम का नियम एक शाश्वत नियम है।

—सत्याग्रह का यह अर्थ लिया गया है कि विरोधी को पीडा देकर नहीं, बल्कि स्वय कष्ट उठाकर सत्य की रक्षा करना।...

—सत्याग्रह कभी व्यर्थ जाता ही नही।

—सर्वसाधारण को सत्याग्रह मुख्यत सविनय अवज्ञा या सविनय प्रतिरोध मालूम पडता है। यह सविनय (सिविल) इस अर्थ मे है कि यह अपराधमूलक (क्रिमिनल) नहीं है।

—सत्य अगर सभी क्षेत्रों और सभी व्यवहा
चलता तो फिर वह कौडी का नही है ।

—सत्य न होता तो यह जगत् भी न होता।

—कभी-कभी असत्य के व्यवहार से हानि हो
लोग कह बैठते हैं—सत्य की विजय मे देर होती है ।
कह सकता हू कि देर भले हो, अन्धेर नही होता ।
की विजय तो कभी नही होती ।

—अपने-आपको जान लेना सत्य को पहचानना

—सत्य की कोई सीमा नही होती ।

सत्याग्रह

—सत्याग्रह या सविनय अवज्ञा के नियम इस प्रकार हैं :

१. स्थानीय शिकायतें दूर करने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है ।

२ स्थानीय चेतनता जागरित करने के लिए किसी खास बुराई के विरुद्ध या आत्म-बलिदान के रूप मे सत्याग्रह किया जा सकता है जैसा कि मैंने चम्पारन मे किया था ।

३ रचनात्मक कार्य की पूर्ति के लिए वह १९४१ की तरह भी किया जा सकता है । हालांकि वह सत्याग्रह हमारी आजादी की लडाई का एक अग था ; परन्तु उसे भाषण-स्वातन्त्र्य तक ही सीमित रखा गया था ।

—सत्याग्रही मे सत्य का आग्रह—सत्य का बल होना

चाहिए।

—सत्याग्रह सत्ता प्राप्त करने के लिए नहीं, सत्ता का शुद्ध करने और उसका सदुपयोग कराने के लिए होता है।

—सत्याग्रही सबका मित्र होता है, शत्रु किसीका नहीं होता। सफल सत्याग्रह की यह पहली शर्त है।

—साधना-भाव में बुद्धि के थक जाने पर अपने शरीर को त्याग देने का अन्तिम कदम उठाना सत्याग्रह का नियम है।

—सत्याग्रह की जड मनुष्य-स्वभाव पर विश्वास रखने मे है।

—हार गए तो हार मानने में सत्याग्रही को शर्म न होनी चाहिए।

—शक्ति और अधिकार छीनने के लिए जो सत्याग्रह किया जाए वह सत्याग्रह नही, दुराग्रह है।

—सत्याग्रह एक ऐसी तलवार है जिसकी सब ओर धार है। उसे जैसे चाहो वैसे काम मे लाया जा सकता है।

—मेरे लिए सत्याग्रह का नियम, प्रेम का नियम एक शाश्वत नियम है।

—सत्याग्रह का यह अर्थ लिया गया है कि विरोधी को पीड़ा देकर नही, बल्कि स्वय कष्ट उठाकर सत्य की रक्षा करना।...

—सत्याग्रह कभी व्यर्थ जाता ही नही।

—सर्वसाधारण को सत्याग्रह मुख्यत सविनय अवज्ञा या सविनय प्रतिरोध मालूम पड़ता है। यह सविनय (सिविल) इस अर्थ मे है कि यह अपराधमूलक (क्रिमिनल) नही है।

—एव पूर्ण सत्याग्रही को, यदि पूर्णत नही तो लगभग एक पूण मनुष्य होना चाहिए ।

—सत्याग्रह अर्थात सत्य का आग्रह एक कसौटी है । जगत मे किसी राष्ट्र ने आज तक केवल सत्य का दावा करके स्वतनता नही प्राप्त की हे ।

—सत्याग्रह की यही खूबी है कि वह खुद हमारे पास चला आता है—हमे उसे खोजने नही जाना पडता । यह गुण इसके सिद्धान्त मे समाया हुआ है।

—सत्याग्रही हमेशा वलवान होता है, उसम भीरुता की गन्ध तक नही आती ।

—निर्भयता के हिसाव से सत्याग्रही की नम्रता भी वढनी चाहिए । विवेक शून्य की निर्भयता उसे घमण्डी और उद्दण्ड वनाती है । गव और सत्याग्रह के वीच तो समुद्र लहराता है ।

—सत्याग्रही के लिए अविनयी होना तो दूव मे जहर के समान है ।

—विनय सत्याग्रह का सवसे कठिन अश है ।

—सत्याग्रह तो वल प्रयोग के सर्वथा विपरीत होता है। हिंसा के सम्पूर्ण त्याग मे ही सत्याग्रह की कल्पना की गई है।

—यह याद रखना चाहिए वि सत्याग्रह अगर ससार की सवसे वडी ताक्त है तो इसके लिए दिल मे क्रोध और दुर्भाव रखे वगैर अधिक से अधिक कष्ट-सहन की क्षमता भी आवश्यक है ।

—सत्याग्रह करने के पहले मनुष्य को वहुत-सी तैयारियाँ

करनी पडती हैं जिन्हें पहले समझकर ही आगे बढना चाहिए।

—मेरा विश्वास है कि सत्याग्रह विश्व-शक्ति बन जाएगा।

—मैंने बहुत प्रयोग के बाद जिन दो अस्त्रो को प्राप्त किया है, वे हैं सत्याग्रह और असहयोग।

सफाई

—भगवान् के बाद सफाई ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

—विशुद्ध विचारो की ही कल्पना करो, गन्दे विचारो को पास न फटकने दो।

—दिन-रात शुद्ध, खुली हवा मे सास लो।

—स्वच्छ भोजन और वह भी सिर्फ जीने के लिए करो।

—अपना शरीर, भोजन और पानी ही नही; आसपास के स्थानो को भी सदा साफ रखो।

—सफाई देखकर ही मन प्रसन्न और आत्मा प्रफुल्लित हो उठती है।

—जिसमे सफाई नही उसकी सगत कोई पसन्द नही कर सकता।

—सफाई ससार मे अजीब चीज है।

—सफाई सस्कार का प्रतिपादन करती है।

—जो व्यक्ति स्वच्छता से अपना काम सम्पन्न करता है उसकी ओर सभी आकर्षित होते हैं।

—सफाई सस्कृत मनुष्य की सुरुचि का परिचायक इसका प्रशिक्षण मनुष्य-मात्र को मिलना चाहिए।

—मेरे खयाल मे हिन्दुस्तान की और सारे ससार की अर्थ-व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसम विना खाने और कपडे के कोई भी रहने न पाए ।

—जनता की आर्थिक स्थिति मे समानता पैदा की जाए ।

—आर्थिक समानता अहिंसक स्वतनता की गुरुकुजी है।

—हर स्त्री या पुरुप को उसकी जरूरत की रकम मिलनी ही चाहिए ।

—'सबै भूमि गोपाल की' के अनुसार सब सम्पत्ति प्रजा की है ।

—हरएक उद्यमी मनुष्य को आजीविका कमाने का अधिकार है, मगर धनोपार्जन का अधिकार किसीको नही ।

—सच कहे तो धनोपार्जन स्तेय (चोरी) है । जो आजीविका से अधिक धन लेता है, वह जान मे हो या अनजान मे, दूसरो की आजीविका छीनता है ।

—जो भूखे और बेकार हैं उन्हे भगवान् सिर्फ एक ही विभूति के रूप मे दर्शन देने की हिम्मत कर सकता है और वह विभूति है काम और अन्न के रूप मे वेतन का आश्वासन ।

—नगो को जिनकी जरूरत नही है ऐसे कपडे देकर मैं उनका अपमान नही करना चाहता ।

—मेरे समाजवाद का अर्थ है—सर्वोदय ।

—व्यक्ति जब तक हिंसात्मक तरीका न ग्रहण करे, तब तक पूजी जमा होना सम्भव नही है ।

–हमारे यहा तो प्राचीन काल से ही सर्वोदय का

आदर्श—'सबै भूमि गोपाल की' के अनुसार मौजूद था।

—सर्वोदय की भावना समय आने पर सारे ससार मे छा जाएगी।

—सर्वोदय मानवता के चरम विकास का मूलमन्त्र है। इसकी उपलब्धि मनुष्य-मात्र का ध्येय होना चाहिए।

साधुओं से

—भारत के पचपन लाख साधु इस देश के लिए बेकार और कलंक हैं।

—साधु भी देश की सेवा वैसे ही कर सकते हैं जैसे गृहस्थ।

—साधु मे यदि आध्यात्मिक निधि नही है तो वह मानवता का कलक है।

—साधु लोग यदि अपने आलस्य को दूर कर मठो, धर्मस्थानो मे लगा धन सार्वजनिक सेवा मे खर्च करें तो उनके विरुद्ध शिक्षितो मे जो भावना है वह अविलम्ब दूर हो सकती है।

—यदि लाखों साधु जनता के सेवक बन जाए तो देश के रचनात्मक निर्माण के लिए इतनी बडी फौज सहज ही प्राप्त हो सकती है।

—भारत के साधु यदि नशेबाजी और दुर्व्यसनो का त्याग कर देश के रचनात्मक कामो मे लग जाए तो वे जनता को अपने पक्ष मे कर सकते हैं।

—साधुओ से तो मैं इतना ही कहना चाहता हू कि अपने धर्म, सस्कृति और देश के नाम को न डुबने दें।

—सगीत आरम्भिक पाठशाला के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए, इसका मैं समर्थन करता हू ।

—सगीत मे हाथ के प्रशिक्षण की अपेक्षा स्वर-सामंजस्य पर अधिक जोर देना चाहिए ।

—मैं तो व्वाय स्काउट सेवा समिति सगठन में भी राष्ट्रीय गान को अनिवार्य विपय बना देने के पक्ष मे हूं ।

—मुझे सगीत का ज्ञान तो नही, पर उससे प्रेम वहुत है। कभी-कभी मैं उसमें अपने-आपको डुवा लेता हूं ।

—भारत मे भक्ति ने सगीत को और संगीत ने भक्ति को वहुत आगे वढाया है ।

—सगीत पहले धर्म-शिक्षा का एक अंग था, अब दुर्भाग्य-वश वह श्रृगार-रस का वाहक वनता जा रहा है ।

सेवा

—त्याग के लिए त्याग करना मुश्किल होता है; परन्तु सेवा के निमित्त आसान हो जाता है ।

—दृश्य ईश्वर क्या है ?—गरीवी की सेवा ।

—हम रोज के व्यवहार को शुद्धतम रखे तो सच्चे सेवक वनने की आशा रख सकते हैं ।

—जो सेवा पाता है उसे सेवक का ध्यान रखना चाहिए; न रखना अपने कर्तव्य से चूकना है ।

—प्राणि-मात्र मे जो दु:खी हैं उनकी सेवा भगवद्भक्ति है ।

—अपग की सेवा एक धर्म है। भगवान् हमें अपंग के रूप मे हमेशा दर्शन देते हैं।

—जब हम एक सेवा-कार्य में लगे हों, तब दूसरे का विचार जब तक आवश्यक न हो, न करें। करें तो मोह माना जाएगा।

—मानव-सेवा के काम में राजनीतिक मतभेदों और सघर्पों के बावजूद सबको एक होना चाहिए।

—अपनी शुद्ध सेवा के बल पर जो पद और सत्ता हमें मिलती है वह हमारे हृदय को उच्च बनाती है।

—शून्यवत् होकर रहने का मतलब है सबकी सेवा करना और दु ख मे दूसरो की टहल करना।

—जो सेवापरायण रहेंगे उन्हे पतन का समय भी कहा मिलेगा।

—सेवा का भी मोह हो सकता है। मोह-भाव छोडने से ही सच्ची सेवा हो सकती है।

—हुकूमत का क्षेत्र छोटा रहता है, लेकिन सेवा का क्षेत्र तो बहुत बडा रहता है।

—ईश्वर की इच्छा हो तो वह मुझे बचावे अथवा मार डाले। पर मैं तो कोढी की सेवा किए बिना नही रह सकता।

—मुझे सेवा-धर्म प्रिय है।

—सेवा मानव-प्रवृत्तियों मे सबसे ऊची और महान् वृत्ति है।

—सेवा से बढकर व्यक्ति को द्रवित करने वाली और कोई चीज ससार मे नही है।

—सेवा के द्वारा खीस्ती-धर्म का विस्तार सारे मे हो गया है।

—जिस सेवा के पीछे तालियो की आवाज नही है प्रभु का आशीर्वाद है, वही सच्ची सेवा है।

—सेवा तो मूक ही होनी चाहिए। जिसने अपनी का ढिंढोरा पीटा वह मानो अपने-आपको समाप्त कर चु

संयम

—सब सयमी बनकर सेवा-भाव से अपने-अपने क करने लग जाए तो वर्णाश्रम का पुनरुद्धार अशक्य नही है

—अधिक से अधिक कर्मशील मनुष्य ज्यादा से ज्याद सयमी होगा।

—सयमहीन स्त्री या पुरुष तो गया-बीता समझिए इन्द्रियो को निरकुश छोड देने वाले का जीवन कर्णधारहीन नाव के समान है जो निश्चय ही पहली ही चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जाएगी।

—मेरे जीवन के नियामक आदर्श तो मानव-मात्र ग्रहण कर सकते हैं। मुझे तो इसमे जरा भी सन्देह नही है कि मैंने जो साध्य किया है उसे हर पुरुष-स्त्री साध्य कर सकते हैं बशर्ते कि वे भी उसी प्रयास, आशा और श्रद्धा से चलें।

—सयम की कोई मर्यादा नहीं, इसलिए अहिंसा की भी कोई मर्यादा नहीं।

—सयम जीवन का स्वर्णिम सूत्र है।

—सयमशील का जीवन सदा सुखी रहता है।

संगठन

—अगर हिन्दू-मुस्लिम मजदूर साथ काम कर ता यह एक पूरी एकता होगी और वे अच्छा नमूना पेश करेंगे।

—राज्य तो ठोस और सगठित हिंसा का प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति के आत्मा होती है, पर राज्य तो आत्मा-विहीन यन्त्र है—उसका तो अस्तित्व ही हिंसा पर होता है।

—मुझे तो स्वेच्छापूर्वक किया गया सगठन पसन्द है।

—सगठन के बिना न तो कोई आन्दोलन सफल हो सकता है और न किसी अच्छे हेतु का परिणाम निकल सकता है।

—सगठन का पाठ कोई चीटियो से सीखे।

—जहा वैयक्तिक शक्तिया काम नही कर पाती, वहा सघ और सगठन द्वारा सहज ही सफलता प्राप्त कर ली जाती है।

—निर्बलो को बलवान् बनाना हो तो सगठन का मन्त्र फूक दो।

—सगठन आधुनिक युग का एक कारगर हथियार है।

—सगठन के द्वारा छोटे राष्ट्र भी बडे-बडो को मात दे सकते हैं।

—सगठन अच्छे कार्यो के लिए हो तभी इस शब्द की सुन्दर भावना कायम रह सकती है।

संस्कृत

—संस्कृत आग्रहपूर्वक पढाने के लिए मैं अपने शिक्षक का कृतज्ञ हू ।

—यदि मैं स्कूल में थोडी-बहुत संस्कृत न पढता तो अपने धार्मिक ग्रन्थों को नही समझ सकता था ।

—मुझे दु ख इतना है कि मैं सस्कृत का ज्ञान भली-भांति न प्राप्त कर सका, क्योकि अब मैं महसूस करता हूं कि हर हिन्दू लड़के-लड़की को संस्कृत का ज्ञान अच्छी तरह होना चाहिए ।

—विदेशी भाषा के माध्यम से मुक्त होने पर विद्यार्थी संस्कृत और अन्य भाषाएं सहज ही सीख सकते हैं।

—हिन्दी, गुजराती और संस्कृत को तो मैं एक ही भाषा समझता हूं ।

—जो अच्छी हिन्दी, गुजराती, बंगाली या मराठी सीखना चाहे, उन्हें सस्कृत तो सीखनी ही पड़ेगी ।

—संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय संस्कृति का चिरसचित ज्ञान भरा है। बिना संस्कृत पढे कोई अपने को पूर्ण भारतीय और विद्वान् नही बना सकता ।

—संस्कृत देवभाषा है अत: उसके अध्ययन और स्वाध्याय से मनुष्य अपने मे देवोपम गुणो का विकास कर सकता है ।

—संस्कृत में सद्ग्रन्थ ही अधिक संख्या में हैं और उन (सद्ग्रन्थों) के विमर्श का भाग्य जिन्हें प्राप्त है, वे धन्य हैं।

सन्तति-नियमन

—सन्तति-नियमन की आवश्यकता तो निर्विवाद है; पर उसके उपायो के बारे मे मतभेद है।

—सन्तति-नियमन का स्वाभाविक उपाय तो ब्रह्मचर्य और आत्म-सयम है, जो नैतिक भी है और श्रेष्ठ भी।

—सन्तति-नियमन के कृत्रिम उपायो के बारे मे घोर मतभेद है क्योकि वह अनैतिकता वढाने वाला सिद्ध हो सकता है।

—कृत्रिम उपायो से युवक-युवतियो को वासना और इन्द्रियपरायणता का लाइसेन्स और अनैतिकता का आदेश मिल जाता है।

—कोई करतूत करके उसके परिणामो से वचने का प्रयत्न करना जघन्य पाप है।

—कृत्रिम उपायो से व्यभिचार का आदेशपत्र प्राप्त कर उसके द्वारा गर्भ-निरोध करना एक ऐसा नैतिक अपराध है जो सारी प्रजा को अनैतिकता और दुराचार की खन्दक मे ढकेल सकता है।

—जो लोग गर्भाधान रोकने के कृत्रिम उपायो का समर्थन करते हैं, उनकी सन्तानो का क्या होगा ?

—अविवाहित के लिए तो ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है ही, विवाहितो को भी इसका पालन पूर्णतः नही तो अशत. अवश्य करना चाहिए।

—कहा जाता है कि ये कृत्रिम उपाय वैज्ञानिक और निरापद हैं, पर वात विलकुल विपरीत है।

—यह भी कहा जाता है कि इस कृत्रिम उपाय से ही भारत की बढती हुई जनसख्या रोकी जा सकती है। किन्तु मैं इस तरह की गैर-अमली बातो पर विश्वास नही कर सकता।

—मैं इस बात मे विश्वास नही करता कि खाने-पीने और सोने की तरह स्त्री-सम्भोग भी शरीर के लिए जरूरी चीज है।

—स्त्री-पुरुष को यौन-सम्बन्ध की आवश्यकता केवल सन्तान उत्पन्न करने के लिए तीन-चार वर्ष मे एक बार होनी चाहिए।

—यौन-सम्बन्ध को जितना बढाना चाहे, बढा सकते हैं; और घटाना चाहे, घटा सकते हैं।

—मैं कृत्रिम उपायो द्वारा सन्तति-निरोध के बदले प्राकृतिक उपाय अर्थात् ब्रह्मचर्य और मनोबल द्वारा नियमण करने के पक्ष मे हू।

—मैं ब्रह्मचर्य के अतिरिक्त सन्तति-नियमन के अन्य तरीको को अनैतिक मानता हू।

—कृत्रिम उपायो से गर्भ-निरोध की बात करना ही घृणाजनक है।

स्वदेशी

—स्वदेशी वही है जो शुद्ध स्वदेशी हो। उदाहरण के लिए नकली खादी, जो विदेशी सूत से बुनकर तैयार की गई है, स्वदेशी नही है।

—स्वदेशी-व्रत का निर्वाह तभी हो सकता है जब विदेशी

का इस्तेमाल न किया जाए। इसका प्रयोग सकीर्ण अर्थ मे नही किया जा सकता।

—यदि स्वदेशी को अन्ध-भक्ति की चीज़ बना दिया गया तो उसकी मौत हो जाएगी, इस खतरे से हमे सावधान रहना है।

—किसी भी भारतीय को अपने देश की बनी वस्तु का व्यवहार करने के लिए उपदेश करना पडे तो यह उसके लिए शर्म की बात है।

—स्वदेशी की भावना ससार के सभी स्वतन्त्र देशों मे है।

—भारत स्वदेशी-भावना के द्वारा स्वतन्त्र हुआ है और अब उसका आर्थिक विकास भी इसी भावना के द्वारा हो सकता है।

स्वाध्याय

—स्वाध्याय के बिना विचारो को स्फूर्ति नही मिलती।

—स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य घर-बैठे विद्यापीठ को अपने पास बुला लेता है।

—स्वाध्याय से बढकर सज्जनो के लिए और कोई अच्छी आदत नही हो सकती।

—स्वाध्याय विचारशीलता की नीव है।

—स्वाध्याय शिक्षितो की सर्वश्रेष्ठ आदत है।

—स्वाध्याय के बिना मानसिक विकास नही हो सकता।

—ससार मे बहुत-से बडे आदमी स्वाध्याय के बल पर

ही ऊचे चढे हैं—स्कूल-कालेज की पढाई ता निमित्त-मात्र है।

—स्वाध्याय ज्ञान-सचय और आत्म विकास का सर्वोत्तम साधन है।

—स्वाध्याय ज्ञान सम्पादन की कुजी है।

स्त्रियो के बारे मे

—मैं तो सतियो को शिरोमणि के रूप मे मानता हू।

—मैने सभी विधवाओ के विवाह का समर्थन कभी नही किया। परन्तु बाल विधवाओ का विवाह होना सर्वथा उचित है।

—मेरा विश्वास है कि सच्ची हिन्दू विधवा एक रत्न है।

—स्त्री अहिंसा की मूर्ति है।

—जो न्यायबुद्धि से पुरुष विचार कर तो जान कि विधवाओ को दवाने का उन्हे कोई अधिकार नही है।

—पति अगर गिरता हो तो उसका सभालना स्त्री का काम है।

—बलात्कार से पलवाया गया वैधव्य दूषण है, भूषण नही।

—उम्र को पहुची हुई स्त्री विधवा हो जाने पर फिर विवाह करने की इच्छा न करे तो वह जगदवन्द्या है।

—स्त्री निर्भय हुई तो कोई उसका कुछ नही बिगाड सकता।

—स्त्री को अबला कहना उसका अपमान करना है।

—स्त्री मे भला-बुरा करने की अखूट शक्ति है।

—स्त्री साक्षात् त्याग है।

—स्त्री पुरुष की गुलाम नही—सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी ार मित्र है।

—स्त्रिया निर्भय बनना सीख जाए।

—स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं।

—जो स्त्री देश को तेजस्वी, नीरोग और सुशिक्षित सन्तान भेंट करती है वह भी सेवा ही करती है।

—वैधव्य हिन्दू-धर्म का शृगार है।

—पवित्र स्त्री अजेय है।

—यह खयाल गलत है कि स्त्रिया अपनी पवित्रता की रक्षा करने के योग्य नही हैं।

—जो स्त्री मरने के लिए तैयार है, उसे कौन दुष्ट एक शब्द बोल सकता है।

—किसी भी पुरुष को दूसरी स्त्री से सम्बन्ध जोडना पाप है।

—स्त्रियो की ऐसी स्थिति तो होनी ही चाहिए कि वे रोटी की चिन्ता से मुक्त रहे।

—स्त्री सहने वाली है, पुरुष करने वाला है।

—स्त्रियो में अधिकार के विचार की प्रथा डालते हुए हमें उनके धर्म का बलिदान न कर देना चाहिए।

—एक भी बाल-विधवा अविवाहिता हो तो इस अन्याय का मिटना ही जरूरी है।

—प्रत्येक समझदार विधवा को, जो ब्रह्मचर्य-पालन करना चाहती है, चाहिए कि वह अपने लायक कोई परोपकारी वृत्ति ढूढकर उसीमे अपना जीवन बिताए ।

—पत्नी की रक्षा करना और अपनी हैसियत के मुताबिक उसके भरण-पोषण और वस्त्रादि का प्रबंध करना पति का आवश्यक धर्म है ।

—सत्याग्रह-सूर्य के सामने बाल-वैधव्य-रूपी यह अधेरा कभी ठहर नही सकेगा ।

—मित्रों और रिश्तेदारों को चाहिए कि वे अत्याचार की शिकार (स्त्री) को शिकारी के पजे से छुडाकर ही सन्तोष न कर बैठें, बल्कि ऐसी स्त्री को समझाकर सार्वजनिक सेवा के योग्य बनाने का प्रयत्न करें ।

—भारत के धर्म और सस्कृति को स्त्रियों ने ही टिका रक्खा है ।

—सांसारिक जीवन को स्त्रिया ही सुखमय बना सकती हैं ।

—स्त्री चाहे तो ससार को आनन्दमय बना सकती है ।

—सदाचारिणी और आज्ञाकारिणी स्त्री मिलना पुरुष के लिए सौभाग्य की बात है—इसी प्रकार विश्वासपात्र और प्रेमी पति स्त्री के लिए सर्वोत्तम सुख है ।

—स्त्रियो के मामले मे यदि पुरुष दखल न दें तो वे अपनी समस्याए आसानी से सुलझा सकती हैं क्योकि उनमें बुद्धि भी होती है और कर्तृत्व-शक्ति भी ।

—स्त्रियो में पुरुषों की अपेक्षा सेवा-भाव अधिक होता है ।

संस्थाएं

—सार्वजनिक सस्थाओ का काम उधार के रुपयो से नही चलाना चाहिए ।

—लम्बी जमा-रकमो के सूद पर चलने वाली सस्था भी स्वेच्छाचारिणी वन जाती है ।

—अपने अनुभव के आधार पर मेरा यह दृढ विश्वास वन गया है कि सार्वजनिक सस्थाओ का सचालन स्थायी कोशो के आधार पर नही होना चाहिए ।

—किसी सस्था के पास प्रचुर धन होना इस वात के लिए औचित्य नही है कि उसमे मनमाना खर्च किया जाए ।

—सस्थाए सगठन की माध्यम होती हैं ।

—जिस किसी मे सार्वजनिक सेवा की भावना हो उसे सस्था के निर्माण और नियमो से परिचित हो जाना चाहिए ।

—इस युग मे सघ मे ही शक्ति निहित है और सघ-निर्माण सस्थाओ को वनाकर ही किया जा सकता है ।

—व्यक्तिगत कार्य की अपेक्षा सस्थागत कार्य अधिक इसलिए पसन्द किया जाता है कि वह एक के वाद दूसरे और दूसरे के वाद तीसरे पुरुषो के हाथ मे गया तो निरन्तर प्रगति करता जाता है ।

स्वावलम्बन

—स्वावलम्बन सफलता की पहली नसेनी (सीढी) है ।

—हमे सवसे पहले स्वावलम्बन का पाठ सीखना और पचाना चाहिए ।

—मेरा मुख्य काम तो लोगो को यह दिखाना है कि वे अपनी कठिनाइया स्वय कैसे हल कर सकते हैं।

—स्वावलम्बन का सिद्धान्त गावो पर लागू करें तो पहले उन्हे अपनी जरूरत की सारी चीज़ो का उत्पादन खुद करना होगा।

—स्वावलम्बन व्यक्ति के लिए भी उतना ही वाछनीय है जितना समाज और राष्ट्र के लिए।

—स्वावलम्बन द्वारा सम्पादित कार्य से सुख उपजता है।

—देश के हर बालक को पहले स्वावलम्बी बनने का पाठ पढाना चाहिए। हमे यह गुण पाश्चात्य देशवासियो से सीखना चाहिए।

—ससार के बहुतेरे महान् पुरुष स्वावलम्बी और अध्य-वसायी रहे हैं।

समाजवाद

—समाजवाद तो हमारे देश की प्राचीन देन है।

—मेरा खयाल है कि सभी राष्ट्र—जिनमे रूस को भी शामिल समझिए—बिना हिंसा के समाजवाद चला सकते हैं।

—समाजवाद ही नही, साम्यवाद भी, ईशोपनिषद् की देन है।

—समाजवाद सुन्दर शब्द है क्योकि इसके अनुसार समाज के सभी सदस्य बराबर हैं—न कोई ऊंच है, न नीच।

—समाजवाद के सिद्धान्तानुसार राजा और किसान,

नाढ्य और गरीब, मालिक और नौकर सब समान स्तर के हैं।

—समाजवाद के नियमानुसार द्वैत है ही नहीं—सबमें एकता-मात्र है।

—सच्चा समाजवाद वही हो जिसमें वाद न हो।

—कांग्रेस में समाजवाद के प्रवेश का मैं स्वागत करता हूं, किन्तु मैं उसके छपे कार्यक्रम को पसन्द नहीं करता।

—मैं तो अपने-आपको समाजवादी ही कहता हूं। मुझे यह शब्द ही पसन्द है। पर मेरा समाजवाद वही नहीं है जिसका समाजवादी उपदेश करते फिरते हैं।

—मैं प्रमुख उद्योगों के राष्ट्रीयकरण में विश्वास करता हूं।

—मैं व्यक्तिगत उद्योग और आयोजित उत्पादन—दोनों में विश्वास करता हूं।

—मैं अहिंसा के द्वारा पूंजीपतियों में ट्रस्टीशिप की भावना भर सकता हूं।

—मैं अहिंसक रूप में आर्थिक दबाव डालकर उनके विचार बदल दूंगा।

—बिना राज्य के नियंत्रण के भी राष्ट्रीयकरण इस तरह हो सकता है कि मजदूरों के फायदे के लिए भी मिल चलाई जा सकती है।

—समाजवाद के बारे में मेरा यह विचार है कि हम सब बराबर या समान रूप में पैदा हुए हैं और हमें समान अवसरप्राप्त होने का अवसर मिलना चाहिए, परन्तु मैं इतना तो

कहूंगा कि सभी व्यक्तियों में समान क्षमता नहीं होती ।

—मैं सभी तरह के काम करने वालो में दर्जे की समानता लाना चाहता हू ।

—ग्रहिंसात्मक समानता की मुख्य चाबी है ग्रार्थिक ग्राजादी ।

—कम्युनिस्ट ग्रौर सोशलिस्ट 'राज्याधिकार प्राप्त कर लेने पर समानता लागू करने' की बात कहते हैं ग्रौर इस समय तो केवल घृणा का प्रचार करते हैं, पर मेरी योजना के ग्रनुसार तो राज्य प्रजा के ग्रादेश का पालन करेगा, उनपर जबरदस्ती अपनी इच्छा नही लादेगा ।

—ग्राज जो जबरदस्त ग्रार्थिक विषमता है, उससे तो रामराज्य नही हो सकता । मुट्ठी-भर लोग घनाढ्य हो ग्रौर समूह भूखों मरे, यह रामराज्य का द्योतक नही है ।

—भारत की पूजी थोड़े से लोगों में सीमित न रहकर सात लाख गांवों में बंट जानी चाहिए ।

—समान वितरण का सच्चा ग्रर्थ यही हे कि हर व्यक्ति को उसकी स्वाभाविक ग्रावश्यकताग्रों की चीजें मिल जाएं, इससे ग्रधिक कुछ नही ।

—जो ग्रर्थ-व्यवस्था लोगों के नैतिक कल्याण को नष्ट करे, वह पापपूर्ण है ।

—समाजवाद राजनीतिक जगत् में एक प्रगतिपूर्ण सुधार का कदम है ।

—यदि वाद के चक्कर में न पड़कर केवल समाज के हित के लिए काम किया जाए तो वह सर्वोत्तम समाजवाद है ।

—शरीर में ही सब-कुछ है। जो इसमें नही है वह जगत् में भी नही है।

—असल में शरीर जगत् का एक छोटा-सा नमूना है।

—शरीर का नीरोग और दीर्घायु होना विषयरहित होने का परिणाम है।

—जब बीमार पड़ें तब अच्छे होने के लिए अपने साधनों की मर्यादा के अनुसार कुदरती इलाज करें।

—केवल वही मनुष्य स्वस्थ है जिसका स्वस्थ दिमाग तन्दुरुस्त शरीर में है।

—स्वस्थ वही है जो बिना थकान के दिन-भर काफी शारीरिक और मानसिक मेहनत कर सके।

—शरीर के स्वस्थ होने का यह भी मतलब है कि मनुष्य की इन्द्रियां और मन भी स्वस्थ हैं।

—अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर के सभी अंगों का कार्य नियमित रूप से होना ज़रूरी है।

—शरीर से अपना और दूसरे का भला किया जा सकता है; पर इसका दुरुपयोग करें तो यह अपने लिए भी बुराई का कारण बनता है और दूसरों का भी काम बिगाड़ता है।

—शरीर को हवा, पानी, खुराक नियमित रूप में मिलती रहे और वह बिना आलस्य के ठीक तौर से काम करता रहे, तो अस्वस्थ होने का कोई कारण नहीं हो सकता।

—स्वास्थ्य ठीक रखना हो तो नियमित और सा[illegible] आहार करे और नशीली चीज़ों से परहेज़।

—स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन बहुत ही जरूरी है।

—हमे यह शरीर इसलिए मिला है कि हम इसे भगवान् की सेवा मे लगाए। हमारा यह फर्ज है कि हम इसे शुद्ध, निष्कलक यानी स्वस्थ रखे और जब समय आए तो इसे उसी भाति शुद्ध रूप मे लौटा सकें।

—स्वास्थ्य केवल शारीरिक या मानसिक दुरुस्ती को नही कहते—जब तक दोनो का सन्तुलन न हो, मनुष्य स्वस्थ नही कहा जा सकता।

—हमारा शरीर हमे इस समझौते के साथ सौपा गया है कि वह श्रद्धापूर्वक भगवान् की सेवा करेगा। हमारा फर्ज है कि हम इसे अन्दर-बाहर से शुद्ध और निष्कलक रखें,जिससे हम इसे सृष्टिकर्ता को उसी शुद्ध अवस्था मे लौटा दें जैसी हालत मे यह हमे मिला था।

—शरीर और मन के बीच इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि दो मे से किसीको क्षति पहुचे तो सारे शरीर को कष्ट सहन करना पडता है। इससे यह सिद्ध होता है कि शुद्ध चरित्र ही स्वास्थ्य की कुजी है, और हम कह सकते है कि इससे भिन्न विचार और बुरी वासनाए तरह-तरह की बीमारियां हैं।

—पाश्चात्य देशो से हम सामूहिक स्वास्थ्य-रक्षा—नगरपालिका-व्यवस्था के रूप मे सीख सकते हैं।

—तन्दुरुस्ती ठीक न हुई तो दुनिया के सारे सुख हेच हैं।

—बीमारी तो मनुष्य के लिए शर्म की बात होनी चाहिए।

—यदि तन और मन दोनो स्वस्थ हुए तभी मनुष्य स्वस्थ कहा जा सकता है।

—प्रकृति के खिलाफ व्यवहार करने वाले ही अधिक बीमार पडते हैं।

—मनुष्य की अपेक्षा पशु-पक्षी कम बीमार पडते हैं।

हरिजन

—इसे मैं अच्छी निशानी समझता हू कि हरिजन खुद जाग उठे हैं।

—मेरे नज़दीक स्वराज्य का मतलब है, हमारे देश के हीन से हीन लोगो की आज़ादी।

—अछूत कहे जाने वालो को सार्वजनिक मन्दिरो मे आने देना चाहिए।

—अस्पृश्यता दूर किए विना अस्पृश्यो मे सुधार या प्रचार नही हो सकता।

—मैं कट्टर ब्राह्मणो के प्रति हिंसा का दोषी नही हो सकता, क्योंकि मैं विना अस्पृश्यता-सम्बन्धी विश्वास उत्पन्न किए उनके धर्म मे कोई दखल नही देता।

—केवल जन्म के कारण कोई मनुष्य अछूत नही माना जा सकता।

—हम जहा कही सम्भव हो, हरिजनो के लिए पाठ-शालाए खोलने, कुए खुदवाने और मन्दिर वनवाने की चेष्टा

करें।

—एक प्रथम दर्जे के हरिजन-सेवक को अपने धर्म का अभिमान होना चाहिए और उसके लिए मरने की तैयारी होनी चाहिए।

—मेरी यह भावना दिन पर दिन दृढ होती जा रही है कि अपनी शेष हरिजन-यात्रा को मैं यथासम्भव पैदल चल-कर ही समाप्त करू।

—मेरी कल्पना के स्वराज मे अछूतो को वही जगह होगी जो सवर्ण कहलाने वाले हिन्दुओ की होगी।

—अछूतो को अल्पमत नही माना जा सकता।

—हिन्दुओ ने हरिजनो के साथ बुरा सलूक जारी रखा तो हिन्दू-धर्म मिटकर रहेगा।

—हरिजनो का अलग मताधिकार जिस हद तक वह आज वरता जाता है, एक दिन खत्म होना है।

—जिन्हे अछूतो मे कोई दिलचस्पी ही नही, वे हरिजनो को सवर्ण हिन्दुओ से जुदा करने का विरोध क्यो करें।

—हिन्दू कौम से यह उम्मीद नही करनी चाहिए कि वह हरिजनो को अपने से अलग करके आत्म-हत्या कर ले।

—शासको की आख मे से रज-कण निकालने की कोशिश करने के पहले खुद अपनी आख मे से छुआछूत की फास निकाल वाहर करनी चाहिए।

—जिस प्रथा की वदौलत हिन्दुओ का एक बडा हिस्सा पशु से भी अधम अवस्था को जा पहुचा है, उसके लिए मेरे रोम-रोम मे घृणा व्याप्त है।

—जब हम सब लोग दुःखावस्था में हैं तभी यदि पंचमों (हरिजनों) के भाग्य न जागे तो उस समय उनकी कौन सुनेगा जबकि हम स्वराज के नशे में मदमाते हो जाएंगे।

—अछूतपन को दूर किए बिना अस्पृश्यों में सुधार या प्रचार नहीं हो सकता।

—वे दिन गए जब मनुष्य सदा एकान्त में रहकर अपने गुणों की रक्षा करता था।

—मनुष्य के प्राथमिक हकों के बारे में कानून की नज़रों में तो वही होना चाहिए जिस तरह कि जात-पांत और वर्ण का लिहाज रखे बिना हम लोगों में भूख-प्यास इत्यादि सर्वमान्य हैं।

—इस सीधे-सादे सिद्धान्त को मानने में कि जन्म के कारण कोई मनुष्य अछूत नहीं माना जा सकता, कोई उच्च दार्शनिक सिद्धान्त बीच में नहीं आता।

—इस बात पर कि ऋषियों ने ऐसे अछूतपन की शिक्षा दी है जैसाकि हम पाल रहे हैं, मैंने आपत्ति ही उठाई है।

—बहिष्कृत सुधारक में मृत्यु-पर्यन्त अटल रहने की शक्ति तो अवश्य होनी ही चाहिए।

—हमारी म्युनिसिपैलिटियां (नगरपालिकाएं) अस्पृश्यता-निवारण में काफी मदद दे सकती हैं।

—हरिजनों को खूब जोश के साथ अपने अन्दर सुधार करना चाहिए जिससे किसीको यह कहने को न रह जाए कि उनमें अमुक बुराई है।

—मैंने सत्याग्रहाश्रम सदा के लिए हरिजन-सेवा के लिए दे दिया है। मेरी समझ में यह उसका उत्तम उपयोग है।

—ऐसा एक भी रोजगार या धन्धा उपेक्षा की दृष्टि से न देखा जाएगा जो हरिजनो के लिए लाभदायक है।

—सवर्ण हिन्दुओ को अपने मन्दिरो मे हरिजनो को ले जाना चाहिए।

—हरिजनो के लिए सुधार-कार्य सवर्ण हिन्दुओ को प्रायश्चित्त के रूप मे करना चाहिए।

—मैं स्वेच्छा से 'हरिजन' बन गया हू और मेरा विश्वास है कि यदि मैंने नि स्वार्थ भाव से हरिजनो की सेवा की होगी तो अन्त मे वे उसे स्वीकार करेंगे।

—मैं अस्पृश्यता के कलक से अपने को मुक्त करके आतम शुद्धि के अर्थ मे हरिजन-कार्य मे लगा हुआ हू।

—उन्नति-मार्ग मे बाधक अस्पृश्यता का कृत्रिम अडगा दूर होते ही उसी क्षण हरिजनो की आर्थिक, नैतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक अवस्था उन्नत हो जाएगी।

—जब सवर्ण हिन्दुओ द्वारा व्यवहृत अस्पृश्यता जडमूल से दूर हो जाएगी तो अछूत-समाज मे उसकी जो शाखा-प्रशाखाए फैली हुई हैं, वे अपने-आप मुरझा जाएगी।

—स्वराज्य शब्द का चाहे जो अर्थ निकाला जाए, पर यदि उसमे हरिजनो को ज्यो के त्यो वही सब अधिकार हासिल न हुए जो अन्य हिन्दुओ तथा तमाम सम्प्रदायो को मिलेंगे तो अस्पृश्यता-निवारण का यह कार्य एक तरह से दम्भ ही कहा जाएगा।

—मैं हरिजनो के लिए भीख मागना अपना कर्तव्य समझता हू।

हिन्दी

—मेरी पक्की राय है कि भारतीय पाठ्यक्रम मे हिन्दी और सस्कृत को तो स्थान मिलना ही चाहिए।

—उर्दू को मैं हिन्दी की एक शैली मानता हू।

—गुजराती, हिन्दी और मराठी मे मैं बहुत बडा अन्तर नही मानता।

—मारवाडियो से मेरा हिन्दी प्रचार और गोरक्षा के द्वारा सम्पर्क हुआ।

—अमृतसर काग्रेस मे प्रवासी भारतवासियो का दुखडा मैंने खुले अधिवेशन को हिन्दी मे सफलतापूर्वक सुनाकर अपना विश्वास दृढ कर लिया था कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है।

—असहयोग आन्दोलन के पारिभाषिक शब्द हिन्दी मे गढे गए जो १९२० ई० मे कलकत्ता काग्रेस अधिवेशन में व्यवहार मे लाए गए।

—हिन्दी का प्रचार और प्रसार सहज और सरल है।

—यदि दक्षिण के प्रान्तो ने हिन्दी न अपनाई तो यह देश का दुर्भाग्य होगा और उनका भी।

हिन्दुत्व

—मैं हिन्दुत्व के प्रति वही भावना रखता हू जो पत्नी के प्रति। उसके दोष जानकर भी मैं उससे अलग हो सकता।

—हिन्दुत्व मे सभी सीमितताओ और दोषो

भी मैं उससे बंधा अनुभव करता हूं ।

—मैं हिन्दू-धर्म-स्थानों की वर्तमान बुराइयों को जानते हुए भी उन्हे प्रेम करता हू ।

—हिन्दुत्व एक विशाल वृक्ष के समान है जिसने अपनी अगणित शाखाए फैला रखी हैं ।

—मैं पूरा सुधारक हू पर मैं हिन्दुत्व की महत्त्वपूर्ण बातो को मानने से इन्कार नही कर सकता ।

—मैं हिन्दू-सिद्धान्त के अनुसार गुरु का महत्त्व समझता और मानता हू । मैं यह भी मानता हू कि बिना गुरु के सच्चा ज्ञान नही प्राप्त होता । सामारिक या पार्थिव विषयों के शिक्षक की गलती सहन हो सकती है, पर आध्यात्मिक गुरु की नही ।

—मैं अज्ञानी गुरु को आत्म-समर्पण करने के बदले अंधेरे मे भटकना अधिक पसन्द करूगा ।

—मैं समझता हू कि मर्ति-पूजा मानव-स्वभाव का एक अंग है । हम प्रतीक की खोज मे रहते हैं ।

—अवतारवाद का सिद्धान्त कोई बुरी चीज नहीं है ।

—मैं हिन्दू शब्द को, चाहे उसका कुछ भी अर्थ हो, बदलने के खिलाफ हूं ।

ज्ञान

—ज्ञान की कोई सीमा नही होती ।

—बिना ज्ञान के सही स्वतंत्रता नही मिलती ।

—ज्ञान, उपासना और कर्म ईश्वर-प्राप्ति के तीन

विभिन्न मार्ग नही हैं। ये तीनो मिलकर एक मार्ग हैं।

—ज्ञान का अर्थ है सारासार-विवेक। जिस अक्षर-ज्ञान से यह विवेक-शक्ति न आए वह ज्ञान नही, पठित मूर्खता है।

—ज्ञान ही प्रकाश है। उसके बिना हम एक कदम नही चल सकते।

—ज्ञान के साथ अभिमान हुआ तो उसकी कोई शोभा नही रहती।

—ज्ञान चारित्र्य के लिए दिया जाना चाहिए—ज्ञान साधन है, चारित्र्य साध्य।

—ज्ञान वही सिद्ध है जिससे मानव का हित हो, ऐसा ज्ञान निरर्थक है जिससे मानव का कल्याण न होकर कष्ट बढता है।

—जो ज्ञान केवल दिमाग मे ही रह जाता है और हृदय मे प्रवेश नही कर पाता वह जीवन के अनुभव मे व्यर्थ सिद्ध होता है।

स्फुट विचारावली

—मेरा धर्म मुझे शिक्षा देता है कि औरो की रक्षा के लिए अपनी जान दे दो, दूसरो को मारने के लिए हाथ तक न उठाओ। पर धर्म मुझे यह कहने के लिए भी छुट्टी देता है कि अगर ऐसा मौका आए कि अपने आश्रितो अथवा ज़िम्मे का काम छोडकर भाग जाने या हमलावर को मारने मे से किसी एक बात को पसन्द करना हो तो यह हर शख्स का कर्तव्य है कि वह मारते हुए वही मर जाए, अपनी जगह छोडकर भागे हरगिज़ नही।

—परमेश्वर की व्याख्याए अगणित हैं, क्योकि उसकी विभूतिया भी अगणित हैं। विभूतिया मुझे आश्चर्यचकित तो करती हैं, मुझे क्षण-भर के लिए मुग्ध भी करती हैं; पर मैं तो पुजारी हू सत्य-रूपी परमेश्वर का। मेरी दृष्टि मे वही एक-मात्र सत्य है, दूसरा सब-कुछ मिथ्या है। पर यह सत्य अभी तक मेरे हाथ नही लगा है, अभी तक तो मैं उसका शोधक-मात्र हू। हा, उसकी शोध के लिए मैं अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु को भी छोड देने के लिए तैयार हू, और इस शोध-रूपी यज्ञ मे अपने शरीर को भी होम देने की तैयारी कर ली है।

—अधिकारी व्यक्ति के सामने उपस्थित होने पर भी चुप्पी मार लेना, मार खा लेना, मार खाकर भी कुछ न बोलना, स्वीकार कर लेना, ये ऐसे कृत्य हैं जिन्होने हिन्दुस्तान की जड खोद फकी है। अक्रोध का मतलब हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाना नही होता।

—मैं तो यही कह सकता हू कि मेरी हलचल नास्तिकतापूर्ण नही है। वह ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार नही करती। वह तो उसीके नाम पर शुरु की गई है। पर वह जनता तक तो उसके हृदय के द्वारा और उसकी सत्यवृत्ति द्वारा पहुचना चाहती है।

—विरोधी के स्वभाव की त्रुटियो को रजकण के समान गिनकर उसकी खूबियो को देखना और पर-गुण परमाणु जितना भी हो उसे पर्वत करके बताने मे ही दया और प्रेम की कला है।

—लोक-सेवा-भाव से सार्वजनिक सेवा करना तलवार की धार पर चढने के समान है। लोक-सेवक स्तुति लेने के लिए तो तैयार हो जाता है फिर उसे निन्दा के समय क्यो-कर अपना मुह छिपाना चाहिए।

—बुरा विचार मात्र हिंसा है, उतावली हिंसा है, किसी-का बुरा चाहना हिंसा है, जगत् के लिए जो वस्तु आवश्यक है, उसपर कब्जा कर लेना भी हिंसा है।

—यह कहना सही नहीं है कि मैं वर्ग-युद्ध के अस्तित्व मे विश्वास नही करता। जिस चीज़ मे मैं विश्वास नही करता वह है वर्ग युद्ध को उकसाना या उत्तेजना देना और उसे

स्फुट विचारावली

—मेरा धर्म मुझे शिक्षा देता है कि औरों की रक्षा के लिए अपनी जान दे दो, दूसरो को मारने के लिए हाथ तक न उठाओ। पर धर्म मुझे यह कहने के लिए भी छुट्टी देता है कि अगर ऐसा मौका आए कि अपने आश्रितों अथवा जिम्मे का काम छोड़कर भाग जाने या हमलावर को मारने मे से किसी एक बात को पसन्द करना हो तो यह हर शख्स का कर्तव्य है कि वह मारते हुए वही मर जाए; अपनी जगह छोड़कर भागे हरगिज नही।··

—परमेश्वर की व्याख्याएं अगणित हैं, क्योंकि उसकी विभूतिया भी अगणित हैं। विभूतिया मुझे आश्चर्यचकित तो करती हैं, मुझे क्षण-भर के लिए मुग्ध भी करती हैं; पर मैं तो पुजारी हू सत्य-रूपी परमेश्वर का। मेरी दृष्टि में वही एक-मात्र सत्य है, दूसरा सब-कुछ मिथ्या है। पर यह सत्य अभी तक मेरे हाथ नही लगा है, अभी तक तो मैं उसका शोधक-मात्र हू। हा, उसकी शोध के लिए मैं अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु को भी छोड़ देने के लिए तैयार हू; और इस शोध-रूपी यज्ञ मे अपने शरीर को भी होम देने की तैयारी कर ली है।··

—अधिकारी व्यक्ति के सामने उपस्थित होने पर भी चुप्पी मार लेना, मार खा लेना, मार खाकर भी कुछ न बोलना, स्वीकार कर लेना, ये ऐसे कृत्य हैं जिन्होने हिन्दुस्तान की जड खोद फेंकी है। अक्रोध का मतलब हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाना नही होता।

—मैं तो यही कह सकता हू कि मेरी हलचल नास्तिकतापूर्ण नही है। वह ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार नही करती। वह तो उसीके नाम पर शुरू की गई है। पर वह जनता तक तो उसके हृदय के द्वारा और उसकी सत्यवृत्ति द्वारा पहुचना चाहती है।

—विरोधी के स्वभाव की त्रुटियो को रजकण के समान गिनकर उसकी खूबियो को देखना और पर-गुण परमाणु जितना भी हो उसे पर्वत करके बताने मे ही दया और प्रेम की कला है।

—लोक-सेवा-भाव से सार्वजनिक सेवा करना तलवार की धार पर चढने के समान है। लोक-सेवक स्तुति लेने के लिए तो तैयार हो जाता है फिर उसे निन्दा के समय क्यो-कर अपना मुह छिपाना चाहिए।

—बुरा विचार मात्र हिसा है, उतावली हिसा है, किसी-का बुरा चाहना हिसा है, जगत् के लिए जो वस्तु आवश्यक है, उसपर कब्जा कर लेना भी हिंसा है।

—यह कहना सही नही है कि मैं वर्ग युद्ध के अस्ति- मे विश्वास नही करता। जिस चीज मे मैं वह है वर्ग-युद्ध को उकसाना या

स्फुट विचारावली

—मेरा धर्म मुझे शिक्षा देता है कि औरों की रक्षा के लिए अपनी जान दे दो; दूसरो को मारने के लिए हाथ तक न उठाओ। पर धर्म मुझे यह कहने के लिए भी छुट्टी देता है कि अगर ऐसा मौका आए कि अपने आश्रितों अथवा ज़िम्मे का काम छोड़कर भाग जाने या हमलावर को मारने में से किसी एक बात को पसन्द करना हो तो यह हर शख्स का कर्तव्य है कि वह मारते हुए वही मर जाए; अपनी जगह छोड़कर भागे हरगिज़ नही।...

—परमेश्वर की व्याख्याएं अगणित हैं, क्योंकि उसकी विभूतियां भी अगणित हैं। विभूतियां मुझे आश्चर्यचकित तो करती हैं, मुझे क्षण-भर के लिए मुग्ध भी करती हैं; पर मैं तो पुजारी हू सत्य-रूपी परमेश्वर का। मेरी दृष्टि में वही एक-मात्र सत्य है, दूसरा सब-कुछ मिथ्या है। पर यह सत्य अभी तक मेरे हाथ नही लगा है, अभी तक तो मैं उसका शोधक-मात्र हू। हां, उसकी शोध के लिए मैं अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु को भी छोड़ देने के लिए तैयार हूं; और इस शोध-रूपी यज्ञ में अपने शरीर को भी होम देने की तैयारी कर ली है।...

—अधिकारी व्यक्ति के सामने उपस्थित होने पर भी चुप्पी मार लेना, मार खा लेना, मार खाकर भी कुछ न बोलना, स्वीकार कर लेना, ये ऐसे कृत्य हैं जिन्होने हिन्दुस्तान की जड़ खोद फेंकी है। अक्रोध का मतलब हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाना नही होता।

—मैं तो यही कह सकता हूं कि मेरी हलचल नास्तिकतापूर्ण नही है। वह ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार नही करती। वह तो उसीके नाम पर शुरू की गई है। पर वह जनता तक तो उसके हृदय के द्वारा और उसकी सत्यवृत्ति द्वारा पहुंचना चाहती है।

—विरोधी के स्वभाव की त्रुटियों को रजकण के समान गिनकर उसकी खूबियो को देखना और पर-गुण परमाणु जितना भी हो उसे पर्वत करके बताने में ही दया और प्रेम की कला है।

—लोक-सेवा-भाव से सार्वजनिक सेवा करना तलवार की धार पर चढने के समान है। लोक-सेवक स्तुति लेने के लिए तो तैयार हो जाता है फिर उसे निन्दा के समय क्योंकर अपना मुह छिपाना चाहिए।

—बुरा विचार-मात्र हिंसा है; उतावली हिंसा है, किसीका बुरा चाहना हिंसा है, जगत् के लिए जो वस्तु आवश्यक है, उसपर कब्जा कर लेना भी हिंसा है।

—यह कहना सही नही है कि मैं वर्ग-युद्ध के अस्तित्व मे विश्वास नही करता। जिस चीज़ में मैं विश्वास नही करता वह है वर्ग-युद्ध को उकसाना या उत्तेजना देना और उसे

जारी रखना। दिन-दिन मेरा विश्वास बढ़ता ही जाता है कि वर्ग-युद्ध को न होने देना पूर्णतया सम्भव है।···

—हर बात में 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' के सिद्धान्त का प्रयोग कर देखना चाहिए, क्योंकि मध्यम मार्ग ही सच्चा मार्ग है। स्वावलम्बन स्वमान और परमार्थ की पूर्ति के लिए ज़रूरी है। अगर वह इससे आगे बढता है तो दोष-रूप बनता है।···

—गांधीवाद-जैसी कोई चीज़ मेरे दिमाग में ही नही है। मैं कोई सम्प्रदाय-प्रवर्तक नही हूं। तत्त्वज्ञानी होने का तो मैंने कभी दावा ही नहीं किया है।···कई लोगों ने मुझसे कहा कि तुम गांधी-विचार की एक स्मृति ही लिख डालो। मैंने कहा—स्मृतिकार कहां और मैं कहां! स्मृति बनाने का अधिकार मेरा नहीं है। जो होगा मेरी मृत्यु के बाद होगा।

—आपको यह स्वतन्त्र रूप से सोचना चाहिए कि "मैंने विचारों को दुरुस्त किया है या बिगाड़ा है।···मैं हर रोज़ विकास की ओर जा रहा हूं, और मेरे विचारों का प्रयोग रोज विस्तृत होता जा रहा है।" आपको देखना पड़ेगा कि यह विकास ठीक तरह से हो रहा है या नहीं।

—मेरे प्रभु के मेरे पास सहस्रो रूप हैं। कभी मैं उसका दर्शन चरखे में करता हू, कभी हिन्दू-मुस्लिम एकता में और कभी अस्पृश्यता-निवारण में। मुझे जब मेरी भावना जिस रूप की ओर खीच ले जाती है तब उस रूप की ओर चला जाता हूं और नही अपने प्रभु के साथ सान्निध्य कर लेता हूं।

—'मुझे मत छुग्रो' की यह बीमारी सिर्फ हरिजनों तक ही सीमित नही । इसने किसी भी जाति ग्रौर किसी भी धर्म को ग्रछूता नही छोड़ा है। एक जाति दूसरी जाति की दृष्टि में ग्रछूत है ग्रौर एक धर्म दूसरे धर्म के लिए ग्रस्पृश्य है। मैं तब तक संतुष्ट नही होऊगा जब तक कि इस ग्रान्दोलन के परिणामस्वरूप भारत मे बसने वाली भिन्न-भिन्न जातियों ग्रौर सम्प्रदायों के बीच हम हार्दिक एकता स्थापित नहीं कर देते। यही कारण है कि मैं भारत तथा भारत के बाहर के प्रत्येक ग्रधिवासी से सहयोग ग्रौर सहानुभूति की भीख मांग रहा हूं।

—जब छुग्राछूत जड-मूल से नष्ट हो जाएगी तब ये सारे भेद-भाव ग्रपने-ग्राप मिट जाएगे ग्रौर कोई ग्रपने-ग्रापको दूसरे से ऊंचा नही समझेगा। इसका सीधा नतीजा यह होगा कि गरीबों ग्रौर दलितों का शोषण बन्द हो जाएगा ग्रौर चारों तरफ परस्पर प्रेम ग्रौर सहयोग देखने में ग्राएगा।

—हम सारे भारत को ग्रपना परिवार क्यों न मानें ? ग्रौर दरग्रसल तो सारी मनुष्य-जाति हमारा परिवार है। क्या हम सब एक ही वृक्ष की शाखाएं नही हैं ?

—इससे ग्रधिक उद्दात्त या ग्रधिक राष्ट्रीय वस्तु की मैं कल्पना नहीं कर सकता कि हम सब रोज घंटे-भर वही परिश्रम करें जो गरीबों को करना होता है।...

—जब तक एक भी सशक्त स्त्री या पुरुष बेकार भूखा रहे तब तक हमें ग्राराम लेने या भरपेट भोजन में शरम ग्रानी चाहिए।

—ज्यो ही हम सच्चा और सरल जीवन व्यतीत करना शुरू कर देते हैं, त्यो ही अन्ध-विश्वास और अवाछनीय बातें चली जाती हैं।

—मैं अपने पापो के परिणाम से अपनी रक्षा नही चाहता, मैं तो स्वय पाप से, या, यो कहिए कि पाप के विचार तक से अपना उद्धार चाहता हू।

—अधिकारो का सच्चा स्रोत कर्तव्य है। अगर हम सब अपने कर्तव्य पूरे करें तो अधिकारो को ढूढने कहीं दूर नही जाना पडेगा।

—यह तो मैं नही जानता कि मृत्यु का समय, स्थान और ढग पहले से निश्चित होता है। मैं इतना ही जानता हू कि भगवान् की मर्जी के बिना एक पत्ता भी नही हिलता।

—लोग कहते हैं कि आखिर साधन तो साधन ही हैं। मैं कहूगा कि साधन तो सब-कुछ हैं। जैसे साधन होगे वैसा ही साध्य होगा। साधन और साध्य को अलग करने वाली कोई दीवार नही है।

—हम ईश्वर के सभी विधानों को नही जानते। उसके सामने बडे से बडे वैज्ञानिक या आत्मज्ञानी की जानकारी धूल-कण के समान है।

—भगवान् सबसे बडा गणतन्त्री है क्योकि वह हम सबको कर्म करने मे स्वतन्त्र रखता है और हम अपना भला-बुरा चुन सकते हैं। पर एक दिन तो हमे उसको हिसाब देना ही पडेगा।

—कोई भी गुण ऐसा नही है जिसका लक्ष्य एक ही व्यक्ति की भलाई हो या जिसे एक ही व्यक्ति की भलाई से सन्तोष हो जाए ।

—ईश्वर के नियम शाश्वत और अपरिवर्तनीय हैं और स्वयं ईश्वर से भी अलग नही किए जा सकते ।...

—एक ईश्वर मे विश्वास होना सभी धर्मो का मूलाधार है । परन्तु मैं ऐसे किसी समय की कल्पना नही कर सकता जब पृथ्वी पर व्यवहार मे एक ही धर्म होगा ।

—किसी पवित्र कार्य में कभी हार न मानो और आगे के लिए दृढ सकल्प कर लो कि तुम शुद्ध रहोगे और ईश्वर की ओर से तुम्हे अवश्य मदद मिलेगी ।...

—मेरी राय में राम, रहमान, अहुरमज्द, गॉड, या कृष्ण, ये सब उस अदृश्य शक्ति को, जो सब शक्तियों में बड़ी है, कोई नाम देने के मानव-प्रयत्न हैं ।...

—अगर यह विचार मान लिया जाए कि ईश्वर हमारी कल्पना की उपज है तब तो कुछ भी सत्य नही है, सब-कुछ हमारी कल्पना की उपज है । मेरे लिए तो मैंने जो आवाज सुनी वह मेरी हस्ती से भी ज्यादा वास्तविक है ।

—जो लोग भीतरी शुद्धि की आवश्यकता समझते हैं उनसे मैं कहूंगा कि वे मेरे साथ यह प्रार्थना करें कि हमें इन विपत्तियों के पीछे ईश्वर का हेतु समझने की बुद्धि मिले ।...

—शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से ईश्वर भलाई और बुराई दोनो के मूल में है । वह कातिल के खंजर और चीर-फाड़ करने वाले डाक्टर के चाकू—दोनों का संचालन करता है ।

—ज्यो ही हम सच्चा और सरल जीवन व्यतीत करना शुरू कर देते हैं, त्यो ही अन्ध-विश्वास और अवाछनीय बातें चली जाती हैं।

—मैं अपने पापो के परिणाम से अपनी रक्षा नही चाहता, मैं तो स्वय पाप से, या, यो कहिए कि पाप के विचार तक से अपना उद्धार चाहता हू।

—अधिकारो का सच्चा स्रोत कर्तव्य है। अगर हम सब अपने कर्तव्य पूरे करें तो अधिकारो को ढूढने कही दूर नहीं जाना पडेगा।

—यह तो मैं नही जानता कि मृत्यु का समय, स्थान और ढग पहले से निश्चित होता है। मैं इतना ही जानता हू कि भगवान् की मर्ज़ी के विना एक पत्ता भी नही हिलता।

—लोग कहते हैं कि आखिर साधन तो साधन ही हैं। मैं कहूगा कि साधन तो सब-कुछ हैं। जैसे साधन होगे वैसा ही साध्य होगा। साधन और साध्य को अलग करने वाली कोई दीवार नही है।

—हम ईश्वर के सभी विधानो को नही जानते। उसके सामने वडे से वडे वैज्ञानिक या आत्मज्ञानी की जानकारी धूल-कण के समान है।

—भगवान् सबसे बडा गणतन्त्री है क्योंकि वह हम सबको कर्म करने मे स्वतन्त्र रखता है और हम अपना भला-बुरा चुन सकते हैं। पर एक दिन तो हमे उसको हिसाब देना ही पडेगा।

—भगवान् हमारे इस पार्थिव शरीर से अलग नहीं है। हम उसका अनुभव स्वयं कर सकते हैं। हमारे अन्दर दैवी संगीत की धुन बजा करती है।

—भगवान् भक्त की पूरी परीक्षा लेता है, पर उसकी सहनशक्ति से अधिक नहीं। वह परीक्षार्थी को शक्ति भी देता है।

—हम लोगों का अस्तित्व क्षणिक है—अनन्त काल में सौ बरस की गिनती ही क्या है!

—वैज्ञानिकों का कथन है कि संसार की सभी वस्तुओं को जोड़ने वाली एक ऐसी शक्ति है जिसके न रहने से संसार चूर-चूर हो जाएगा। मैं समझता हूं, वही शक्ति चराचर में व्याप्त है और उसका नाम प्रेम है।

—मानव-स्वभाव के प्रति कभी निराश नहीं होना चाहिए। क्रूर-स्वभाव के लोग भी प्रेम से प्रभावित होते देखे गए हैं।

—मनुष्य की स्थिति ऐसी अस्थायी होती है कि उसपर कभी बुराई का असर पड़ता है तो कभी भलाई का। वह लोभ का शिकार बन जाता है; पर वास्तव में उसपर नियन्त्रण रखना चाहिए।

—मनुष्य स्वभाव से गन्दगी छिपाने की प्रवृत्ति रखता है। भाषण में भी मनुष्य को किसी प्रकार की गन्दी और अशिष्ट बात न कहने की प्रवृत्ति रखनी चाहिए।

—जब हमें विश्वास हो जाएगा कि भगवान् तो हमारे गुप्त विचारों को भी जानता है तो हम विचार छिपाना बन्द

कर दंगा।

—मैं अपना कोई काम बिना प्रार्थना किए नही करता। मनुष्य स्खलनशील है। वह कभी निर्भ्रान्त नही हो सकता। जिसे वह प्रार्थना का अन्तर समझता है, सम्भव है वह उसके अहकार की प्रतिध्वनि हो। अचूक मार्ग दिखाने के लिए मनुष्य का अन्त करण पूर्ण निर्दोष और दुष्कर्म करने मे असमर्थ होना चाहिए। मैं ऐसा दावा नही कर सकता।...

—मेरा धर्म मुझे कहता है कि जब अनिवार्य सकट उपस्थित हो और कष्ट असह्य हो जाए तो उपवास और प्रार्थना करनी चाहिए।

—आने वाले जमाने पर सबसे ज्यादा असर धर्म का होगा। आज भी उसका वैसा ही असर पड सकता है और पड़ना चाहिए, लेकिन पड़ता नही। आज तो शनिवार और रविवार को फुर्सत मे याद करने-मात्र के लिए धर्म को दैनिक जीवन से अलग चीज़ बना दिया गया है। सच पूछा जाए तो यह ज़िन्दगी की हर सास मे अमल मे लाने की चीज है। जब ऐसा धर्म प्रकट होगा, तब सारी दुनिया में उसका बोलबाला हो जाएगा।

—मैं अद्वैत मे विश्वास करता हूं। मैं मनुष्य की परम आवश्यक एकता मे विश्वास करता हू, इसलिए मैं सभी जीवधारियों की एकता मे विश्वास करता हू। इसी कारण मुझे तो ऐसा यकीन है कि एक मनुष्य के आध्यात्मिक लाभ के साथ सारी दुनिया का लाभ होता है। इसी तरह एक मनुष्य के अध.पतन के साथ उस हद तक सारे ससार की

—भगवान् हमारे इस पार्थिव शरीर से अलग नहीं है। हम उसका अनुभव स्वय कर सकते हैं। हमारे अन्दर दैवी संगीत की धुन वजा करती है।

—भगवान् भक्त की पूरी परीक्षा लेता है, पर उसकी सहनशक्ति से अधिक नही। वह परीक्षार्थी को शक्ति भी देता है।

—हम लोगों का अस्तित्व क्षणिक है—अनन्त काल में सौ वरस की गिनती ही क्या है!

—वैज्ञानिकों का कथन है कि संसार की सभी वस्तुओं को जोड़ने वाली एक ऐसी शक्ति है जिसके न रहने से संसार चूर-चूर हो जाएगा। मैं समझता हूं, वही शक्ति चराचर में व्याप्त है और उसका नाम प्रेम है।

—मानव-स्वभाव के प्रति कभी निराश नहीं होना चाहिए। क्रूर-स्वभाव के लोग भी प्रेम से प्रभावित होते देखे गए हैं।

—मनुष्य की स्थिति ऐसी अस्थायी होती है कि उसपर कभी बुराई का असर पड़ता है तो कभी भलाई का। वह लोभ का शिकार वन जाता है; पर वास्तव में उसपर नियन्त्रण रखना चाहिए।

—मनुष्य स्वभाव से गन्दगी छिपाने की प्रवृत्ति रखता है। भाषण में भी मनुष्य को किसी प्रकार की गन्दी और अशिष्ट बात न कहने की प्रवृत्ति रखनी चाहिए।

—जब हमें विश्वास हो जाएगा कि भगवान् तो हमारे गुप्त विचारों को भी जानता है तो हम विचार छिपाना बन्द

—मैं अपना कोई काम बिना प्रार्थना किए नही करता। मनुष्य स्खलनशील है। वह कभी निर्भ्रान्त नही हो सकता। जिसे वह प्रार्थना का अन्तर समझता है, सम्भव है वह उसके अहकार की प्रतिध्वनि हो। अचूक मार्ग दिखाने के लिए मनुष्य का अन्त करण पूर्ण निर्दोष और दुष्कर्म करने मे असमर्थ होना चाहिए। मैं ऐसा दावा नही कर सकता। ·

—मेरा धर्म मुझे कहता है कि जब अनिवार्य सकट उपस्थित हो और कष्ट असह्य हो जाए तो उपवास और प्रार्थना करनी चाहिए।

—आने वाले ज़माने पर सबसे ज़्यादा असर धर्म का होगा। आज भी उसका वैसा ही असर पड सकता है और पडना चाहिए, लेकिन पड़ता नही। आज तो शनिवार और रविवार को फुर्सत मे याद करने-मात्र के लिए धर्म को दैनिक जीवन से अलग चीज बना दिया गया है। सच पूछा जाए तो यह जिन्दगी की हर सास मे अमल मे लाने की चीज है। जब ऐसा धर्म प्रकट होगा, तब सारी दुनिया मे उसका बोलबाला हो जाएगा।

—मैं अद्वैत मे विश्वास करता हू। मैं मनुष्य की परम आवश्यक एकता मे विश्वास करता हू, इसलिए मैं सभी जीवधारियो की एकता मे विश्वास करता हू। इसी कारण मुझे तो ऐसा यकीन है कि एक मनुष्य के आध्यात्मिक लाभ के साथ सारी दुनिया का लाभ होता है। इसी तरह एक मनुष्य के अध.पतन के साथ उस हद तक सारे ससार की

अधोगति होती है।

—जो लोग जनता का नेतृत्व करना चाहे उन्हे कभी जनसमूह के नेतृत्व मे नही चलना चाहिए और अपने सिद्धान्त पर दृढ रहना चाहिए।

—बच्चे को बहुत दुलार-पुचकारकर कोमल शैया पर ही रखना उसको बिगाड देना है। उसे कठोरता और सभी तरह के वातावरण और मौसम को सहने-योग्य बनाना चाहिए।

—जनतत्र मे लोगो को भेड-बकरियो की तरह रहने के लिए मजबूर नही किया जा सकता। उन्हे अपनी राय आजादी के साथ जाहिर करने की छूट होनी चाहिए। उसमे अल्पसख्यको को बहुमत से मतभेद रखने का पूरा अधिकार होना चाहिए।

गाधीजी के दैनिक जीवन की वस्तुए

अब तक प्रकाशित

80 हिन्द पुस्तकें

उपन्यास
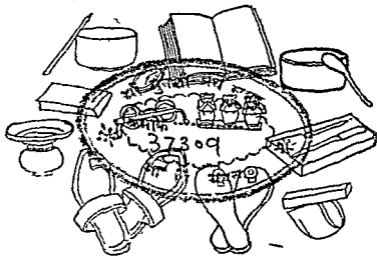
गद्दार	:	कृश्न चन्दर
अंधेरा उजाला	:	ख्वाजा अहमद अब्बास
एक लड़की दो रूप	:	रजनी पनिकर
आनन्द मठ	:	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
दायरे	.	रांगेय राघव
कुलटा	:	राजेन्द्र यादव
बड़ी-बड़ी आंखें	:	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
बीते दिन	:	जैनेन्द्रकुमार
आरती	:	ताराशंकर बन्द्योपाध्याय
सागर और मनुष्य	:	अर्नेस्ट हेमिंग्वे
पहला प्यार	:	तुर्गनेव
एक गधे की आत्मकथा	:	कृश्न चन्दर
अधूरा सपना	:	अनन्त गोपाल शेवड़े
बर्फ का दर्द	:	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
मुक्ता	:	सत्यकाम विद्यालंकार
ज्वारभाटा	:	मन्मथनाथ गुप्त
प्यार की जिन्दगी	:	टाल्सटॉय
आभा	:	आचार्य चतुरसेन
छोटी-सी बात	:	रांगेय राघव
एक स्वप्न, एक सत्य	:	यज्ञदत्त
संकल्प	:	हंसराज 'रहबर'
संघर्ष	:	चेखव
न या शैतान	.	स्टीवेन्सन
भूल	:	गुरुदत्त
एक सवाल	:	अमृता प्रीतम